परमेश्वर के वचन का प्रचार करना और सिखाना

तू वचन का प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ सुधार कर, उलाहना कर और प्रोत्साहित कर। (2 तीमुथियुस 4:2)

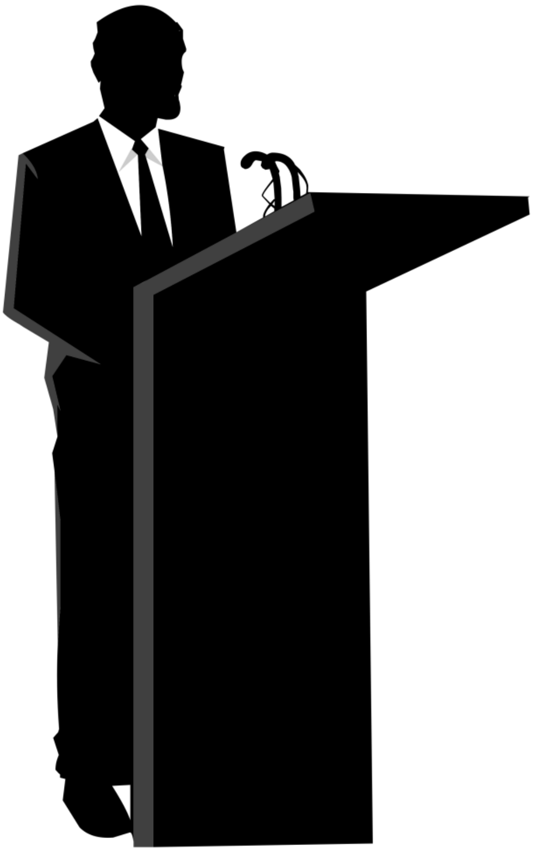

रेव. डॉ. जेरी श्मोयेर

© 2016

प्रकाशित-2013
1000 प्रतियां

© सभी अधिकार सुरक्षित है

प्रकाशकों की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को किसी भी रूप में, इलेक्ट्रॉनिक्स, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्यथा, पुन: प्रस्तुत, एक पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या प्रसारित नहीं क्या जा सकता है।

रु. 50/-

प्रतियों के लिए:

बेथल प्रार्थना फैलोशिप
घर .सं. 8-2-293/129 रोड नंबर 14,
वेंकटेश्वरनगर,
बंजारा हिल्स, हैदराबाद-500 034.
आंध्र प्रदेश, भारत।
bpfellowship@gmail.com
फोन: 9866543468।

मुद्रित स्थान :
स्फूरथी डिजिटल ग्राफिक्स
हैदराबाद। ए. पी. इंडिया।

लेखक की जीवनी

रेव डॉ. जेरी श्मोयर डलास थियोलॉजिकल सेमिनरी से स्नातक हैं, जहां उन्होंने 1975 में मास्टर डिग्री और 2006 में डॉक्टर्स की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने 1981 से डोयलेस्टाउन, पीए में मेन स्ट्रीट बैपटिस्ट चर्च में पादरी के रूप में काम किया है। वह 6 बच्चों के पिता और 12 पोते-पोतियों के दादा/नाना है । उनकी शादी नैन्सी से हुई है, जो 34 साल से एक नर्स हैं। एक चर्च की पासबानी करने के अलावा वह विवाह, परिवार और युवा सम्मेलनों का नेतृत्व करता है, परामर्श में बहुत सक्रिय है और युवा पादरियों के लिए परामर्शदाता है। वे 2006 से भारत में पादरियों की सेवकाई में शामिल हैं। उसके साथ jerry@schmoyer.net पर संपर्क किया जा सकता है।

<u>वचन का प्रचार करें</u>

परिचय - पेज 8

वचन के प्रचार का महत्व – पेज 10

<u>I. संदेशवाहक को तैयार करना</u> - पेज 12

क. आपनी -तैयारी (सिर, हृदय, जीवन) - पेज 12

ख. उपदेश की तैयारी - पेज 14

<u>II. संदेश तैयार करना</u> - पेज 15

क . हिस्से पर ध्यान केंद्रित करके - पेज 15

1. प्रार्थना द्वारा ध्यान केन्द्रित करना
2. अपना सर्वश्रेष्ठ करने के लिए प्रतिबद्ध होकर ध्यान केन्द्रित करके
3. हिस्सा चुनने द्वारा ध्यान केंद्रित करके

ख . लोगों पर ध्यान केंद्रित करके - पेज 22

ग. हिस्से को और लोगों की आवश्यकताओं को एक साथ लाना - पेज 24

<u>III. संदेश का आयोजन</u> - पेज 28

क. उपयोग की जाने वाली विधि - पेज 29

ख. संदेश की रूपरेखा तैयार करना - पेज 32

ग. संदेश का मुख्य भाग - पेज 50

घ. परिचय - पेज 53

ङ. संक्रमण - पेज 54

च. चित्र - पेज 55

छ . निष्कर्ष - पेज 56

<u>IV. संदेश देना</u> - पेज 57

क. वक्ता बोलता है - पेज 57

ख . श्रोतागण सुनते है - पेज 62

<u>V. संदेश का मूल्यांकन करना</u> - पेज 63

निष्कर्ष – पेज 64

परिशिष्ट: उपदेशो के प्रतिरूप - पेज 66

शादी	बपतिस्मा	प्रार्थना	विवाह परिवार
चर्च	अंतिम संस्कार	आराधना	विश्वास
भविष्यवाणी	बाइबल	बाल अभिषेक	सुसमाचार प्रचारक
प्रचारक	शिष्यत्व	आत्मिक उपहार	विश्वाश्योगता
आध्यात्मिक युद्ध	क्रिसमस	परमेश्वर का अनुग्रह	धन्यवाद
सुसमाचार प्रचार			

प्रस्तावना

जब मैं एक युवा पादरी था, मैंने बाइबल के प्रति, परमेश्वर का जीवित व प्रेरित वचन होने के रूप में, एक बड़ी सराहना विकसित की। मैंने इसके लिए एक अद्भुत सम्मान विकसित किया, जो आज भी बढ़ता जा रहा है। यह मेरे व्यापार का मुख्य साधन है - परमेश्वर के वचन को सिखाना और उसका प्रचार करना। जैसे-जैसे मैं बड़ा होता गया, बाइबल के बारे में मेरा ज्ञान और इसका उपयोग करने का कौशल बढ़ता गया। परमेश्वर और उसके वचन के लिए मेरा प्रेम निरंतर बढ़ता ही जा रहा है।

यह मेरी सेवकाई को पूरा करने में मेरी मदद करने के लिए एक उपकरण से बढ़कर है; यह परमेश्वर के लिए मेरी जीवन रेखा, मेरे लंगड़ (पानी के जहाज को किनारे पर बादने वाला कुंडा) और जीवन में चट्टान बन गया है। मैं केवल इसे पसंद ही नहीं करता हूं और इसकी सराहना करता हूं, बल्कि मैं आपने आप को इसका अति जरूतमंद (मोताज़) समझता हूँ । मैं बाइबल के तथ्यों को जितना बेहतर समझता हूँ, उतना ही मुझे इसकी गहराई का एहसास होता है जो इस जीवन में कभी भी पूरी तरह से नहीं समझा जा सकता है। मैं इसे अपने दिमाग से ही ज्यादा नहीं बल्कि अपने दिल से भी सीख रहा हूं। यह मेरे लिए बहुत कीमती और विशेष बन चूका है।

आध्यात्मिक युद्ध सेवकाई में मेरी भागीदारी ने मुझे सिखाया है कि केवल परमेश्वर का वचन ही अधिकार है, मेरा या किसी और का नहीं। जब हम इसका इस्तेमाल करते हैं तो शैतान और उसके राक्षसों को परमेश्वर के वचन का पालन करना पड़ता है। परमेश्वर के वचन में वास्तविक शक्ति है जब हम उस पर विश्वास करते हैं और उसे प्रस्तुत करते हैं। इस तरह यीशु ने जंगल में प्रलोभनों पर विजय प्राप्त की और यह आत्मा की तलवार है, जिसके बारे में पौलुस बात करता है - हमारा एकमात्र आक्रामक हथियार।

जैसे-जैसे मैं जीवन में आगे बढ़ता हूं, बाइबल मेरे लिए और भी आश्चर्यजनक/असधारण होती जाती है। मैं इसके बारे में जितना अधिक जानता हूं, उतना ही मुझे पता चलता है कि मैं वास्तव में वह सब कुछ जानता हूं वो, जो मझे जानना चाहिए, उसके सामने बहुत थोड़ा/कम है! एक बच्चे के लिए इसे समझना काफी आसान है, लेकिन बड़े से बड़ा विद्वान आपना पूरा जीवन इसके सिर्फ एक हिस्से में बिता सकता है पर कभी भी इसकी पूरी गहराई तक नहीं पहुंचता । यह एक ही समय में ही हमारे मन, भावनाओं और आत्मा से बात करता है।

मैं 50 वर्षों से भी अधिक समय से परमेश्वर के वचन का शिक्षण और प्रचार कर रहा हूँ। परमेश्वर ने मुझे अपने वचन का अध्ययन करने और जो कुछ मैं सीखता हूं उसे उन उपदेशों में बदलने में सक्षम होने का उपहार दिया है जो परमेश्वर के लोगों को अध्यात्मिक उपदेश देता और प्रोत्साहित करते है । मेरा अनुमान है कि मैंने उन वर्षों में 10,000 से अधिक संदेशों और पाठों को लिखा और प्रचार कीया है। परिणामस्वरूप, मैंने परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने और उसका प्रचार करने के बारे में बहुत कुछ सीखा है। मैंने जो कुछ सीखा है उसे दूसरों तक पहुँचाने के लिए मैंने "बाइबल का अध्ययन" और "बाइबल का प्रचार करना और सिखाना" लिखा है।

यह पुस्तक "बाइबल का अध्ययन" के पढ़ने पर आधारित है। इस पुस्तक का उपयोग करने से पहले इसे समझना चाहिए क्योंकि यह पुस्तक व्यक्तिगत बाइबल अध्ययन में सीखी गई बातों को लेती है और इसे उपदेश और पाठ की तैयारी पर लागू करती है।

मैं एक अमेरिकी हूं, और मेरी अधिकांश सेवकाई संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत में रही है। लेकिन यह किताब विकासशील संदेशों के बारे में जो सिखाती है उसका अमेरिकी या भारतीय संस्कृति से कोई लेना-देना नहीं है। मैं जो वर्णन करता हूं वह सभी संस्कृतियों और सभी समयों के लिए परमेश्वर का मार्ग है। ऐसा करने के लिए, मैं जो कहता हूं उसे बाइबल के संदेशों और उपदेशों पर आधारित करता हूं। जिस तरह से स्वयं यीशु ने पौलुस और पतरस और अन्य लोगों के साथ प्रचार किया, वह इस बात की रूपरेखा प्रदान करता है कि हमें भी आज परमेश्वर के वचन को कैसे व्यक्त करना चाहिए।

इस पुस्तक के उधेश्यों के लिए, मैं 'प्रचार' और 'शिक्षण' का आदान प्रदान तौर से उपयोग करता हूं। कुछ के लिए, उपदेश का अर्थ अनुप्रयोग से अधिक है, जबकि शिक्षण की सामग्री के हस्त्तरण से अधिक है, लेकिन प्रत्येक में दोनों को मौजूद होना चाहिए। इस पुस्तक में मैंने जिन सिद्धांतों को रेखांकित किया है, वही लागू होते हैं, बिना कोई फर्क पड़े ।

2 तीमुथियुस 3:16-17 सारा पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है , और शिक्षण, ताड़ना, सुधार और धार्मिकता में प्रशिक्षण के लिए उपयोगी है, कि परमेश्वर का सेवक हर एक भले काम के लिए सिद्ध बने और तत्पर हो।

भजन संहिता 119:9-11 एक जवान अपने मार्ग को शुद्ध कैसे रख सकता है? तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने से। मैं पुरे मन से तेरी खोज में लगा हूँ, मुझे अपनी आज्ञाओं से भटकने ना दे; मैं ने तेरा वचन अपने हृदय में छिपा रखा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूं।

इब्रानियों 4:12 क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित और प्रबल है। किसी भी दोधारी तलवार से तेज, यह प्राण और आत्मा, गांठ गांठ और गुदे गुदे को अलग अलग करके आर पार छेड़ता है ; यह मन की भावनाओ और दृष्टिकोणों को जांचता है।

परिचय

कि तू वचन का प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ सुधार कर, उलाहना कर और प्रोत्साहित कर । (2 तीमुथियुस 4:2)

वर्षों पहले मैंने एक आदमी के बारे एक कहानी पढ़ी थी, जिसे अपने पालतू कुत्ते को कुछ दवाई देनी होती थी। हर सुबह वह कुत्ते को कसकर पकड़ लेता, जबरन उसका मुंह खोलने की कोशिश करता और तरल पदार्थ(दवाई) को उसके गले से नीचे उतारने की कोशिश करता। कुत्ता लात मारता, हिलाता और दूर जाने की कोशिश करता। उस आदमी के लिए कुत्ते को दवाई पिलाना बहुत मुश्किल था। फिर एक दिन, इससे पहले कि वह कुत्ते को पकड़ पाता, उस आदमी ने कुछ दवा फर्श पर गिरा दी। कुत्ता तुरंत दौड़ा और उसकी एक-एक बूंद को चाट लिया। उस आदमी ने महसूस किया कि कुत्ते को दवाई तो पसंद है, कुत्ते को जो पसंद नहीं था वह था उसका तरीका दवाई देने का तरीका।

पादरियों के रूप में हम अपने लोगों को परमेश्वर का वचन से भोजन खिलाने के लिए जिम्मेदार हैं (यूहन्ना 21:15-17; 2 तीमुथियुस 4:1-2)। यह कितनी शर्म की बात है जब लोग परमेश्वर के वचन से मुंह मोड़ लेते हैं सिर्फ उस तरीके के कारण जिस तरीके से पादरी या शिक्षक उन्हें इसे खिलाते हैं! उसका वचन हमारी आत्माओं के लिए जीवनदायक और पोषटिक है। परमेश्वर के वचन में कोई समस्या नहीं है, लेकिन समस्या यह हो सकती है कि हम इसे लोगों को कैसे खिलाते हैं। यह पुस्तक किसी भी ऐसे व्यक्ति की मदद करने के लिए है जो यह सिखाता है कि वह परमेश्वर के वचन को इकत्रत और व्यक्त करने में कैसे बेहतर सक्षम हो सकतें हैं।

हमारे तनदेह को शारीरिक रूप से मजबूत और स्वस्थ रहने और बढ़ने के लिए भौतिक भोजन की आवश्यकता के लिए डिज़ाइन/ रूपित किया गया है। हमारी आत्माओं को विकसित होने और मजबूत और स्वस्थ रहने के लिए आध्यात्मिक भोजन की आवश्यकता के लिए रूपित किया गया है कि वह आध्यात्मिक रूप से भी हष्ट पुष्ट रहे । हम जानते हैं कि भोजन का आकर्षक तरीके से तैयार करना और परोसा जाना महत्वपूर्ण है। भोजन पौष्टिक, संतुलित, अनेक प्रकार का , आकर्षक दिखने वाला और पचाने में आसान होना चाहिए। हमारी आत्माओं के लिए आध्यात्मिक भोजन का भी यही सच है। हमें परमेश्वर के वचन को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करने की आवश्यकता है,आकर्षक, स्वस्थ और जो दैनिक जीवन में लागू करने में आसान हो । इस पुस्तक का उद्देश्य ऐसा करने में आपकी सहायता करना है।

जंक फ़ूड परोसना आसान है जो स्वाद में तो अच्छा है लेकिन पोषण और स्वास्थ्य नहीं देता। उपदेश सुनने में अच्छे, मनोरंजक और सुनने में मजेदार हो सकते हैं, लेकिन श्रोताओं की आत्मा में वृद्धि और पोषण नहीं लाते। अच्छा, स्वस्थ भोजन भी अनाकर्षक, बेस्वाद तरीके से परोसा जा सकता है ताकि लोग इसे खाने का आनंद ना लें। उपदेश परमेश्वर के सत्य को धारण कर सकते हैं लेकिन उन्हें एक साथ रखा जा सकता है और इस तरह से व्यक्त किया जा सकता है जो लोगों के लिए उबारु और आनकर्षक हो। वे संदेश के दौरान बैठते हैं लेकिन वे जाते समय कुछ भी नहीं याद रखते जो उनके जीवन पर लागू होता है। यह दुख की बात है। मेरी पिछली पुस्तक, "बाइबल का अध्ययन" आपके संदेशों में अच्छी सामग्री रखने में आपकी मदद करने के लिए बनाई गई है। यह पुस्तक, "बाइबल का प्रचार करना या सिखाना", उस सामग्री को इस तरह से इक्त्रत और वितरित करने में आपकी सहायता के लिए है जिसे लोग समझ सकें, याद रखें और आपने जीवन पर लागू करें । परमेश्वर के अविनाशी , जीवित वचन को

संभालना और इसे अपने लोगों को सिखाना एक अद्‌भुत जिम्मेदारी और एक महान विशेषाधिकार है। हम इसे अपने सर्वश्रेष्ठ के अलावा कुछ अधिक कैसे दे सकते हैं?

आज हमें दूसरों के साथ परमेश्वर के वचन को साझा करने का सम्मान प्राप्त है। यूनानी में 'सुसमाचार' शब्द का वास्तव में अर्थ है " खुशखबरी ।" यह खुशखबरी साझा करने में कितनी खुशी होती है - आइए सुनिश्चित करें कि हम एक अच्छा काम करते हैं ताकि जो लोग हमें सुनते हैं वे यह जानकर कह सकें कि उन्होंने अच्छी खबर सुनी है जो सही ढंग से व्यक्त की गयी है।

जहां तक मेरा संबंध है, प्रचार करना दुनिया में सबसे बड़ी बुलाहट और सबसे बड़ा विशेषाधिकार है। यह राष्ट्रपति या राजा होने से बड़ा है। परमेश्वर के वचन को उसके लोगों तक पहुँचाने से बड़कर कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। यह इस कदर योग्य है कि इसे अच्छी तरह से निभाया जाना चाहिए । परमेश्वर के लोगों को इसे अच्छी तरह से करने की आवश्यकता है ताकि वह इसका पूरा लाभ उठाएं। हम जो उपदेश देते हैं या सिखाते हैं, वे परमेश्वर के वचन और लोगों के जीवन के बीच की एक कड़ी हैं।

लोगों से बात करना आसान है - बस खड़े होकर बात करें। ऐसा लगभग कोई भी कर सकता है। अगर उपदेश देना बस इतना ही काम है, तो यह भी आसान है। लेकिन अगर प्रचार करने से हमारा मतलब एक तरह से परमेश्वर के वचन का संचार करना है कि लोग इसे समझते हैं, याद रखते हैं और इसे अपने जीवन में लागू करते हैं, फिर इसके लिए धयान केंद्रित परिश्रम और योजना की आवश्यकता होती है। घटिया प्रचार करना आसान है, अच्छा प्रचार करना मुश्किल है और इसके लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। सप्ताह दर सप्ताह, साल दर साल, इसे अच्छी तरह से करने के लिए एक ऐसा लक्ष्य है जिस तक बहुत कम पादरी पहुंचते हैं। यह एक ऐसा कौशल है जो जीवन भर विकसित होता है। यह केवल परमेश्वर की सहायता से ही किया जा सकता है (2 कुरिन्थियों 3:5)। इस पुस्तक को पढ़ने और अनुसरण करने से उपदेशों या पाठों में परमेश्वर के वचन की सच्चाई को साझा करने में अधिक कुशल बनने में आपको मदद मिलेगी ।

वचन के प्रचार का महत्व

परमेश्वर के वचन का सिखाना या उसका प्रचार करना सबसे बड़ा विशेषाधिकार होने के साथ-साथ सबसे गजब की जिम्मेदारी भी है जो किसी के पास हो सकती है। परमेश्वर पादरियों और शिक्षकों को अपने लोगों को सेवा के कार्यों के लिए तैयार करने के लिए अपने वचन को व्यक्त करने की आज्ञा देता है (इफिसियों 4:11-13)। चरवाहों के रूप में हम उसकी भेड़ों को खिलाने के लिए जिम्मेदार हैं ताकि वे स्वस्थ और विकसित हों (इफिसियों 4:11; 1 पतरस 5:1-4)।

परमेश्वर कहता हैं कि बाइबल हमारे लिए उस का प्रेरित, सटीक लिखित वचन है और "सिखाने, डांटने, सुधारने और धार्मिकता की शिक्षा देने के लिए उपयोगी है, ताकि परमेश्वर का जन पूरी तरह से हर एक भले काम के लिये सिद्ध और सक्षम बने " (2 तीमुथियुस 3:16-17)। बाइबल हमें सच्चाई और ज्ञान में शिक्षा देती है, यह असत्य को उजागर करती है, त्रुटि के दोषियों को, पाप करने वालों को पुनर्स्थापित करती है और वह सब कुछ प्रदान करती है जिस से एक मसीही को जीवन में किसी भी चीज़ का सामना करने के लिए तैयार किया जा सकता है।

2 तीमुथियुस 4:1-2 में , हमें "वचन का प्रचार करने" के लिए जिमेदार ठहराया गया है । हमें राजा के संदेश का प्रचार करना है (1 कुरिन्थियों 9:16)। यह हमारे सुझाव या विचार नहीं हैं जिनकी हमें घोषणा करनी है बल्कि स्वयं परमेश्वर की ओर से प्रकट सत्य है। यीशु स्वयं, अपने शिष्यों के लिए अंतिम जिमेदारी देते हुए , उन्हें विश्वासियों को यीशु की हर आज्ञा का पालन करने की शिक्षा देने की आज्ञा देता है (मत्ती 28:19-20)। इस तरह परमेश्वर का वचन सिखाने के द्वारा, हमें चेले बनाना है ।

परमेश्वर के वचन का प्रचार करना गंभीर कार्य है क्योंकि हम जो कहते हैं उसके लिए हम परमेश्वर को उत्तर देंगे (मत्ती 12:36-37)। हमें उसकी भेड़ों को वह पोषण देना है जो वह अपने वचन में प्रदान करता है, और इसे अपनी पूरी क्षमता से करना हैं क्योंकि हम जो कहते हैं वह अनंत काल को प्रभावित करता है - जब हम उसके वचनों को साझा करते हैं तो उनका अनन्त प्रभाव होता है (रोमियों 10:9-15)।

जब हम ईमानदारी से परमेश्वर की सच्चाई की घोषणा करते हैं, तो हम पर हमला किया जाएगा। जो परमेश्वर की आत्मा से भरे हुए नहीं हैं और उसके अधीन नहीं हैं, वे सच्चाई से गुस्सा होंगे और संदेशवाहक की आलोचना करेंगे - हमरी । इससे भी बुरी बात यह है कि, शैतान और उसकी दुष्टात्माएँ सच्चाई को चुप कराने और सुननेवालों पर इसका प्रभाव पड़ने से रोकने के लिए हर संभव कोशिश करेंगी । शैतान परमेश्वर के वचन की शक्ति (रोमियों 1:16) को हमसे कहीं अधिक जानता है, और इसे सही और प्रभावी ढंग से प्रचार किये जाने से रोकने के लिए किसी भी तरीके का उपयोग करेगा। जब हम तैयारी और प्रचार करते हैं, वह हमारे खिलाफ, और सुनने वालों के खिलाफ, सच्चाई को उनके के मनो में जाने और उन्हें बदलने से रोकने के लिए काम करेगा ।

तो हम प्रचार क्यों करते हैं? हम प्रचार करते हैं क्योंकि परमेश्वर के वचन ने हमें बदल दिया है और परमेश्वर ने हमारे दिलों में एक इच्छा रखी है कि हम दूसरों को भी उसके वचन के माध्यम से बदलते हुए देखें। हमारे अंदर एक सच्चाई है जिसे बाहर आना चाहिए क्योंकि यह सुनने वालों के जीवन में बदलाव

लाता है। हम प्रचार करते हैं क्योंकि हम मदद नहीं कर सकते लेकिन यीशु जैसे अद्‌भुत व्यक्ति के बारे में बात कर सकते हैं। हम प्रचार करते हैं क्योंकि हम उन लोगों की आत्माओं की परवाह करते हैं जो उसे नहीं जानते। जैसे पौलूस कहता हैं, "मुझे प्रचार करने के लिए मजबूर किया जाता है। लानत है मुझ पर यदि मैं सुसमाचार का प्रचार ना करूं!" (1 कुरिन्थियों 9:16)

मेरी प्रार्थना है कि यह पुस्तक आपको परमेश्वर के वचन को बेहतर ढंग से व्यक्त करने में मदद करेगी। मैं आपकी सहायता करना चाहता हूं कि आप कैसे एक प्रभावी संदेश तैयार करें और उसे वितरित करें। लेकिन पहले, हमें एक प्रभावी संदेह्वाह्क होने के बारे में बात करनी चाहिए। पात्र साफ और तैयार होना चाहिए ताकि उसमें जो संदेश है वह शुद्ध और परमेश्वर के द्वारा उपयोग किये जाने योग्य हो।

I. संदेशवाहक को तैयार करना

क. आपनी -तैयारी (सिर, हृदय, जीवन)

1. उपदेशक का हृदय

"तैयार किया हुआ दिल तैयार किये हुए उपदेश से कहीं बेहतर है। एक तैयार हृदय एक तैयार उपदेश बना देगा।" ई. एम. बौंड्स

एक तैयार हृदय का अर्थ है कि हम परमेश्वर के वचन में समय बिता रहे हैं और आध्यात्मिक रूप से बढ़ रहे हैं। इसका अर्थ यह है कि हम संदेश की तैयारी को लेकर परमेश्वर के पास जाते है कि वह हमारे साथ आपने वचन के द्वारा बात करे ताकि हम इसे आगे दूसरों को दे सकें (2 तीमुथियुस 2:6)। बहुत बार हम केवल कुछ ऐसा ढूंढते हैं जो हम अपने लोगों को बता सकें, इसके बजाय हमें यह सुनना चाहिए कि परमेश्वर हमसे क्या कह रहा है, और फिर हम उसे आगे बढ़ाते हैं। हम अपने लोगों को जो संदेश देते हैं वह वही है एक परमेश्वर हमें सिखा रहा है। हम परमेश्वर से सिर्फ यह नहीं पूछते कि हमें लोगों से क्या कहना चाहिए, हम उससे पूछते हैं कि वह हमसे पहले क्या कहना चाहता है।

दूसरों को परमेश्वर का वचन बोलने का हमारा मुख्य अधिकार यह है कि हमें ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं है! अगर हम सोचते हैं कि हम काफी अच्छे हैं, या उन्हें हमारी जरूरत है, तो हम अपनी खुद की अयोग्यता को बूलते हैं और यीशु के बारे में प्रचार होने के बजाय प्रचार हमारे बारे में होने लगता है।

हमें परमेश्वर के बारे में अपने ज्ञान में बढ़ते रहना चाहिए, लेकिन ईस से भी अधिक उसके साथ अपने व्यक्तिगत संबंध में। केवल परमेश्वर के बारे में जानना महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि परमेश्वर को जानना महत्वपूर्ण है एक वास्तविक, बढ़ते और प्रेमपूर्ण तरीके से (फिलिप्पियों 3:7-14)।

पादरियों के रूप में, इससे पहले कि हम दूसरों को उपदेश देने पर विचार करें, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारा प्रार्थना जीवन मजबूत और स्वस्थ है, और यह कि हम परमेश्वर से बात करने के साथ-साथ अधिक समय व्यतीत करतें हैं, उसे हमसे बात करता सुनते हैं। हमें अपनी बाइबल नियमित रूप से पढ़नी चाहिए, ना केवल अध्ययन या धार्मिक प्रवचन की तैयारी के लिए, बल्कि अपने स्वयं के आध्यात्मिक विकास के लिएऔर भी ज्यादा। उसके करीब आने और उससे सुनने के लिए, हमें इसे पढ़ना चाहिए।

उसके प्रति हमारा सम्मान और उसके प्रति ख़ुशी को भी बढ़ता रहना चाहिए। वास्तव में, हम जितना अधिक समय तक प्रचार करते हैं, उतना ही अधिक हमें इस बात की गंभीरता के बारे में पता होना चाहिए कि हम क्या करते हैं, और परमेश्वर की महिमा का, जिसका हम प्रचार करते हैं। इसे हल्के ढंग से या पर्याप्त तैयारी के बिना करने में हमें सतर्क रहना चाहिए। प्रचार करने की जिम्मेदारी को संभालने के लिए, जिस तरह से इसे संभाला जाना चाहिए, एक स्वस्थ, पवित्र भय और परमेश्वर के लिए सम्मान महत्वपूर्ण और आवश्यक है। परमेश्वर ने इसे यशायाह के (यशायाह 6:1-8; 33:14) और मूसा के (निर्गमन 19:18) सामने प्रकट किया जब उसने पहली बार उन्हें अपने लिए बोलने के लिए बुलाया।

जब हम लगातार पवित्र, विश्वासयोग्य, आज्ञाकारी जीवन जीते हैं, तभी हम परमेश्वर के पवित्र आत्मा से भरे जाते है और उपयोग किए जाते हैं (प्रेरितों के काम 2:1-4; 1 पतरस 1:12)। उसकी उपस्थिति के बिना हमें उसके लिए दूसरों से बात करने पर भी विचार नहीं करना चाहिए (यूहन्ना 15:5)। प्रचार करने से पहले हमारे दिल को तैयार रहने की जरूरत है, लेकिन हमारे दिमाग को भी ऐसा ही करना होता है।

2. उपदेशक का दिमाग

पौलुस ने तीमुथियुस को "अपना सर्वोत्तम करने" की आज्ञा दी जिस तरह से उसने "सत्य के वचन" को संभाला (2 तीमुथियुस 2:15)। "अपना सर्वश्रेष्ठ करें" के लिए इस्तेमाल किए गए यूनानी शब्द का अर्थ है "किसी चीज़ पर अपना दिल लगाना।" इसका अर्थ है कि हमें परमेश्वर के वचन को जानने और व्यक्त करने में सावधान , समर्पित और मेहनती होना चाहिए।

परमेश्वर हमसे उम्मीद करता हैं कि हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करें। वह हमसे सिद्ध होने, या अन्य प्रचारकों की तरह बनने की उम्मीद नहीं करता है, लेकिन वह हमसे अपने संदेश की तैयारी और वितरण में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करने की उम्मीद करता है, फिर बाकी की देखभाल वह खुद करता है (1 कुरिन्थियों 3:6) -7)।

पौलुस यह कहकर जारी रखता है कि हमें स्वयं को "परमेश्वर के सामने" एक स्वीकृत व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करना है (2 तीमुथियुस 2:15)। वह अकेला है जिसे हम खुश करने की कोशिश कर रहे हैं। दूसरे हमारे संदेश के बारे में क्या सोचते हैं, यह मायने नहीं रखता, केवल यह कि परमेश्वर इसके बारे क्या सोचता है। हम किसी के श्रोताओं को उपदेश दे रहे हैं - परमेश्वर के आपनो को। बहुत बार हम इस बारे में अधिक चिंतित होते हैं कि दूसरे हमारे प्रचार के बारे में क्या सोचते हैं, यदि वे हमें पसंद करते हैं या हम अन्य पादरियों या शिक्षकों की तुलना में कैसे हैं। हमें मनुष्यों को प्रसन्न करने वाला नहीं, केवल परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला होना है (गलातियों 1:10)।

हमारा लक्ष्य है "सत्य के वचन को सही तरह से काम में लाना" (2 तीमुथियुस 2:15)। पौलूस एक तम्बू बनाने वाला था, और वह यहाँ जिस शब्द का उपयोग करता है उसका शाब्दिक अर्थ है "एक सीधी रेखा को काटना।" इसका अर्थ है कि हमें कुशलता से परमेश्वर के वचन की जांच करने और उसकी सही व्याख्या करने में सक्षम होना चाहिए। यह एक आदेश है, सुझाव नहीं। मेरी किताबें, परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना" और "बाइबल अवलोकन" परमेश्वर के वचन को समझने में मदद करने के लिए लिखी गई थी। मैं आपको उन्हें पढ़ने और उनका उपयोग करने के लिए भी प्रोत्साहित करता हूं।

इसलिए हमें अपने हृदय को परमेश्वर के प्रति पूरी तरह से खोलने और उसकी अगुवाई के प्रति संवेदनशील होने के लिए तैयार करने की आवश्यकता है। हमें अपने दिमाग को प्रचार में कड़ी मेहनत करने और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रतिबद्ध होने के लिए तैयार करने की आवश्यकता है। प्रचार करने से पहले हमें अपने जीवन को भी तैयार करना चाहिए।

3. उपदेशक का जीवन

एक बार किसी ने महान अमेरिकी प्रचारक बिली ग्राहम से पूछा कि उसे एक संदेश तैयार करने में कितना समय लगता था । उसका जवाब था : " पूरा जीवन।" बाइबल का प्रचार करना या सिखाना केवल कुछ ऐसा नहीं है जिसे हम सप्ताह में कुछ घंटे करते हैं, यह हमारे पूरे जीवन का हिस्सा है। यह केवल कुछ ऐसा नहीं है जो हम करते हैं, यह वह है जो हम हैं।

हम जो कहते हैं, उसे कहने से पहले ही हमें वो होना चाहिए। हमारे लोग, हमारे बच्चों की तरह, हम जो कहते हैं, उससे कहीं अधिक हम जो करते हैं, उसे करने के लिए उपयुक्त (हाजिर जवाब) होते हैं। हमारे जीवन और हमारे शब्दों, दोनों को एक ही बात का संचार करना चाहिए। हमारे जीवन को परमेश्वर और उसके वचन के प्रति सम्मान दिखाना चाहिए। घर पर हमारा जीवन, जब हम अकेले हों, जब हम दूसरों

के साथ हों और प्रचार करते समय हमेशा वफादार और आज्ञाकारी होना चाहिए। हम जो कुछ भी कर रहे हैं और करते हैं, उसमें हमें द्रढ़ होना चाहिए।

वफादार रहें, चाहे आप को सुनने वाले समूह का आकार कोई भी हो । एक विशाल दर्शक वर्ग आप को एक बेहतर वक्ता नहीं बनाएगा हैं, लेकिन यीशु के साथ, आपके परिवार के साथ और आपकी कलीसिया के साथ आप का विकासशील संबंध बनाएगा। अन्य पादरियों के साथ एक अच्छा, घनिष्ठ संबंध वह सब होना महत्वपूर्ण है जो परमेश्वर हमसे चाहता है।

स्वस्थ भोजन खाने, अपना वजन कम रखने, नियमित व्यायाम करने, रात को सोने के लिए पर्याप्त समय और आराम करने और मौज-मस्ती करने के लिए अपने स्वास्थ्य की देखभाल करना भी परमेश्वर का जन होने के लिए महत्वपूर्ण है, जो वह चाहता है कि आप हों। आपका हृदय, आपका दिमाग और आपका पूरा जीवन सही और तैयार होना चाहिए, इससे पहले कि आप परमेश्वर के वचन को जिस तरह से पारित करने के योग्य हैं, उसे पारित कर सकें।

ख. उपदेश की तैयारी

इससे पहले कि संदेश की वास्तविक तैयारी हो सके, वक्ता के पास प्रचार करने के लिए बाइबल आधारित एक दृष्टिकोण होना चाहिए। हमें यह महसूस करना चाहिए कि यह सर्वोच्च प्राथमिकता है, सबसे महत्वपूर्ण कार्य, जो एक पादरी के पास है (यूहन्ना 21:15-17)। इसका मतलब है कि हमें अपने कार्यक्रम का प्रबंधन करना चाहिए ताकि उपदेश की तैयारी के लिए हमेशा पर्याप्त समय हो। ऐसी आपात स्थितियाँ होंगी जब मामलों को दबाने से हमें अपनी ज़रूरत अनुसार समय देना मुश्किल हो जाता है, लेकिन अधिकांश समय के लिए हमें इसे अपने समय की सर्वोच्च प्राथमिकता बनाने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारे पास शुरू से अंत तक पूरे संदेश को प्रार्थना में डूबोने का समय हो।

ऐसा करने के लिए यदि हम उपदेश की तैयारी में नियमित दस्तूर बनाये रखते हैं तो यह सहायता करता है। हमें आपात स्थिति को समय देने के लिए काफी जल्दी शुरुआत करनी चाहिए, और अपने संदेश को तैयार करने के लिए पर्याप्त समय देना चाहिए। हमें बाइबल के सभी हिस्सों का उपयोग करना चाहिएऔर ना केवल पसंदीदा पुस्तकों या हिस्सों पर चलते रहना चाहिए। हमें बाइबल में कुछ बहुत ही कीमती और खास चीज़े दी गयी हैं । परमेश्वर की सच्चाई सावधानी से संभालने वाली चीज है, यह सुनिश्चित करते हुए कि हम इसे अपने तक ही सीमित नही रखते । हमें यह केवल अपने लिए नहीं दिया गया है, बल्कि दूसरों को देने के लिए दिया गया है (2 तीमुथियुस 2:1-2; मत्ती 28:19-20)। हम जो जानते हैं उसे आगे बढ़ाना उन चीजों में से एक है जिसकी परमेश्वर पादरियों से सबसे ज्यादा उम्मीद करता है (1 तीमुथियुस 3:2; 2 तीमुथियुस 2:24)।

आध्यात्मिक, भावनात्मक, शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार होने के बाद ही हम संदेश तैयार करने में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सकते हैं।

II. संदेश तैयार करना

क . हिस्से पर ध्यान केंद्रित करके

1. प्रार्थना करना

वास्तविक संचार केवल श्रोताओं के लिए वक्ता की आवाज सुनना ही नहीं है, बल्कि वक्ता की आवाज के माध्यम से स्वयं परमेश्वर की आवाज को उनसे बोलते हुए सुनना है। जब मैं सिखाता या प्रचार करता हूं, तो मैं नहीं चाहता कि लोग मुझे सुनें, मैं चाहता हूं कि वे मेरे माध्यम से परमेश्वर को उनसे बात करते हुए सुनें। मुझे संदेश की तैयारी से पहले, उसके दौरान और बाद में प्रार्थना करनी चाहिए ताकि ऐसा हो । यदि मैं परमेश्वर की आत्मा के अधीन हूं और अपनी सर्वोत्तम तैयारी कर रहा हूं, तो वह जो मैं कहता हूं, उसका उपयोग आपनी महिमा के लिए करेगा। हकीकत में, यह परमेश्वर की आत्मा है जो वास्तविक संचारक है, मैं नहीं। जब मैं उसे अनुमति देता हूं तो वह मेरे माध्यम से बोलता है। मैं परमेश्वर के संदेश के लिए प्रणाली हूं। ऐसा होने के लिए परमेश्वर के साथ प्रार्थना में समय लगता है। इसका अर्थ है एक हिस्से को चुनने, उसका अध्ययन करने और फिर उन टिप्पणियों को एक उपदेश की रूपरेखा में बदलने की पूरी प्रक्रिया है जिसके बारे में प्रार्थना की जाती है। यह परमेश्वर से लगातार बात करना और जो वह हमसे कहता है उसे सुनना है । यही एक ईश्वरीय संदेश की कुंजी है। एक वक्ता के रूप में बुद्धि, कौशल, सीखने की कोई भी मात्रा या उपदेश के उत्तम लेख इसकी भरपाई नहीं करते हैं। हम केवल कुछ लेखो को एक साथ नहीं रख सकते और फिर परमेश्वर को इन्हें आशीश देने की प्रार्थना मांग कर उनका उपयोग कर सकते है , ऐसा नहीं है । हमें शुरू से अंत तक उसके साथ लगातार संपर्क में रहने की जरूरत है। उसे अपने साथ बैठने के लिए कहें, आपकी अगुवाई करने के लिए कहें , आपसे बात करने के लिए कहें, आपको प्रबुद्ध करने के लिए कहें, आप जो अध्ययन करते हैं उसे आपने जीवन की वास्तविकता बनाएं। बिना रुके प्रार्थना करना निश्चित रूप से संदेश तैयारी की कुंजी है (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)। प्रार्थना करें कि परमेश्वर उस हिस्से को स्पष्ट करे जिसका आप प्रचार कर रहे हैं और आप इसे उन लोगों के लिए स्पष्ट कर सकें जो आपको बोलते हुए सुनते हैं (कुलुस्सियों 4:4)।

जब आप दूसरों को परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के बारे में सोचते हैं, तो याद रखें कि आप एक ऐसा कार्य कर रहे हैं जो उसकी मदद के बिना असंभव है। हम केवल शब्द ही बोल सकते हैं, और वो चाहे कितने भी फैंसी या सही क्यों ना हों, उसकी आत्मा के द्वारा उन्हें जीवन और अर्थ दिए बिना, वे केवल खाली शब्द हैं (1 कुरिन्थियों 13:1)।

यह भी याद रखें कि हर बार जब आप संदेश की तैयारी शुरू करते हैं तो आप एक युद्ध में प्रवेश कर रहे होते हैं। शैतान आपके पहले विचारों से लेकर संदेश देने के अंत तक आपकी प्रगति का विरोध करने के लिए हर संभव प्रयास करेगा। वह एक गरजता हुआ सिंह है, कि वह किसे खा जाए (1 पतरस 5:8) और जब तक आप परमेश्वर के वचन में पाई जाने वाली जीवनदायक शक्ति और स्वतंत्रता का अध्ययन करते हैं और उसे साझा करते हैं, तब तक वह आलसी नहीं बैठेगा। उसके राक्षस आपके मन और कार्यक्रम में विकर्षण लाएंगे। भ्रम, पाप, आलस, अभिमान, वासना, पारिवारिक समस्याएँ, बीमारी या आर्थिक विकर्षण - जो भी कार्य आपके विरुद्ध होंगे। अगर अतीत में किसी चीज़ ने आपका ध्यान भटकाया है, तो शैतान उसका बार-बार इस्तेमाल करेगा , आप आपने बल पर बुराई की शक्तियों के लिए किसी भी तरह से सामना करने योग्य नहीं हैं, लेकिन परमेश्वर बड़ा है और यदि आप इसके लिए उसकी ओर मुड़ते हैं तो वह आपको जीत दिलाएगा (1 यूहन्ना 4:4)।

दुश्मन जानता है कि आपके लोगों को आपकी बातें सुनने से कैसे विचलित करना है, इसलिए उनके लिए प्रार्थना करें जैसे आप अपने लिए प्रार्थना करते हैं। वह जानता है कि सच्चाई को सुनने के बाद उनके दिमाग से कैसे छीन लिया जाए ताकि यह उनके जीवन में फल ना दे (मत्ती 13:19)। आप एक ऐसे दुश्मन से लड़ रहे हैं जो आपसे अधिक चतुर और शक्तिशाली है, इसलिए आपको हर दिन हर पल सतर्क और प्रार्थना में रहने की जरूरत है, खासकर जब आप अपना संदेश तैयार कर रहे हों और इसका वितरण कर रहे हों। आप इस पुस्तक द्वारा प्रदान किए जाने वाले सिद्धांतों और प्रशिक्षण में एक मास्टर बन सकते हैं, लेकिन जब तक आप अपने स्वयं के जीवन में परमेश्वर के साथ पूरी तरह से जुड़े हुए नहीं हैं, तब तक आप में उसकी शक्ति और उपस्थिति नहीं होगी और यह आप में प्रवाहित नहीं होंगे।

2. अपना सर्वश्रेष्ठ करने के लिए प्रतिबद्ध होकर ध्यान केंद्रित करके

आप उपदेश प्रचार करने से पहले, इसे तैयार करने के लिए कुछ दिन पहले का इंतजार नहीं कर सकते। आपको कम से कम दो सप्ताह पहले शुरू करने की आवश्यकता है, ताकि जब आप वर्तमान संदेश का प्रचार करें तो आप जान सकें जो इसके आगे आ रहा है और खुद को दोहराए बिना या महत्वपूर्ण सामग्री को छोड़े बिना उन्हें एक साथ फिट कर सकते हैं। आपको हिस्से का अध्ययन करने के लिए पर्याप्त समय पाने के लिए जल्दी शुरू करने की आवश्यकता है, फिर अपने संदेश की सामग्री के बारे में सोचने और प्रार्थना करने के लिए, परमेश्वर को सुनने के लिए और परमेश्वर के जीवित वचन के योग्य संदेश को एक साथ रखने के लिए। जितनी जल्दी आप शुरू करते हैं उतना ही अधिक समय पवित्र आत्मा को तुम्हे यह हिस्सा सिखाने और इसे अपने जीवन में लागू कराने के लिए समय मिलता है ईससे पहले कि यह आप के द्वारा प्रचार कीया जाए।

मुझे पता है कि परमेश्वर के साथ कुछ भी असंभव नहीं है और वह कुछ भी करने में सक्षम है, लेकिन इस भरम में ना रहे की वह आपको शनिवार की रात अगले दिन के लिए एक अच्छा संदेश देगा जब कि आप ने उस पर कोई काम नहीं किया है। एक पत्नी के लिए पौष्टिक भोजन परोसने का अर्थ है आगे की योजना बनाना और स्वादिष्ट, स्वस्थ भोजन तैयार करने की पूरी कोशिश करना। हमारे लिए भी यही सच है जो वचन के लिए भूखी आत्माओं को परमेश्वर के वचन खिलते हैं।

मैं आमतौर कई सप्ताह पहले से ही जानता हूं कि मैं क्या प्रचार करूंगा। कभी-कभी यह बदल जाता है, लेकिन मेरे पास एक योजना है। मैं एक साथ कई उपदेशों पर काम करने की कोशिश करता हूं। जब मैं एक में अटक जाता हूँ, इससे ऊब जाता हूं या नहीं जानता कि आगे क्या करना है, तो मैं दूसरे पर काम करूंगा। फिर जब मैं तरोताजा हो जाऊँगा तो मैं दूसरे उपदेश को वापस देखूँगा और यह अधिक आसानी से प्रवाहित होगा। अंतिम परिणाम भी हमेशा बहुत बेहतर होता है।

मैं आपकी सेवकाई को पूरा करने के लिए बाइबल अध्ययन और प्रार्थना में समय बिताने के महत्व को अधिक जोर नहीं दे सकता। अन्य चीजों में से समय निकालने में समय लगता है, लेकिन यह आपके लिए परमेश्वर की प्राथमिकता है। जब प्रारंभिक कलीसिया में प्रेरित विधवाओं को भोजन और वस्त्र वितरित करने में मदद करने में व्यस्त हो गए, तो उन्होंने उस कार्य को संभालने के लिए डीकनों को नियुक्त किया। वह कार्य जितना महत्वपूर्ण था, वे जानते थे कि बाइबल का अध्ययन करने और प्रार्थना करने से बढ़कर कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है (प्रेरितों के काम 6:1-4)।आज भी यही सत्य है। उपदेश की तैयारी का कोई शॉर्टकट (छोटा तरीका) नहीं है। यदि आप अपने काम को छोटा और आसान बनाने के लिए इस पुस्तक की तलाश कर रहे हैं तो आपको यह इसमें नहीं मिलेगा । जो कुछ भी करने योग्य है वह अच्छी तरह से किये जाने के योग्य है, और यही संदेश प्रचार की सचाई है। कुछ अच्छा करने के लिए एक कीमत

चुकानी पड़ती है। यदि आप उस कीमत का भुगतान करने को तैयार नहीं हैं तो आपको इस पुस्तक के बाकी हिस्सों को पढ़ने की आवश्यकता नहीं है और आपको प्रचार नहीं करना चाहिए।

<u>3. हिस्सा चुनने द्वारा ध्यान केंद्रित करके</u>

क- परमेश्वर आपको जो सिखा रहा है उसे पारित करें , कुछ पादरियों को प्रचार करने के लिए एक हिस्सा खोजने में कठिनाई होती है। मेरे लिए कभी भी कोई ऐसी समस्या नहीं रही। ऐसे बहुत से अद्भुत हिस्से हैं जिनका मैं अध्ययन करना चाहता हूँ और साझा करना चाहता हूं, एक को छोड़कर उन सभी को अस्वीकार करने में मुझे समस्या होती है। मुझे कैसे पता चलेगा कि किसका उपयोग करना है? यदि कोई हिस्सा, पुस्तक या बाइबल में से व्यक्ति है जिसका उपयोग परमेश्वर मुझसे बात करने के लिए कर रहा है, तो मैं उसका और अधिक विस्तार से अध्ययन करूँगा और उसका उपयोग दूसरों के लिए मेरे उपदेशों का आधार बनाने के रूप में करूंगा। यदि मेरे जीवन में कोई ऐसा क्षेत्र है जहाँ परमेश्वर कार्य कर रहा है, तो मैं उसका अध्ययन और प्रचार करूँगा। मेरे पास यह सीखने की श्रृंखला है कि परमेश्वर को कैसे सुनना है, उसे बेहतर तरीके से कैसे जानना है, उपवास करना है, और इस तरह के विषयों को सीखना जैसे मैं अपने जीवन में उनके बारे सीखना चाहता था। जब परमेश्वर मुझमें कोई इच्छा या बोझ डालता है तो यह मेरे अपने लिए कुछ सीखने को और अपने लोगों के साथ भी साझा करने के लिए कर रहा होता है।

अन्य समय मैं परमेश्वर को मुझे यह दिखाने के लिए कहूँगा कि मुझे अपने लोगों की गंभीर आवश्यकताओं की आपूर्ति के लिए क्या करना होगा। जब उसने मुझे उनकी तस्सली और प्रोत्साहन की ज़रूरत दिखाई, तो मैंने अय्यूब, एस्तेर और फिर दानिय्येल के बारे में प्रचार किया। जब मुझे पता चला कि उन्हें विश्वासपूर्वक दृढ़ रहने की आवश्यकता है, तो मैंने मूसा और यहोशू के जीवन की शिक्षा दी। जब हम परमेश्वर की उपासना को बेहतर तरीके से करना सीख रहे थे तब दाऊद एक महान विषय था। जब विवाहों को मज़बूत करने की ज़रूरत थी मैंने इफिसियों 5 की ओर रुख किया।

ख- हिस्से को छोटा रखें जब आप उपदेश देने या सिखाने के लिए कोई हिस्सा चुनते हैं, तो उसे बहुत लंबा ना बनाएं। एक साथ बहुत सी चीजों को कवर करने का प्रयास करने की बजाये कुछ आयातों को लेकर अच्छी तरह से बयाँ करना अच्छा होगा। बाइबल की सभी पुस्तकों से और उन हिस्सों पर प्रचार करने के लिए जिनका आपने कभी उपयोग नहीं किया है आपने आप को प्रतिबद्ध करें। आपने परिचित, पसंदीदा लोगों को ही बार बार ना देखे। हमें अपने आहार में भिन भिन खाने चाहिए और हमारे लोगों को अपने आध्यात्मिक आहार में भी भिन भिन चाहिए। उन्हें ताजा तैयार भोजन दें; उन्हें वह ना खिलाएं/सुनाये जो उन्होंने पहले ही सुना है।

ग- अपने दिल से प्रचार करें, सिर्फ अपने दिमाग से नहीं लोगों को, या लोगों पर प्रचार ना करें। अपने आप को भी उपदेश दें। "आप" के बजाय "हम" का प्रयोग करें। अपने आप को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में शामिल करें जिसे परमेश्वर के वचन की सच्चाई की आवश्यकता है। अपने संघर्षों के प्रति ईमानदार रहें। आपको गहरी अंदरूनी व्याख्या साझा करने की आवश्यकता नहीं है, बस इतना कि आप संघर्ष करते हैं जैसे वे करते हैं। जीवन सभी के लिए कठिन है।

यह जानकर कि आप समझते हैं कि वे किस दौर से होकर गुजर रहे हैं , उन्हें आपकी बात को बेहतर ढंग से सुनने के लिए मदद करेगा। उन्हें प्रोत्साहित करें,अपने लोगों को कभी ना डांटें। हर कोई आलोचना की तुलना में प्रोत्साहन के लिए बेहतर प्रतिक्रिया देता है। याद रखें, आप परमेश्वर के लिए बोल रहे हैं इसलिए लोगों को आपने साथ प्रभावित करने के लिए ऐसी बातें ना करें, बस उससे प्रभावित होने दे।

ध्यान परमेश्वर और उसके वचन पर होना चाहिए, ना कि उस पर जो आप कहते हैं या आप इसे कैसे कहते हैं। शुरुआत खुद से करें। अपने स्वयं के विचारों का प्रचार ना करें और समर्थन के लिए बाइबल की आयतों की तलाश ना करें (2 कुरिन्थियों 4:2)। हमें बहुत सावधान रहना चाहिए कि हम केवल वही कहते है जो परमेश्वर का वचन कहता है! (बाइबल अध्यन में मदद के लिए मेरी पुस्तक, "बाइबल का अध्ययन" देखें ।)

आप जिस भी हिस्से का प्रचार या उपदेश करने जा रहे हैं, सुनिश्चित करें कि आप स्वयं इसका अध्ययन करें इसको आपसे बात करने दें इससे पहले कि आप किसी भी टिप्पणी या उपदेश की सहायता स्रोत की ओर मुड़े । किसी दुसरे का चबाया हुआ खाना इस्तेमाल ना करें, अपना खाना खुद चबाएं! अच्छा उपदेश सिर्फ दिमाग से नहीं, दिल से आता है। केवल जब आप पहले परमेश्वर के वचन को अपने ऊपर प्रभावी होने देते हैं और आप से बात करने देते हैं , तभी आप इसे दूसरों के साथ साझा कर सकते हैं। अगर यह केवल आपके सिर से शब्द है तो यह केवल दूसरे के सिर में शब्द बन जाएगे । परमेश्वर के वचन से उनके दिल तक पहुँचने के लिए, उनके सिर तक नहीं, आपको पहले परमेश्वर को इस हिस्से के मध्यम से अपके हृदय को छूने देना चाहिए। मैंने इस पुस्तक के पीछे नमूना उपदेश की रूपरेखा शामिल की है, पर केवल शुरू करने में आपकी सहायता करने के लिए, ना कि बैसाखी बनने के लिए या आपको अपने स्वयं के संदेश की तैयारी करने से रोकने के लिए । जब मैं पहली बार प्रचार करना शुरू कर रहा था, तो दूसरों के उपदेश की रूपरेखा ने मुझे यह सीखने में मदद प्रदान की कि मैं कैसे आपनी रूपरेखा विकसित कर सकता हूँ, इसलिए मैं उन्हें, आरंभ करने में आपकी मदद करने के लिए, शामिल करता हूँ। आप बेझिझक उन्हें बदलें और अपनी इच्छा अनुसार उनका उपयोग करें, लेकिन उन्हें आपने द्वारा उपदेश विकास कला को जगह ना दें।

घ- जब आप नहीं जानते कि किस हिस्से का उपयोग करना है जब आप नहीं जानते कि किसके बारे में प्रचार करना है, तो प्रार्थना करें और परमेश्वर को आपके हृदय से बात करने दें। जब आप अपनी स्वयं की भक्ति के लिए बाइबल पढ़ते हैं, तो सुनें कि परमेश्वर आपको कहाँ जाने की अगुवाई करता है। किसी ऐसे विषय या पुस्तक के बारे में सोचें जिसके बारे में आपने लंबे समय से बात नहीं की है और उस पर विचार करें। इस बारे में सोचें कि वे जीवन में किन हालातों का सामना कर रहे हैं और इसके माध्यम से पवित्रशास्त्र उनकी क्या मदद कर सकता है। हमेशा कुछ ऐसा देखें जो आपके लोगों के लिए आहार होगा, उन्हें प्रोत्साहित करे और दैनिक जीवन की लड़ाई में उनकी मदद करे।

ङ- एक उपदेश श्रृंखला अच्छी है उपदेशों की एक श्रृंखला का प्रचार करने से आपको यह जानने में मदद मिल सकती है कि आगे क्या आ रहा है। पूरी बाइबल पुस्तक, सिद्धांत, या व्यक्ति के जीवन का अध्ययन करें। इस तरह आप एक सप्ताह से अगले सप्ताह तक निर्माण कर सकते हैं, लोग आपके द्वारा कही गई बातों को बेहतर ढंग से याद रख सकते हैं और उनका अनुसरण कर सकते हैं, और जब आप उन्हें परमेश्वर के वचन से ठोस सच्चाई खिलाते हैं, तो वे आते रहना और इसे सुनते रहना चाहेंगे कि आगे क्या हो रहा है (1 कुरिन्थियों 3) : 2)।

च- जब आपका मन उपदेश तैयार करने का नहीं है आम तौर पर परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना और उसे दूसरों तक पहुँचाना एक खुशी की बात है, हालाँकि यह कठिन काम हो सकता है। लेकिन कई बार ऐसा भी होता है जब हमारा मन उपदेश तैयार करने का नहीं होता है। हम इसे टालते रहते हैं और यहां तक कि इससे डरते भी हैं। तब हमें क्या करना चाहिए?

सबसे पहले, सुनिश्चित करें कि आपके जीवन में कोई पाप नहीं है और आप परमेश्वर पर भरोसा कर रहे हैं चाहे आप किसी भी परिस्थिति का सामना कर रहे हों। अपने स्वयं के जीवन, परिवार या चर्च में

समस्याओं की अनदेखी ना करें। उन्हें हल करने के लिए आप जो कर सकते हैं वह करें और उन्हें परमेश्वर की देखभाल में रख दें। भले ही आपके और परमेश्वर के बीच सब कुछ ठीक हो, फिर भी हमेशा आपका मन एक उपदेश तैयार करने को नहीं करेगा। इसमें समय, ध्यान और कड़ी मेहनत लगती है। शरीर इसका विरोध करता है और इसी तरह शैतान भी करता है। यह अक्सर एक आत्मिक लड़ाई होती है, इसलिए हमें चलते रहने के लिए स्वयं को नियंत्रित करने के लिए परमेश्वर की आत्मा की आवश्यकता होती है। परमेश्वर की आज्ञाकारिता के मामले के रूप में दृढ़ रहें। आपकी पत्नी का मन हमेशा आपके लिए पौष्टिक, स्वस्थ भोजन तैयार करने को नहीं करता है, लेकिन फिर भी ऐसा करने के लिए वह खुद को प्रतिबध करती है; इस लिए आपको भी करना चाहिए।

सुनिश्चित करें कि आप आपनी आवश्यकता के बारे अध्ययन करने मे सहायता के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं। उपदेश की तैयारी में अपने संघर्ष के बारे परमेश्वर के प्रति ईमानदार रहें। एक अच्छे दोस्त से बात करें, खासकर किसी दूसरे पास्टर से, और उसे भी आपके लिए प्रार्थना करने के लिए कहें। कभी-कभी प्रचार करने के लिए एक नए हिस्से या विषय की तलाश करना आपको अध्ययन करने के लिए प्रेरित करने में मदद कर सकता है। लेकिन आधार रेखा यह है कि आपको बस अपने आप को आरंभ करने के लिए मजबूर करना चाहिए, इसे बंद नहीं करना चाहिए या किसी आसान मार्ग की तलाश नहीं करनी चाहिए। अपनी बाइबल खोलो और अध्ययन करना शुरू करो और जैसे ही आप उसकी सुनेंगे परमेश्वर आपसे बात करेगा! भेड़ों को चराना एक चरवाहे के लिए परमेश्वर की सबसे बड़ी आज्ञा है (यूहन्ना 21:17)। यह कुछ ऐसा है जो हमें पादरियों और शिक्षकों के रूप में अपने कर्तव्यों को ईमानदारी से पूरा करने के लिए करना चाहिए और अच्छा तरह करना चाहिए (मत्ती 25:21; 2 तीमुथियुस 4:7)।

छ- एक उपदेश तैयार करने में कितना समय लगना चाहिए? एक उपदेश को तैयार करने में कितना समय लगता है यह कई बातों पर निर्भर करता है, जैसे कि आप कितने समय से अपनी बाइबल का अध्ययन कर रहे हैं और आपको उपदेश और पाठ लिखने का कितना अनुभव है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपने बीते में अध्ययन करते समय अच्छे नोट्स बनाए हैं या नहीं और आप अपने समय का कितना अच्छा प्रबंध करते हैं और रोक -रोकावटो से बचते हैं। कुछ भी अच्छा होने में समय लगता है। हम अपने संदेशों के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करने के द्वारा परमेश्वर और उसके वचन का सम्मान करते हैं (2 तीमुथियुस 2:15)।

आप अपने समय का सबसे अधिक कुशलता से उपयोग कर सकते हैं यदि आप अपने उपदेश पर उस समय काम करते हैं जब आप अधिक सतर्क होते हैं। मेरे लिए यह दिन की शुरुआत में होता है , और ऐसा लगता है कि कई अन्य लोगों के लिए भी ऐसा ही होता होगा । हमारा मन कम व्यस्त होता है और अन्य चीजों से कम भरा होता है इसलिए हम परमेश्वर को बोलते हुए सुन सकते हैं जैसे वह हमें उस हिस्से से सिखाता है जिसका हम अध्ययन कर रहे होते हैं। सुनिश्चित करें कि कोई रुकावट ना आए , और जल्दबाजी से बचने के लिए अपने आप को पर्याप्त समय दें। अधिकांश अच्छे उपदेशों को तैयार होने में कम से कम 10 से 15 घंटे लगते हैं। एक हिस्सा जिसे आप अच्छी तरह से जानते हैं, उसमें कम समय लग सकता है, लेकिन यदि यह एक कठिन, अपरिचित (बहुत जयादा ना जाना-पहचाना) हिस्सा है, तो अपने आप को अधिक समय दें। याद रखें, परमेश्वर के वचन को सीखना और उसे दूसरों के साथ बाँटने की तैयारी करना एक आत्मिक लड़ाई है। शरीर और शैतान किसी भी तरह से विरोध और हस्तक्षेप कर सकते हैं, आपको इसका भी धयान रखना होगा।

ज- यह जानना कि संदेश कब समाप्त हुआ है एक समय आता है जब एक उपदेश पूरा हो जाता है। लगातार विवरण को सुधारना, इसके बारे में आश्चर्य करना, एक या दो शब्द बदलना, समय बर्बाद करना है। आपके पास अपने समय में करने के लिए बहुत सी चीजें हैं, जैसे अन्य उपदेशों पर काम करना।

कब आपका प्रवचन समाप्त होगा,आपको कैसे पता चलेगा ? यह एक और कौशल है जिसे आप नियमित रूप से प्रचार करते करते विकसित करेंगे! आपको एक अच्छे उपदेश और एक आदर्श उपदेश के बीच अंतर जानने की जरूरत है। बहुत कम उपदेश परिपूर्ण होने के करीब आते हैं, और बहुत से असाधारण नहीं होते। एक अच्छे संदेश का लक्ष्य रखें जो परमेश्वर के लोगों को जब वे सुनते है, और सुन कर जाने के बाद उन्हें खिलाएंगे और प्रोत्साहित करेंगे: बाकी सब परमेश्वर सम्भालेगा। प्रार्थना करें: परमेश्वर से पूछें और उस पर भरोसा करें कि आपको वो दिखाए कि क्या करना चाहिए यदि कुछ करने को है तो, और जब यह हो जाए तो आपको आश्वस्त करे। इस बिंदु पर जल्दी आना उपदेश को अपने मन और हृदय में बैठने के लिए समय देता है और परमेश्वर को तुम्हे आवश्यक समायोजन दिखाने की अनुमति देता है ।

झ- उपदेश कब तक होना चाहिए? आपका उपदेश हमेशा लोगों के ध्यान की अवधि से थोड़ा छोटा होना चाहिए। उनके सुनने के समाप्त होने से पहले आपको बोलना समाप्त कर देना चाहिए। उनके ध्यान केंद्रित करने में सक्षम ना होने की स्थिति में अधिक बात करने से जो उन्होंने पहले सुना था वो भी उनसे दूर हो जाता है। जैसे भोजन को अधिक पकाने, पूरा भोजन बर्बाद हो सकता है। एक बार स्वयं पौलुस के साथ भी ऐसा ही हुआ था (प्रेरितों के काम 20:7-9)। उसके पास उन्हें बताने के लिए बहुत कुछ था ,यदि वह परमेश्वर की अगुवाई का अनुसरण कर रहा था तो मैं यह नहीं कह सकता कि वह गलत था , लेकिन यह उसके लिए लगभग विनाशकारी था जो एक नौजवान पौलूस की बात सुन्ते सुनते सो गया था।

मुख्य विचार पर टिके रहकर और विषय से हटकर बहुत लंबा बोलने से बचें। आपको एक उपदेश में सब कुछ कहने की जरूरत नहीं है, अगले उपदेश के लिए कुछ बचा कर रखें। हम भोजन में केवल इतना ही भोजन कर सकते हैं, और लोग एक समय में केवल इतना ही आध्यात्मिक पोषण ले सकते हैं। अपने प्रचार को ताज़ा और रोमांचक बनाए रखने के लिए, उन लोगों को दें जो अधिक जानना चाहते हैं अगली बार आने की प्रतीक्षा करने के लिए छोड़ दे। अपने दर्शकों को पढ़ना सीखें; जिस तरह से वे बैठते हैं या आँख से संपर्क रखते हैं, उनकी सतर्कता या व्याकुलता उनकी रुचि के स्तर का सुराग हो सकती है। जब वे भरे हुए हों तो उनमें और सच्चाई थोपने की कोशिश करने से काम नहीं चलेगा; यह उन अच्छी बातों को बिगाड़ देगा जो उन्होंने पहले सुनी और प्राप्त की थी।

मेरा अनुमान है कि मैंने अपनी सेवकाई में 10,000 से अधिक संदेशों का प्रचार या शिक्षाण कीया है। मैंने पाया है कि जो लोग मेरी बात सुनते हैं वे 30 मिनट के लिए ध्यान केंद्रित कर सकते हैं और, अगर मेरे पास एक अच्छा संदेश है जो अच्छी तरह से तैयार है, तो मैं 45 मिनट तक जा सकता हूं। जब मैं एक घंटे के लिए बात करता हूं, हालांकि, मैं इसे कितना भी अच्छा बनाऊं, शायद ही कभी मेरे पास अंत में सभी लोगों का ध्यान होता होगा । अगर मेरे पास उपयोग करने के लिए अच्छे दृश्य हैं, यहां तक कि उन्हें एक मिनट के लिए खड़े होने और खिंचाव करने दें, तो मैं अधिक समय तक जा सकता हूं। लेकिन लक्ष्य के लिए 45 मिनट एक अच्छा लक्ष्य लगता है। देखें कि आपके लोग कैसे प्रतिक्रिया देते हैं, फिर उसके अनुसार समय को समायोजित करें।

ञ- अपने उपदेश लिखें एक उपदेश लिखने में अधिक समय लगता है, लेकिन यह, अच्छी तरह से व्यतीत किया, समय हो सकता है। यह आपको अपने विचारों को स्पष्ट करने और सही शब्द चुनने, विषय पर बने रहने और विचारों को विचलित किए बिना एक स्पष्ट संदेश विकसित करने और संदेश की लंबाई को नियंत्रित करने में मदद करता है। आपको प्रत्येक उपदेश को लिखने की आवश्यकता नहीं है, हालांकि

कुछ प्रचारक ऐसा करते हैं। यह अभ्यास तब बहुत मददगार होता है जब आप प्रचार करने के लिए नए होते हैं ,और कई बार आपके पास साझा करने के लिए विशेष रूप से कठिन या महत्वपूर्ण संदेश हो सकता है।

एक उपदेश लिखना अच्छा है, लेकिन इसे अपने लोगों के लिए केवल इसे पढ़ना सही नहीं है। आंखों के संपर्क और व्यक्तिगत भागीदारी के बिना, वे जल्द ही देखना और सुनना बंद कर देंगे। बोलने के लिए रूपरेखा का प्रयोग करें, अपनी लिखत का नहीं।

यदि आप अपना पूरा उपदेश नहीं लिखते हैं, तो भी अपना परिचय, संक्रमण और निष्कर्ष लिखना बहुत महत्वपूर्ण है। मैं हमेशा यह सुनिश्चित करता हूं कि मुझे ठीक-ठीक पता है कि मैं क्या कहने जा रहा हूं और मैं ये कैसे कहने जा रहा हूं क्योंकि हर शब्द लोगों का ध्यान आकर्षित करने और बनाए रखने में मायने रखता है। जब मुझे किसी से ड्राइविंग निर्देश मिलते हैं तो मैं हमेशा यह सुनिश्चित करता हूं कि मुझे पता है कि शुरुआती जगह कहां है (संदेश का परिचय), कब मोड़ लेना है और वास्तव में किस नई दिशा में जाना है (एक उपदेश में मुख्य बिंदुओं के बीच संक्रमण) और कैसे करना है जानिए मैं अपनी मंजिल (निष्कर्ष) पर पहुंच गया हूं। मैं अब भी शब्दों के लिए इन शब्दों की योजना बनाता हूं, भले ही मैं उन्हें हमेशा नहीं लिखता, क्योंकि वे एक संदेश के बहुत महत्वपूर्ण भाग हैं।

ट- अपना सर्वश्रेष्ठ करें लेकिन पूर्णता की उम्मीद ना करें अमेरिकी बेसबॉल में कुछ बल्लेबाज हर बार जब वे बल्लेबाजी करते हैं तो होम रन (विशेष दौड़ स्कोर पाने के लिए) के लिए स्टेडियम से बाहर गेंद को मारने की कोशिश करते हैं। जब वे ऐसा करते हैं तो यह बहुत रोमांचक होता है, लेकिन शायद ही कभी ऐसा होता है, और अक्सर वे गेंद को बले से हिट करते हैं और और बले पर भी नहीं पहुंचते हैं। उचतम बलेबाज़ होम रन हिट करने की कोशिश नहीं करते हैं, वे सिर्फ गेंद से संपर्क बनाने की कोशिश करते हैं और हर बार एक अच्छी हिट प्राप्त करते हैं। वे इस तरह से अधिक बलेबाज़ी पर समाप्त करते हैं और अपनी टीम के लिए बहुत अच्छा काम करते हैं। उपदेश की तैयारी में भी यही सच है। यह बहुत अच्छा है जब हमारे पास एक विशेष उपदेश होता है जो बहुत अच्छी तरह से चलता है और लोगों पर जबरदस्त प्रभाव डालता है, लेकिन ऐसा अक्सर नहीं होता है। हर बार जब हम प्रचार करते हैं, ऐसा करने की कोशिश करने के नतीजे में निराशा और मायूसी होगी। लेकिन अगर हम परमेश्वर की सच्चाई पर आधारित एक अच्छे, ठोस संदेश के लिए प्रयास करते हैं, जो हमारे दिलों से बात करता है और हम अपने श्रोताओं के लिए व्यक्त करना चाहते हैं, तो हम अपने लोगों को खिलाने का एक अच्छा, स्थिर काम कर रहे होते हैं । परमेश्वर यही चाहता है। पतरस के पास केवल एक पिन्तेकुस्त का उपदेश था; अधिकांश अन्य नियमित, ठोस संदेश थे जिन्हें परमेश्वर विभिन्न तरीकों से उपयोग करता था।

संदेश तैयार करने में हमें सबसे पहले उस हिस्से पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जिसे हम व्यक्त करेंगे। लेकिन हमारा ध्यान केवल हिस्से पर नहीं हो सकता। यह हमारे दर्शकों पर भी होना चाहिए, जिन लोगों से हम बात कर रहे हैं। भोजन अच्छी तरह से तैयार होना चाहिए, लेकिन यह उस समय उनके लिए सही पोषण होना चाहिए।

<u>ख . लोगों पर ध्यान केंद्रित करके</u>

<u>1. यीशु, पतरस और पौलुस ने लोगों की ज़रूरतों के बारे में प्रचार किया</u>

क- यीशु का प्रचार लोगों की ज़रूरतों पर केंद्रित था यीशु ने अपने चेलों और उन लोगों से बात की जो उसके पास कई बार आए थे। सभी सुसमाचारों में छोटे उदाहरण दिए गए हैं, लेकिन हमारे लिए केवल दो पूर्ण उपदेश दर्ज किए गए हैं: पर्वत पर उपदेश (मत्ती 5-7) सभी के लिए और जैतून पर्वत पर

उपदेश (मत्ती 24-25) उसके शिष्यों के लिए। प्रत्येक संदेश बहुत अलग था, लेकिन प्रत्येक उसके श्रोताओं की जरूरतों की ओर संकेत करता था। पहले ने सभी को बताया कि वह किसके लिए खड़ा था और वह क्या भेंट कर रहा था जब उसने अपना राज्य उन्हें दिया। दूसरा शिष्यों के प्रशन के उत्तर में था कि भविष्य में क्या होने वाला है। हर बार जब यीशु ने जो कहा वह उसके सुनने वाले लोगों की जरूरतों द्वारा निर्धारित किया गया होता था। जब यीशु ने नीकुदेमुस से उसकी मुक्ति की आवश्यकता के बारे में बात की (यूहन्ना 3)। उसने मूल रूप से उसे वही बात बताई, लेकिन तब जब उसने एक सामरी महिला से कुएं पर बात की तो बिलकुल अलग ढंग था (यूहन्ना 4) उसने उनको लगभग एक ही बात कही थी, लेकिन एक कानूनवादी यहूदी शासक और एक अस्वीकृत, लज्जित गैर-यहूदी महिला में पूरी तरह से अलग तरीके से संपर्क करने की आवश्यकता थी।

ख- पतरस का प्रचार लोगों की ज़रूरतों पर केंद्रित था पतरस के कई संदेश हमारे लिए बाइबल में दर्ज हैं। उसका पहला पिन्तेकुस्त के दिन था (प्रेरितों के काम 2:14-39)। उसने मंदिर के भिखारी से बात की और भीड़ ने सुनी (प्रेरितों के काम 3:11 - 4:4)। उसने अपनी पहली गिरफ्तारी के बाद (प्रेरितों के काम 4:8-12), अपनी दूसरी गिरफ्तारी के बाद (प्रेरितों के काम 5:29-32) और कुरनेलियुस के घर पर (प्रेरितों के काम 10:34-43) बात की। पहला संदेश यहूदियों के लिए था, लेकिन आखिरी अन्यजातियों के लिए था। कुरनेलियुस को उसने पुराने नियम के किसी भी आयत का हवाला नहीं दिया, जैसा उसने यहूदी श्रोताओं के लिए पिन्तेकुस्त के दिन अक्सर किया था। इन संदेशों में से प्रत्येक की योजना बनाई गई थी और सीधे उन लोगों की जरूरतों के लिए प्रचार किया गया था जिनसे वह बात कर रहा था। वह सुनने वाले लोगों को जानता था और अपने शब्दों को उनकी तरफ निर्देशित करता था।

ग- पौलुस का प्रचार लोगों की ज़रूरतों पर केंद्रित था प्रेरितों के काम में लिखा है कि, पौलुस ने 12 बार प्रचार किया: दमिश्क (9:20), सलामिस (13:5), पिसिदिया में अन्ताकिया (13:41-44 और 13:44-48), इकोनियम (14:1), थिस्सलुनीकिआ (17: 1-4), बेरिया (17:10-12), एथेंस (17:17), कुरिन्थ (18:4), इफिसुस (18:19 और 19:8) और नजरबंदी में (28:17-29)। निश्चय ही उसने और भी कई बार प्रचार किया। उसने पत्र लिखे, जो हमारी बाइबल में हैं, उन्हें उपदेश के रूप में माना जा सकता है, क्योंकि वे निश्चित रूप से उसके पाठकों को सिखाने के लिए लिखे गए थे।

जब उसने अन्यजातियों से बात की (लुस्त्रा, प्रेरितों के काम 14:8-20; एथेंस, प्रेरितों के काम 17:22-34) तो संदेश उस समय से भिन्न था जो उसने उन व्यक्तिगत अन्यजातियों से, जिनका उस पर अधिकार था, बात करते दिया था (फिलिप्पियों के दरोगा , प्रेरितों के काम 16:25- 34; फेलिक्स, प्रेरितों के काम 24:10-25)। अन्य समयों में उसने अपनी व्यक्तिगत आत्मकथा सुनाई जब उसके श्रोताओं को यही चाहिए था (यरूशलेम भीड़, प्रेरितों के काम 22:1-29एल; राजा अग्रिप्पा, प्रेरितों के काम 26:1-32)।

पौलुस का सबसे पूर्ण रूप से दर्ज किया गया उपदेश , दूसरों की किस तरह होना चाहिए एक उदाहरण के तौर पर पिसिदिया के अन्ताकिया की आराधनालय में था (प्रेरितों के काम 13:16-41)। लूका ने प्रेरितों के काम में पौलुस के अन्य उपदेशों को दर्ज नहीं किया क्योंकि यह उन सभी में से संरचना और सामग्री में अनूठा था। फिर भी प्रत्येक संदेश सुनने वालों की विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयार किया गया था। पिसिदिया के अन्ताकिया में (प्रेरितों के काम 13:16-41) उसने यहूदियों से यहूदी इतिहास के बारे में बात करना शुरू किया, जिसे वे जानते और मानते थे (प्रेरितों 13:16-23)। लेकिन एथेंस में (प्रेरितों के काम 17:22-34), जब उन अन्यजातियों से बात करता था, जो यहूदी इतिहास की परवाह नहीं करते थे, तो उसकी प्रारंभिक टिप्पणी परमेश्वर के लिए आत्मा की खोज के इतिहास के बारे होती थी (प्रेरितों 17:22-34)। लुस्त्रा में उसने सूर्य, हवा, बारिश और बढ़ती चीजों में परमेश्वर की निरंतर गतिविधि

पर ध्यान केंद्रित करने के साथ शुरुआत की (प्रेरितों के काम 14:15-17)। प्रत्येक को उसके दर्शकों की जरूरतों के अनुरूप बनाया गया था।

घ- लोगों की जरूरतों पर केंद्रित औरों का प्रचार नए नियम में भी अन्य लोगों के उपदेशों के उदाहरण हैं। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 7 में, स्तिफनुस ने धार्मिक शासकों को यह दिखाने की कोशिश करते हुए प्रचार किया कि जिस यीशु को उन्होंने अस्वीकार किया वह मसीहा था। स्पष्ट रूप से उसके शब्द श्रोताओं की ज़रूरतों से बनते हैं और उन पर लागू होते हैं। इसी तरह, जब अपुल्लोस अखया में यहूदियों से बात करता है (प्रेरितों के काम 18:6-28) तो वह अपनी टिप्पणियों को उनकी जरूरतों के लिए निर्देशित करता है।

इब्रानियों की पुस्तक का लेखक अपने उपदेशों में लोगों को उनकी जरूरतों से संबोधित करता है। वह उन्हें यीशु से फिरने और यहूदी धर्म में वापस जाने के खतरे के बारे में सुचेत करने की कोशिश करता है (इब्रानियों 4:14-16; 10:19-21)। स्पष्ट रूप से पुराने नियम के भविष्यवक्ता लोगों की जरूरतों के बारे में भी बात करते थे , विशेष रूप से पाप और अधर्मियों के लिए पश्चाताप की आवश्यकता, साथ ही धर्मी लोगों के लिए आशा और आराम के बारे में।

ङ- हमारे लिए सबक बाइबल विभिन्न उपदेशों को दर्ज करती है, कुछ अविश्वासी यहूदियों के लिए (प्रेरितों के काम 2, 3, 13) या अविश्वासी अन्यजातियों (प्रेरितों 17) के साथ-साथ विश्वासियों के लिए (प्रेरितों के काम 20)। वे पतरस, पौलूस या अन्य के द्वारा हैं, लेकिन सभी मामलों में उन्होंने अपना संदेश उन लोगों की जरूरतों पर केंद्रित किया जिनसे वे बात कर रहे थे। हमें ऐसा ही करना चाहिए। जब हम प्रचार करते हैं तो हमें उस पाठ को समझना चाहिए जिसका हम उपयोग कर रहे हैं, लेकिन उन लोगों की जरूरतों, दुखों, निराशाओं, आशंकाओं, शंकाओं और संघर्षों को भी समझना चाहिए जिनसे हम बात कर रहे हैं।

<u>2. हमें लोगों की ज़रूरतों के लिए प्रचार करना चाहिए</u>

क- लोगों की जरूरतों पर ध्यान केंद्रित करें हम प्रचार करते हैं क्योंकि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसकी सच्चाई दूसरों को बताना चाहते हैं। हमारे पास साझा करने और ऐसा करने में प्रसन्नता पाने के लिए अब तक की सबसे अच्छी खबर है। लेकिन हम प्रचार भी करते हैं क्योंकि हम परमेश्वर के लोगों से प्यार करते हैं। हम चाहते हैं कि वे इस अद्भुत प्रभु और उद्धारकर्ता को बेहतर ढंग से जानें, जिनकी हम सेवा करते हैं। जैसे एक माँ के पास अपने बच्चों को प्रशिक्षित करने, उनकी रक्षा करने और उन्हें बढ़ने में मदद करने के लिए एक गहरी आंतरिक मजबूरी होती है, उसी तरह एक पासबान भी लोगों के लिए महसूस करता है, जिनको परमेश्वर ने उसकी चरवाही में दिया है। डांटना, ताड़ना, आलोचना करना और दोषों को इंगित करना भेड़ या बच्चों को स्वस्थ तरीके से परिपक्व होने में मदद नहीं करता है, और यह उन लोगों की मदद नहीं करेगा जिनकी आप सेवा करते हैं। प्रेम में सच बोलना (इफिसियों 4:15), जैसे परमेश्वर हमें सिखाता है, हमारा लक्ष्य है।

बाइबल का प्रचार करना या सिखाना बाइबल की कक्षा या सैमिनारी के लिए एक धार्मिक व्याख्यान लिखने जैसा नहीं है। वहाँ उद्देश्य उनके दिमाग में बाइबल की सामग्री को पहुँचाना है ताकि वे बाइबल के बारे में अधिक तथ्य और सच्चाई जान सकें। हमारे लिए जो प्रचार करते हैं या सिखाते हैं, हालांकि, यह सिर्फ पहला भाग है। फिर हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि लोग समझें कि उस सत्य को अपने जीवन में कैसे लागू किया जाए और ऐसा करने के लिए प्रेरित हों। हम जीवन को बदलने का उपदेश देते हैं, ना कि केवल सत्य का संचार करने का। हमें उन्हें बताना चाहिए कि उन्हें क्या करना है और क्यों और कैसे

करना है। फिर हम उन्हें इसे स्वयं करने के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित करते हैं। इसी तरीके से यीशु और अन्य लोग सिखाया करते थे ।

परमेश्वर हमारे लोगों की बहुत परवाह करता है, इसलिए वह उनके लिए क्रूस पर मरने के लिए पृथ्वी पर आया। हमें उनकी उतनी ही परवाह करनी चाहिए जितनी उसने की। उपदेश लोगों को प्रभावित करने या उन्हें यह दिखाने के लिए नहीं हैं कि वे कहाँ असफल हुए हैं, बल्कि उन्हें यीशु के समान बनने में मदद करने के लिए हैं (2 तीमुथियुस 2:1-2; मत्ती 28:19-20)। .

ख- लोगों की जरूरतों को कैसे जानें हम अपने बाइबल हिस्से को इसका अध्ययन करके, ध्यान से और बारीकी से देखते हुए समझते हैं ताकि हम इसके बारे में जो कुछ भी कर सकते हैं उस पर ध्यान दें। हम अपने लोगों की जरूरतों को समझने के लिए ऐसा ही करते हैं। हम उनके साथ समय बिताते हैं, हम उनकी बात सुनते हैं, हम चीजों को नोटिस करते हैं कि वे कैसे कर रहे हैं और उनके जीवन में क्या हो रहा है। हम उनसे सवाल पूछते हैं। हम परमेश्वर की बुद्धि और अंतर्दृष्टि के लिए प्रार्थना करते हैं (याकूब 1:5)। अपने लोगों की सुनें और परमेश्वर के पवित्र आत्मा की सुनें। जैसे माता-पिता अपने प्रत्येक बच्चे की ताकत और कमजोरियों को देखते है और जानते है, उसी तरह एक पास्टर को अपनी देखरेख में लोगों को जानना चाहिए।

ग. हिस्से को और लोगों की आवश्यकताओं को एक साथ लाना

1. प्रत्येक हिस्से का एक मुख्य विचार होता है

प्रत्येक उपदेश, पाठ या संदेश में एक मुख्य विचार होना चाहिए जो अंत तक स्पष्ट रूप से विकसित हो। जो कुछ भी कहा जाता है, वह किसी न किसी तरह से सीधे उस विचार से संबंधित होना चाहिए। यह उपदेश का सारांश है, साथ ही साथ वह लक्ष्य है जिसको यह पूरा कर रहा है। वक्ता को पता होना चाहिए कि वह किस लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है नहीं तो वह इसे कभी प्राप्त नहीं कर पाएगा। यही वह सच्च है जो वह अपने संदेश में पहुचाना चाहता हैं। शुरू करने से पहले वक्ता के दिमाग में यह स्पष्ट होना चाहिए नहीं तो श्रोताओं के दिमाग में यह कभी भी स्पष्ट नहीं होगा कि वह कब किया गया है! यदि आपके पास इस बात का सटीक अंदाजा नहीं है कि आप क्या हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं, तो आप इसे पूरा नहीं कर पाएंगे, और आप अपने श्रोताओं को परमेश्वर के वचन से ईमानदारी के साथ पोषण आहार नहीं दे रहे होगें ।

हम सभी ने ऐसे संदेश सुने हैं जो कई विषयों में फ़ैल जाते है और उनको समेटते हैं। शायद वक्ता ने यीशु पर भरोसा करने के बारे में बात करना शुरू किया, फिर दशमांश के बारे में बात की, साक्षी के महत्व को कवर किया, यहां तक कि प्रार्थना करने के तरीके के बारे में कुछ टिप्पणियां भी कीं और हर रविवार को चर्च आने के महत्व के बारे में बोलना समाप्त किया। ऐसे संदेश उलझन में डालने वाले होते हैं और हम पूरी तरह से निश्चित नहीं हो पाते, कि वह वास्तव में कहना क्या चाहता था । उनमें से किसी एक पर ध्यान केंद्रित करने के लिए बहुत सी चीजें हैं, लेकिन आने वाले सप्ताह में हमें वास्तव में उपयोग के लिए, कुछ देने के लिए, पर्याप्त नहीं होती है। यह एक बन्दूक की शूटिंग की तरह है, जहाँ बंदूक से कई छर्रे दागे जाते हैं और वे विभिन्न दिशाओं में फैल जाते हैं। एक उपदेश, बजाय इस तरह होने के, एक लक्ष्य पर सीधे दागी गई एक गोली की तरह होना चाहिए।

जब बाइबल के लेखकों ने अपनी पुस्तकें लिखीं, तो उनके मन में प्रत्येक पुस्तक, प्रत्येक अध्याय और प्रत्येक आयत के लिए एक केंद्रीय विचार था। प्रत्येक हिस्से का मुख्य विचार बाइबल के अध्याय या खंड के मुख्य विचार से संबंधित है, और अध्याय या खंड पूरी पुस्तक के मुख्य विचार से संबंधित है। उदाहरण

के लिए, गलातियों की पुस्तक में, पौलुस लोगों को यह दिखाने के लिए लिखता है कि मसीह स्वतंत्रता लाता है, बंधन नहीं। पहले दो अध्यायों में वह बताता है कि कैसे परमेश्वर ने उसे यीशु के माध्यम से स्वतंत्रता दी और उसका उद्देश्य है कि इसे कैसे दूसरों के साथ भी साझा करें , नाकि मसिहीओं को बंधन में लाना। अध्याय तीन और चार में वह दिखाता है कि कैसे कानूनवाद और बंधन स्वतंत्रता लाने में असफल रहे हैं। वह अपने स्वयं के अनुभव को (3:1-5), पुराने नियम को (3:6-14), परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को (3:15-22) और अन्य प्रमाणों को अपनी बात कहने के लिए संदर्भित करता है। अंतिम दो अध्याय, पाँच और छह, यह दिखाते हैं कि हमारे जीवन में स्वतंत्रता के प्रभाव और वास्तविक स्वतंत्रता क्या है। मेरी पुस्तक, "बाइबल अवलोकन", बाइबल में प्रत्येक पुस्तक का मुख्य विचार दिखाती है और यह कि शेष पुस्तकें इससे कैसे संबंधित हैं। हमारे उपदेशों और पाठों के साथ भी ऐसा ही होना चाहिए।

इससे पहले कि आप उपदेश दें या सिखाएं, आपको एक साधारण वाक्य में मुख्य विचार देने में सक्षम होना चाहिए कि आप क्या व्यक्त करना चाहते हैं। जब आप ऐसा कर लेंगे, तो आपको पता चलेगा कि आप सफल हुए हैं जब आप अपने श्रोताओं से पूछते हैं कि उन्होंने क्या सीखा और वे आपको वही सत्य, अपने शब्दों में बताते हैं।

जब कोई चित्र बनाता है तो यह इतना स्पष्ट होना चाहिए ताकि उसे देखने वाला हर व्यक्ति बता सके कि कलाकार क्या संदेश दे रहा है। यदि यह अस्पष्ट है तो लोग नहीं बता सकते , यदि लोग इसके बारे में अलग-अलग विचारों के साथ आते हैं, तो इसका मतलब लोगों को स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं कीया गया था । पादरी के रूप में हम शब्दों के साथ चित्र बनाते हैं, और उन शब्दों को हमारा संदेश स्पष्ट रूप से व्यक्त करना चाहिए ताकि हर कोई एक ही बात को समझे और जान सके कि हम क्या कह रहे हैं।

जब पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन बात की, तो उसके संदेश का मुख्य विचार यीशु था (प्रेरितों के काम 2)। मसीह सबसे आगे था और सब उसी पर केंद्रित था। उसने पुराने नियम का हवाला दिया क्योंकि श्रोताओं को पता था कि यह परमेश्वर के द्वारा लिखा गया था और उनके पास अधिकार था। उसने योएल 2:28 (प्रेरितों के काम 2:17), दाऊद को भजन संहिता 16 (प्रेरितों 2:25-28) और भजन संहिता 110 (प्रेरितों 2:34) को अपने मुख्य विचार का समर्थन करने के लिए उनका हवाला दिया कि यीशु ही परमेश्वर है जो मसीहा बनने के लिए पृथ्वी पर आया। पतरस का ध्यान डाँटने या आलोचना करने पर नहीं था, बल्कि सुसमाचार देने के लिए था, क्षमा की आशा जो सभी के लिए उपलब्ध है (प्रेरितों के काम 2:21)।

कुछ वक्ताओं के अपने विचार होते हैं और वे इसका समर्थन करने के लिए एक शास्त्र खोजने की कोशिश करते हैं। वह हिस्सा का पढ़ा जाना होता है। इसके बजाय, हमें हिस्से से शुरू करना चाहिए और सीखना चाहिए कि यह क्या कह रहा है। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम जो कुछ भी कहते हैं वह पवित्रशास्त्र से आता है और कुछ भी हमारा अपना आविष्कार नहीं है। यदि बाइबल इसे स्पष्ट रूप से नहीं कहती है, तो हमें यह भी नहीं कहना चाहिए। अपने स्वयं के विचार का समर्थन करने के लिए कभी भी परमेश्वर के वचन का उपयोग ना करें। हम परमेश्वर के लिए बोलते है; हम उसके उपकरण हैं, एक माध्यम जिसके द्वारा वह दूसरों के साथ संचार करता है। हमें अपनी राय को और खुद को रास्ते से दूर रखना चाहिए जब तक कि उन्हें स्पष्ट रूप से बाइबल में नहीं सिखाया जाता है। तब वे, हमारे विचार नहीं बल्कि परमेश्वर की सच्चाई हैं।

2. मुख्य विचार को दर्शकों की आवश्यकता को पूरा करना चाहिए

किसी लक्ष्य पर तीर चलाने वाले के बारे में सोचें और आप समझ जाएंगे कि एक वक्ता को उसके द्वारा बोले जाने वाले शब्दों का क्या करना चाहिए। तीर आपके द्वारा उपयोग किए जा रहे हिस्से का मुख्य

विचार है। यह आपके संदेश का मुख्य विचार भी बन जाता है। धनुष से लक्ष्य तक जाने के लिए एक तीर को सीधी रेखा में, बिल्कुल सीधा होना चाहिए। आपका मुख्य विचार सटीक, स्पष्ट और उचित होना चाहिए।

आपका तीर जिस लक्ष्य को लक्षित कर रहा है, वह उन लोगों की आवश्यकता है जिन्हें आप संदेश में संबोधित कर रहे हैं। अंतिम संस्कार में यह आराम और आश्वासन हो सकता है, इसलिए आपका संदेश

अनन्त जीवन की उस आशा के बारे में होगा जो यीशु में हमारे पास है । यदि लोग उत्पीड़न का सामना कर रहे हैं, तो ऐसे कई हिस्से और संदेश हैं जो लागू हो सकते हैं: हर हाल में यीशु के प्रति विश्वासयोग्यता ; सब कुछ के लिए परमेश्वर की संप्रभुता और उद्देश्य; कठिन समय के माध्यम से दृढ़ रहने का अविनाशी पुरस्कार; परमेश्वर सभी चीजों का उपयोग भलाई करने के लिए करता है (रोमियों 8:28)। उत्पीड़न का सामना कर रहे लोगों की जरूरतों को पूरा करने के ये सभी अलग-अलग तरीके हैं। विभिन्न संदेश और मुख्य विचार एक ही आवश्यकता के बारे में बात कर सकते हैं। हालांकि, जो भी इस्तेमाल किया जाता है, उसे जरूरत पर केन्द्रित होना चाहिए।

एक तीर को लक्ष्य में टिके रहने के लिए उसे घर से टकराने के लिए एक नुकीले बिंदु की आवश्यकता होती है। जब हम बोलते हैं तो हमारे संदेश का स्पष्ट, सटीक परिचय होना महत्वपूर्ण है ताकि हमारा संदेश घर तक पहुंचे और श्रोताओं के दिलों में बस जाए। एक तीर को एक सीधी रेखा में चलते रहने के लिए उसके पीछे पंख होने चाहिए, जैसे हमारे द्वारा चुने हुए उदाहरण और चित्र , हमारे संदेश को लाइन में रखते हैं।

निःसंदेह, हम जो बोलते हैं, वे धनुष हैं, जो तीर चलाते हैं। हम विभिन्न तरीकों का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन मुख्य है शब्द। हम चित्रों, वस्तुओं, चर्चा, बातचीत या किसी अन्य तरीके से उपयोग कर सकते हैं। जब मैं बोलता हूं तो कभी-कभी मैं परमेश्वर की सच्चाई को बताने के लिए जादुई तरकीबों का इस्तेमाल करता हूं।

3. मुख्य विचार की खोज

जैसा कि आप अपना बाइबल अध्ययन करते हैं, आप हिस्से के मुख्य विचार की खोज करेंगे (देखें जेरी श्यमोर द्वारा लिखी पुस्तक "बाइबल का अध्ययन")। जब आप अपने लोगों का अध्ययन करते हैं और उनकी जरूरतों को समझते हैं, तो आप देखेंगे कि कैसे हिस्से का मुख्य विचार उनके जीवन में उन जरूरतों को पूरा कर सकता है। वह शुरुआत है, हर संदेश की बुनियाद है।

उदाहरण के लिए, मान लीजिए आप भजन 103:1-14 का अध्ययन कर रहे हैं, जो मेरे पसंदीदा बाइबल हिस्सों में से एक है। आप निर्धारित करते हैं कि यह मुख्य विचार है कि परमेश्वर दयालु हैं और हमारे पापों को हमारे खिलाफ रखने के बजाय उन्हें क्षमा करता हैं। अब आप अपने लोगों और उनकी जरूरतों के बारे में सोचें। शायद कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें अतीत में किए गए किसी काम के लिए परमेश्वर की क्षमा को स्वीकार करने में कठिनाई हो रही है; यह हिस्सा उन पर लागू होगा। या हो सकता है कि आपके लोग

एक दूसरे के प्रति क्षमा भावना ना रखतें हों। आप इस हिस्से का उपयोग दूसरों की क्षमा के महत्व को दिखाने के लिए कर सकते हैं क्योंकि परमेश्वर हमें क्षमा करता हैं। तब यह हो सकता है कि आपके लोग जानते हों कि उन्हें परमेश्वर द्वारा क्षमा किया गया है, लेकिन उन्हें स्वयं को क्षमा करने में कठिनाई हो रही है। यह सत्य उनकी मदद कर सकते हैं -यह हिस्सा मुझसे इस तरह बात करता है। हो सकता है कि कुछ लोग कानूनवाद की ओर रुख करते हैं और महसूस करते हैं कि उन्हें परमेशवर की क्षमा कमाने के लिए कुछ करने की आवश्यकता है। यह हिस्सा उस आवश्यकता को भी पूरा कर सकता है।

आपके लोगों की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक हिस्से का उपयोग किया जा सकता है। आप जिस हिस्से का प्रचार कर रहे हैं उसमें मुख्य विचार खोजें, फिर परमेश्वर से आपको यह दिखाने के लिए कहें कि आपके लोगों के जीवन में इसकी क्या आवश्यकता है। अक्सर परमेश्वर आपको यह दिखाएगा कि आपके अपने जीवन में सबसे पहले इस से आपकी कौन सी आवश्यकता की पूरी होती है!

4. क्या जानना है, क्या करना है?

याद रखें कि हमने कहा था कि हम ना केवल श्रोता के दिमाग में सच्चाई पहुंचाने के लिए बोलते हैं, बल्कि उनके जीवन को प्रभावित करने के लिए भी बोलते हैं। इन दोनों क्षेत्रों को मुख्य विचार में शामिल किया जाना चाहिए। श्रोताओं को परमेश्वर की सच्चाई को जानना चाहिए अन्यथा वे इसे लागू नहीं कर पाएंगे (रोमियों 12:1-2)। लेकिन उन्हें भी इसके साथ कुछ करने में सक्षम होना चाहिए, नहीं तो यह उनके जीवन को नहीं बदलेगा। इसलिए प्रत्येक मुख्य विचार कथन को यह अवश्य दिखाना चाहिए कि आप अपने श्रोताओं को क्या जानने और क्या करने की चाहत रखते है जब आप बात पूरी कर लेते है । जो लोग परमेश्वर के वचन को सुनते हैं वे दोनों को समझना चाहते हैं। यदि आप केवल पाठशाला में बाइबल की कक्षा की तरह तथ्यों को पढ़ाते हैं, हालाँकि यह सब बहुत ही रोचक और महत्वपूर्ण है, तो वे यह सोचकर छोड़ देंगे कि उस नई जानकारी को जानने से क्या लाभ है। अक्सर मैं एक उपदेश सुनता हूँ जो बाइबल के एक आयत को सिखाने का अच्छा काम करता है और मैं खुद से पूछता हूँ, "तो क्या?"। तो बाइबल यह कहती है, तो क्या? इससे मुझे क्या फर्क पड़ता है? ऐसा कुछ क्यों है जो मुझे पता होना चाहिए? दूसरी ओर, उन्हें केवल वही बताएं जो उन्हें करना चाहिए, उन्हें बाइबल की बातों की कोई समझ नहीं होगी।

आइए इसे भजन 103:1-14 पर लागू करें। आप अपने श्रोताओं को चाहते है कि वो यह जाने कि परमेश्वर दयालु हैं और हमारे पापों को हमारे खिलाफ रखने के बजाय क्षमा कर देता हैं। आप कया चाहते है की वह उस ज्ञान के साथ करें, यह उनकी जरूरतों के आधार पर अलग है। यदि उनहे स्वयं को क्षमा करना कठिन लगता है , तो आप उनसे जो चाहते हैं कि वह करें यह है कि वह आपने पापों के लिए परमेश्वर की क्षमा को स्वीकार करें । यदि वे एक-दूसरे के प्रति क्षमाशील हैं, तो आप जो चाहते है कि वह करें, यह है कि वह दूसरों को क्षमा करें जैसे परमेश्वर ने उन्हें माफ कर दिया है और जैसे परमेशवर ने पहले ही दूसरे व्यक्ति को माफ कर दिया है। यदि वे कानूनवाद के साथ संघर्ष कर रहे हैं और महसूस करते हैं कि उन्हें परमेश्वर की क्षमा के योग्य होने के लिए कुछ करना चाहिए, तो आप जो चाहते है कि वह करें, यह है कि वह परमेश्वर की कृपा और मुक्त क्षमा को स्वीकार करें ।

जैसा कि आप इन उदाहरणों से बता सकते हैं, यह महत्वपूर्ण है आप अपने मुख्य विचार को विशिष्ट बनाए , सामान्य नहीं। "दूसरों को क्षमा करें" एक अच्छा मुख्य विचार नहीं है। "चूंकि परमेशवर ने हमें बिना शर्त माफ कर दिया है, इसलिए हमें दूसरों को भी माफ करना चाहिए जो हमारे खिलाफ पाप करते हैं" बहुत बेहतर है। इसमें वह शामिल है जो उन्हें पता होना चाहिए (कि परमेशवर ने उन्हें बिना शर्त माफ कर दिया है) और उन्हें जो करना चाहिए (दूसरों को क्षमा करें)। यह एक ऐसा सत्य है जिस पर आप ध्यान केंद्रित कर सकते हैं और जिसे वे याद रख सकते हैं और जिसका वह उपयोग कर सकते हैं।

सभी अविश्वासियों के लिए परमेश्वर का मुख्य लक्ष्य यह है कि वो यीशु को अपना उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करे । सभी विश्वासियों के लिए उसका लक्ष्य है कि हम जो कुछ भी सोचते हैं और करते हैं, उसमें हम यीशु के समान बनें। इसलिए प्रत्येक उपदेश को लोगों को यीशु के पास लाने या उसके समान बनने के लिए विकसित होने में योगदान देना चाहिए।

कुछ प्रचारक एक हिस्से और लोगों का अध्ययन करने के बारे में सोचते हैं, फिर एक मुख्य विचार विकसित करते है जो दोनों को एक साथ लाता है, यह बहुत अधिक काम है और वे केवल उपदेश आरंभ करना चाहते हैं इसलिए इस मूल भाग को छोड़ देते है । लेकिन यह एक बड़ी इमारत का निर्माण शुरू करने जैसा है बिना सोचे समझे और यह सुनिश्चित करते हुए कि क्या उसके लिए एक अच्छी, ठोस, स्तरीय बुनियाद है। पुरे उपदेश को इसकी कीमत भुगतनी होगी । इसके बिना शुरू करने से वास्तव में समय अधिक लगेगा और प्रभाव कम होगा। जब आप उपदेश पर काम करते हैं तो आप मुख्य विचार को समायोजित कर सकते हैं या फिर से लिख सकते हैं। यह ठीक है। लेकिन आपको शुरुआती बिंदु के लिए इसकी आवश्यकता है।

आप इस बात पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अपने उपदेश के अंत की प्रतीक्षा नहीं करते हैं कि आप लोगों को क्या जानने और करने की चाहत रखते हैं। आप परिचय में इसे शुरू करते हैं ताकि वे इसे पूरी तरह से समझ सकें और उनके पास इसके बारे में सोचने के लिए पर्याप्त समय हो और कि यह उन पर कैसे लागू होता है। अपना पूरा उपदेश उन्हें यह बताने में खर्च ना करें कि आप उन्हें क्या जानने की चाहत रखतें हैं, फिर अंत में बस कुछ मिनटों का उपयोग करके उन्हें बताएं कि क्या करना है। शुरू से ही दोनों को एक साथ बुनें।

III. संदेश का आयोजन

अब जब आपने हिस्से का और लोगों का अध्ययन कर लिया है और अपने मुख्य विचार को जान गए हैं, तो आप संदेश या पाठ को स्वयं विकसित करने के लिए तैयार हैं। यह इतना आसान लग सकता है कि बस इस पर भाग कर आ जाएँ और जो पहले चला गया उसे छोड़ दें, लेकिन ऐसा मत करो! परमेश्वर के वचन को व्यक्त करने का कोई आसान रास्ता नहीं है। यदि आपने इस बिंदु तक ईमानदारी से काम किया है, तो बाकी सब आसान हो जाएगा और आपके पास एक अच्छा अंतिम उत्पाद होगा। बुनियादी कार्य के बिना, आपको संदेश बनाना अधिक कठिन लगेगा और अंतिम उत्पाद उससे कहीं कम प्रभावी होगा जितना वह हो सकता था।

अब यह सामग्री को पैक करने का समय आ गया है ताकि आप इसे लोगों तक संभव सर्वोत्तम तरीके से पहुंचा सकें। जब एक रसोइया भोजन तैयार करता है, तो भोजन को एक साथ एक कटोरे में नहीं फेंका जाता है, बल्कि आकर्षक ढंग से रखा जाता है ताकि वह भोजन करने वाले को अधिक आकर्षक लगे। पोषण मूल्य किसी भी तरह से समान है, लेकिन आकर्षक व्यवस्था वाला व्यक्ति अधिक रौचिक और आनंदयक होगा। तो चलिए श्रोता के लिए आपकी जानकारी की पैकिंग के बारे में बात करते हैं।

क. उपयोग किये जाने वाली विधि-तरीका

1. भाषण

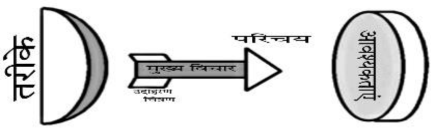

हमें बड़े धैर्य और सावधानीपूर्वक निर्देश के साथ वचन का प्रचार करने की आज्ञा दी गई है (2 तीमुथियुस 4:2)। एज्रा ने स्वयं को यहोवा की व्यवस्था के अध्ययन और इसका पालन करने और उसके नियमों को सिखाने के लिए समर्पित कर दिया (एज्रा 7:6, 10)। उसने यह कैसे किया? उसने परमेश्वर की सच्चाई को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने के लिए किन तरीकों का इस्तेमाल किया?

लक्ष्य के लिए लक्षित तीर हमारे उदाहरण में, हम देखते हैं कि धनुष वह है जो तीर को आगे बढ़ाता है। हमारे श्रोताओं के दिमाग और दिलों में हमारी सामग्री को क्या प्रेरित करता है?

अधिकांश के लिए, यह मौखिक संचार है - बात करना। इसे प्रचार करना या सिखाना भी कहते हैं। यह वह तरीका है जिसका उपयोग यीशु अपने अनुयायियों को सिखाने के लिए करता था । उसने अपने दो मुख्य संदेशों में इनका इस्तेमाल किया: पहाड़ी उपदेश (मत्ती 5-7) और जैतून पहाड़ पर उपदेश (मत्ती 24-25)।

पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन सुसमाचार सुनाने के लिए शब्दों का प्रयोग किया (प्रेरितों के काम 2:14-39), मंदिर में भिखारी के आसपास की भीड़ को, (प्रेरितों के काम 3:11-4:4), धार्मिक शासकों को और आपनी पहली गिरफ्तारी के बाद (प्रेरितों के काम 4:4) । 8-12) और उसकी दूसरी गिरफ्तारी (प्रेरितों के काम 5:29-32) और कुरनेलियुस के घर पर (प्रेरितों के काम 10:34-43)। श्रोता बहुत भिन्न थे, लेकिन परमेश्वर के सत्य को व्यक्त करने के लिए वचनों का उपयोग करने का तरीका हमेशा एक जैसा था।

पौलुस ने अपने संदेशों में ऐसा ही किया (प्रेरितों के काम 13:16-41)। उसने अन्यजातियों से , (प्रेरितों के काम 14:8-20; 17:22-34), यहूदियों से , (प्रेरितों 13:16-41), यरूशलेम में एक भीड़ से , (प्रेरितों 22:1-29), राजा अग्रिप्पा (प्रेरितों 26:1) से बात की। -32), फिलिप्पियन दरोगा से (जेल अधिकारी) (प्रेरितों के काम 16:25-34) और फेलिक्स से , एक महत्वपूर्ण रोमी अधिकारी से ,(प्रेरितों 24:10-25)। मूल रूप पौलूस ने बात की और दर्शकों ने सुनी। भाषण का उपयोग किया जाने वाला मूल तरीका था।

आप सोच सकते हैं कि मौखिक संचार ही सत्य को प्रसारित करने का एकमात्र तरीका है। लेकिन ऐसे और भी तरीके हैं जिनसे हम अपने विचार दूसरों तक पहुंचाते हैं। हम लिखित शब्दों का उपयोग कर सकते हैं (जैसा कि बाइबल में ही लिखा गया है), संगीत, नृत्य, नाटक (नाटक या फिल्में) या कला का काम। इनमें से प्रत्येक एक व्यक्ति के दिल या दिमाग में जो है उसे दूसरों को व्यक्त करता है। बाइबल की सच्चाई को भी प्रसारित करने के लिए सब कुछ उपयोग हो सकता है, और अक्सर होता है। जो लोग उपदेश देते हैं या सिखाते हैं, वे इनमें से किसी का भी उपयोग कर सकते हैं, लेकिन आमतौर पर हम जो मुख्य तरीका इस्तेमाल करते हैं, वह है बात करना।

एक आसान तरीके से बहुत सी सच्चाई को व्यक्त करने के लिए भाषण एक बहुत अच्छा तरीका है। हालाँकि, लोगों के लिए वह सब कुछ याद रखना कठिन है जो वे सुनते हैं। वह यदि समझाई हुई बात

सुनेंगे और उदारण देखेंगे तो तीन गुना ज्यादा याद करेंगे। वह महत्वपूर्ण है! मैंने अभी जो कुछ दूसरे तरीकों का उल्लेख किया है, उन्हें शामिल करने से संदेश की प्रभावशीलता में वृद्धि होगी।

2. कहानी सुनाना

यीशु के शिक्षण का मुख्य तरीका भाषण था, लेकिन उसने अपने श्रोताओं को उसके वचनों को समझने और याद रखने में मदद करने के लिए कई अन्य विधियों को शामिल किया! वह अक्सर कहानियों - दृष्टान्तों का प्रयोग करता था । मरकुस 4:34 कहता है कि उसने बिना कहानियाँ कहे कभी नहीं बोला। उसने जो कहा , वह वैसा ही करता था , जैसे कि जब वह शिष्यों के पैर धोता था (यूहन्ना 13:1-11) या विश्वास के बारे में सिखाने के लिए एक बच्चे का इस्तेमाल करता था (मरकुस 9:33-37; मत्ती 18:1-14)। उसने चमत्कार करके और शरीर को चंगा करके यह दिखाने के लिए अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया कि वह अनदेखी आत्माओं को ठीक कर सकता है। उसने लोगों को खिलाने के लिए रोटी और मछली को कई गुना बढ़ा दिया , एक तूफान को रोक दिया, शिष्यों को मछली की एक अद्भुत पकड़ लाने के लिए प्रेरित किया, और अपने शब्दों को कार्यों के साथ प्रदर्शित करने के लिए कई अन्य काम किए। उसने शिष्यों से प्रशन भी पूछे: लोग कया कहते है कि वह कौन था ? और आपना सबक देने से पहले उत्पन्न होने वाली समस्याओं को कैसे हल किया जाए। फिर उसने शिष्यों को दो-दो करके भेजा कि उन्होंने जो सीखा था उसका अभ्यास करें। उसका तरीका भाषण से कहीं अधिक था, और इसलिए बह इतना सफल शिक्षक था ।

3. विभिन्न तरीके

हम जो कहते हैं उसे बेहतर ढंग से समझने में लोगों की मदद करने के कई तरीके हैं। हम चित्रों या संकेतों का उपयोग कर सकते हैं, या हम मुख्य वचन या मुख्य विचार लिख सकते हैं। हम दृश्यों का वर्णन करने और एक कहानी बताने के लिए शब्दों का उपयोग करके उनके दिमाग में चित्र भी बना सकते हैं। यह बहुत प्रभावी हो सकता है। कहानी सुनाना दुनिया भर की कई संस्कृतियों में संचार का एक प्रमुख तरीका है। कहानी को कथा के रूप में बताया जा सकता है, इसे नाटक में चित्रित किया जा सकता है या चित्रों में दिखाया जा सकता है। अच्छी कहानी सुनना हर किसी को पसंद होता है। इसलिए फिल्में इतनी लोकप्रिय हैं। कहानियां ना केवल सच्चाई का संचार करती हैं, बल्कि वे इसका उदाहरण भी करती हैं। जब नातान नबी ने राजा दाऊद से उसके पाप के बारे में बात की, तो उसने एक भेड़ वाले व्यक्ति की कहानी सुनाई (2 शमूएल 12:1-4)। इसने सच्चाई को स्पष्ट और समझने में आसान बनाने में मदद की। यीशु ने एक अच्छे सामरी के बारे में एक कहानी सुनाई जब यह पूछा गया कि हमारा पड़ोसी कौन है (लूका 10:25-37)। जब हम दृष्टांतों के बारे में बात करेंगे तो हम इस प्रकार की कहानियों के बारे में अधिक बात करेंगे।

श्रोताओं का ध्यान आकर्षित करने का एक और बहुत अच्छा तरीका है कि वे जो सुनते हैं उसे अधिक याद रखें, वह है विचार विमर्श करना । यह लोगों को पीछे बैठने और निष्क्रिय रूप से सुनने के बजाय सीखने की प्रक्रिया में आकर्षित करता है। प्रशन पूछना, भले ही लोग केवल अपने मन में ही उत्तर दें, बहुत प्रभावी है।

जब मैं सिखाता हूं कि मैं जो कह रहा हूं, उसका उदाहरण देने के लिए मैं करामाती कर्त्वों का उपयोग करना पसंद करता हूँ : यीशु का खून सभी पापों को मिटा देता है, बाइबल पर सवाल खड़ा कर सकता है लेकिन नष्ट नहीं किया जा सकता है, 'यीशु' का नाम किसी भी अन्य नाम से अधिक मजबूत है, और कई अन्य बाते । मैं कहानियां सुनाता हूं और उदाहरण देता हूं। मैं जिस बारे में बात कर रहा होता हूं

उसकी तस्वीरें बनाता हूं। मैं सवाल पूछता हूं, जोर से जवाब की उम्मीद नहीं करता, बल्कि श्रोताओं को अपने मन में सोचने के लिए प्रेरित करता हूं। कभी-कभी मैं बाइबल की पोशाक पहनता हूँ और ऐसे बोलता हूँ जैसे मैं बाइबल में से कोई व्यक्ति हूँ।

इस बारे में सोचें कि किन तरीकों ने आपको एक उपदेश समझने और याद रखने में सबसे अच्छी मदद की है। कोई भी सर्वोत्तम तरीका नहीं है। तरीकों का एक मिश्रण हमेशा सबसे अच्छा होता है। आपकी पसंद का तरीका आपके समूह की उम्र और आकार और आपकी प्रस्तुति के लिए दिए गए समय की मात्रा से निर्धारित होता है।

<u>4. प्रासंगिक उपदेश</u>

बाइबल सिखाने या प्रचार करने के दो तरीके हैं। एक पवित्रशास्त्र से एक आयत लेना है और उसे सिखाना है। इसे वर्णनात्मक (एक्सपोजिटरी) उपदेश कहा जाता है क्योंकि इससे पाठ को खोला या वर्णित किया जाता है। दूसरा प्रासंगिक उपदेश है। यह तब होता है जब कोई व्यक्ति किसी विषय को चुनता है और फिर उस विशेष विषय पर बोलने वाली विभिन्न बाइबल आयतों का उपयोग करता है। फिर उन आयतों को भी वर्णनात्मक तरीके से समझाया और सिखाया जाना चाहिए। यहां मुख्य विचार पहले विकसित किया जाता है और फिर उसके चारों ओर उपदेश का निर्माण होता है।

उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि आप प्रार्थना के बारे में प्रचार करना चाहते हैं। यह एक बहुत व्यापक विषय है, इसलिए आप इसे प्रार्थना के महत्व तक सीमित रखते हैं। तब आप प्रार्थनाओं के महत्व के बारे में आयतें पाते हैं और इस बारे में बात करते हैं कि प्रार्थना क्यों महत्वपूर्ण है, उसका समर्थन करते हुए जो आप बाइबल की आयतों के साथ कहते हैं । यह एक प्रासंगिक उपदेश है। यह सटीक विषय को कवर करने का एक अच्छा तरीका हो सकता है जिसे आप जानते हैं कि आपके लोगों को सुनने की जरूरत है। आप अपने संदेश के साथ आगे बड़ने में सहायता के लिए ऊपर वर्णित किसी भी तरीके का उपयोग कर सकते हैं।

हालाँकि इसमें यह भी खतरा है कि कभी-कभी वक्ता अपने विचारों को सिखाता है और पवित्रशास्त्र से उनका समर्थन करने की कोशिश करता है बजाय इसके कि वह पवित्रशास्त्र से विचार लेकर बात करे। एक और खतरा यह है कि बाइबल में सब कुछ कवर नहीं कीया जाता , वक्ता के केवल कुछ पसंदीदा विषय और आयते हैं। क्योंकि प्रत्येक हिस्से को अलग तरह से देखा जाता है, एक पुस्तक के पूरे प्रवाह को व्यक्त नहीं किया जाता है, हिस्से के बीच संबंध खो जाता है, और इसलिए लोग यह नहीं सीख सकते कि अपने स्वयं के विकास के लिए बाइबल का उपयोग कैसे करें। कठिन विषयों और अंशों को कभी भी कवर नहीं किया जाता है, और वक्ता को मुख्य रूप से उस पर ध्यान केंद्रित करने के लिए लुभाया जा सकता है जो वह मानता है, बजाय इसके, कि बाइबल क्या कहती है।

<u>5. वर्णनात्मक उपदेश</u>

दूसरे प्रकार का उपदेश, वर्णनात्मक उपदेश, पवित्रशास्त्र के एक हिस्से से शुरू होता है और इसे आयत दर आयत सिखाता जाता है। उपदेश का मुख्य विचार हिस्से से आता है और लोगों की जरूरतों पर लागू होता है। वक्ता मुख्य विचार से शुरू नहीं करता है और फिर उस पर निर्माण करता है, इसके बजाय वह पवित्रशास्त्र से शुरू करता है और हिस्से से अर्थ निकलता है। मेरी किताब "स्टडीइंग द बाइबल" (बाइबल का अध्यन) सिखाती है कि कैसे एक हिस्से का अध्ययन किया जाए और लेखक के मुख्य विचार की खोज की जाए।

इस प्रकार यीशु (लूका 24:27), एज्रा (एज्रा 7:6, 10; नहेमायाह 8:1-9), पौलुस (प्रेरितों 17:2), बेरियान्स (प्रेरितों 17:11) और अपुल्लोस (प्रेरितों 18: 24, 28) वर्णनात्मक तरीके से वचन का अध्ययन करते और शिक्षा देते थे । उन्होंने ऊपर वर्णित विभिन्न तरीकों का इस्तेमाल यह बताने में मदद करने के लिए किया कि वे क्या चाहते हैं कि लोग याद रखें जैसे वह अपने श्रोताओं को बाइबल की आयत का अर्थ देते थे ।

वर्णनात्मक उपदेश के कई फायदे हैं। एक जन के लिए, परमेश्वर कार्यसूची तय करता है, क्योंकि यह वही है जो हिस्सा कहता है। इस तरह सच्चाई का संचार किया जाता है जिसे अन्य तरीके से भी पारित किया जा सकता है क्योंकि बाइबल के सभी हिस्सों को सिखाया जाता है, आप जो कहते हैं उसमें अधिकार जुड़ जाता है क्योंकि संदेश बाइबल में से आता है, और श्रोता ना केवल परमेश्वर के वचन के महत्व को सीखते हैं बल्कि यह भी सीखते हैं कि इसका अपने लिए कैसे अध्ययन करना है । अगले सप्ताह अगले हिस्से को कवर करके, आप सप्ताह दर सप्ताह सत्य का निर्माण कर सकते हैं जो आपके लोगों को बाइबल के बड़े हिस्से को सीखने में मदद करता है और इसे उनके जीवन में जरूरतों पर लागू करने में सक्षम करता है। आपके अधिकांश संदेश वर्णनात्मक (एक्सपोजिटरी) होने चाहिए। इस प्रकार की उपदेश तैयारी के लिए अधिक मेहनत की आवश्यकता होती है, लेकिन यह समय के लायक है।

ख- संदेश की रूपरेखा तैयार करना

1. एक संदेश की रूपरेखा का महत्व

जैसे हम देखते हैं, एक उपदेश प्रचार का मतलब है लोगों से बात करना। लेकिन यह सुयोजित, व्यवस्थित और संगठित बातचीत है। यह सिर्फ खड़ा होना और जो कुछ भी मन में आता है उसके बारे में बात करना नहीं है। जो कहा जाएगा वह वक्ता के दिमाग में योजनाबद्ध और व्यवस्थित होता है। उदाहरण के लिए, पतरस के सभी उपदेश एक ही नमूने का पालन करते हैं। उसने प्रेरितों के काम 2:21-38 और प्रेरितों के काम 3:13-19 में यहूदियों को प्रचार किया। उसने प्रेरितों के काम 10:36-45 में, अन्यजातियों से बात की। उसके सभी संदेशों की संरचना समान है। पतरस अपने श्रोताओं से परिचय के साथ आरंभ करता है जिसमें वह उन्हें यीशु के व्यक्तित्व और सेवकाई के बारे में बताता है (प्रेरितों के काम 2:21-22; 3:13; 10:36-39क)। फिर वह उन्हें बताता है कि यीशु को अस्वीकार कीया गया था और मार डाला गया था (प्रेरितों के काम 2:23; 3:15क; 10:39ख) परन्तु परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया (प्रेरितों 2:24, 32; 3:15ब; 10:40-41) वह बताता है कि यह कैसे जाहिर होता है कि यीशु ही प्रभु है (प्रेरितों के काम 2:33; 10:42)। क्योंकि यीशु ही परमेश्वर है जो उनके पापों का भुगतान करने के लिए पृथ्वी पर आया और जो जीवन में वापस आया, वह श्रोताओं को पश्चाताप करने और यीशु को अस्वीकार करने के अपने पाप से फिरने की चुनौती देने के द्वारा बात समाप्त करता है (प्रेरितों के काम 2:38; 3:19; 10:42)। वह चाहता है कि वे बाहरी बपतिस्मे के द्वारा अपने आंतरिक पश्चाताप को प्रदर्शित करें, यह दिखाते हुए कि वे जीवन में यीशु का अनुसरण करने के लिए प्रतिबद्ध हैं (प्रेरितों के काम 2:38; 10:47-48)। वह उन्हें आश्वासन देता है कि यदि वे ऐसा करते हैं तो उनके पाप क्षमा कर दिए जाते हैं (प्रेरितों के काम 2:38; 3:19; 10:43) और परमेश्वर का पवित्र आत्मा उनके भीतर वास करेगा (प्रेरितों 2:38; 10:44-45)।

संदेश की संरचना अनवार्य है । सत्य को विकसित और लागू किया जाना चाहिए। भोजन की तरह, इसे सावधानीपूर्वक व्यवस्थित किया जाना चाहिए, ना कि सभ एक आम कटोरे में फेंक दिया जाए और एक साथ मिला दिया जाए। सत्य को समझने और उस पर निर्माण करने के लिए हमारे दिमाग को संरचना

और व्यवस्था की आवश्यकता होती है, इसलिए प्रचारकों और शिक्षकों के रूप में हमें इसे अपने संदेशों में बनाना चाहिए।

हालाँकि, हम प्रत्येक संदेश के लिए समान रूपरेखा का उपयोग नहीं कर सकते। हम अपने दर्शकों की जरूरतों को पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं, और वे जरूरतें भिन होंगी। इसलिए हम जो कहेंगे वह भी भिन होगा। कैसरिया में पतरस के उपदेश की तुलना कुरनेलियुस को दिए संदेश से करें (प्रेरितों के काम 10:34-43) पिसिदिया के अन्ताकिया में यहूदियों को दिए गए पौलुस के संदेश के साथ (प्रेरितों 13:16-41)। पहला समूह धर्मनिष्ठ अन्यजातियों से बना था, दूसरा यहूदियों का। इसलिए पौलुस जो कुछ कह रहा था उसका समर्थन करने के लिए उसने पुराने नियम को कई बार बताया/ दुहराया क्योंकि उसके यहूदी श्रोता वचन के अधिकार में विश्वास करते थे। लेकिन पतरस ने कुरनेलियुस को पवित्रशास्त्र का बिल्कुल कोई हवाला नहीं दिया, क्योंकि अन्यजातियों के रूप में, यहूदी धर्मग्रंथों में उनका उतना वजूद नहीं था। फिर भी, दोनों संदेशों की संरचना समान है। वे प्रत्येक इतिहास को चित्रित करने के द्वारा शुरू करते हैं (प्रेरितों के काम 10:34; 13:16-22) और फिर घोषणा करते हैं कि यीशु को परमेश्वर ने हमारे उद्धारकर्ता के रूप में भेजा था (प्रेरितों 10:36, 38अ; 13:23)। फिर उनमें से प्रत्येक ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और यीशु के जीवन में उसके हिस्से का उल्लेख किया (प्रेरितों के काम 10:37; 13:24-25) और मानवजाति को छुड़ाने के लिए परमेश्वर की ओर से भेजे गए यीशु में विश्वास करने के महत्व को दोहराते हुए निष्कर्षत कीया (प्रेरितों के काम 10:36अ; 13:26)।

हर बार जब वह परमेश्वर के वचन का प्रचार करता है तो पौलूस का बोलना भी इसी तरह के नमूने का अनुसरण करता है। वह यीशु के आने के बारे में बात करने की तैयारी के रूप में इतिहास का जिक्र करना शुरू कर देता है। पिसिदिया के अन्ताकिया में यह यहूदी राष्ट्र का इतिहास है (प्रेरितों के काम 13:16-23)। एथेंस में यह परमेश्वर की खोज करने वाली आत्मा का इतिहास है (प्रेरितों के काम 17:23-28)। लुस्त्रा में यह प्रकृति में परमेश्वर की क्रियाशील गतिविधि का इतिहास है (प्रेरितों के काम 14:15-17)। पौलूस नींव रख रहा है कि परमेश्वर दूर और अलग नहीं है, लेकिन हमेशा पुरुषों के मामलों में सक्रिय है। पिसिदिया के अन्ताकिया में इन कथनों को करने का उसका अधिकार पुराना नियम था, क्योंकि वहां के यहूदी इसे जानते और मानते थे (प्रेरितों के काम 13:16-41)। एथेंस में दार्शनिक रूप से दिमाग वाले अन्यजातियों ने यूनानी कवियों को एक अधिकार व्यक्ति के रूप में देखा, इसलिए पौलूस ने उनका हवाला दिया (प्रेरितों के काम 17:22-34)। लुस्त्रा के श्रोता उनमें से किसी को भी नहीं जानते थे, इसलिए पौलुस ने किसी एक का उल्लेख नहीं किया (प्रेरितों के काम 14:15-17)।

फिर, पौलूस उन्हें यीशु से मिलाने को प्रतेक स्थान पर गया । परमेश्वर ने यीशु मसीह के माध्यम से मानव जाति में प्रवेश किया और इसलिए मनुष्य का कर्तवय है कि वह उसका अनुसरण करे (प्रेरितों 13:23, 32, 38-39; 14:16; 17:30)। बावजूद इसके ,बेशक, कि यीशु अस्वीकृत कीया गया और उसे सूली पर चढ़ा दिया गया (प्रेरितों के काम 13:27-29) पुनरुत्थान ने पुष्टि की कि वह पृथ्वी पर आने वाला परमेश्वर था (प्रेरितों के काम 13:26-29; 17:31)। पिसिदिया के अन्ताकिया में इसे प्रमाणित करने के लिए, पौलुस ने पुराने नियम की भविष्यवाणियों (प्रेरितों के काम 13:34-37) और प्रेरितों की गवाही (प्रेरितों 13:31) का उपयोग किया - यह वास्तव में दोहरा प्रमाण हुआ। पौलुस ने यीशु में विश्वास करने के महत्व और अस्वीकार करने वालों के लिए न्याय की चेतावनी के साथ बात को समाप्त करता था (प्रेरितों के काम 13:40-41; 17:30-31; 14:16)।

तीनों संदेशों में उसका मुख्य विचार यीशु मसीह का इतिहास में निर्णायक घटना के रूप में आना था क्योंकि वह उन लोगों के लिए पापों की क्षमा प्रदान करता है जो विश्वास करते हैं लेकिन अस्वीकार करने

वालों के लिए न्याय करता हैं। उसने दर्शकों की जरूरतों के आधार पर इसे अलग तरह से विकसित किया, लेकिन उसके संदेश एक ही नमूने और संगठन का पालन करते हैं। वे, इसी तरह से, उसके तर्क को विकसित करते हैं कि यीशु परमेश्वर और उद्धारकर्ता है। स्पष्ट रूप से उसके विचार सुनियोजित और संगठित हैं, प्रत्येक आपने से पहले वाले के कार्य पर निर्माण करता है।

जब हम किसी संदेश का प्रचार करने से पहले उसकी रूपरेखा तैयार करते हैं तो हम भी ऐसा ही करते हैं। रूपरेखा हमें अपने विचारों को बुद्धिमानी से विकसित करने में मदद करती है, एक को समझाती है, फिर उस आधार पर अगले का निर्माण करती है। इससे वक्ता के लिए संरचित तरीके से अपने विचारों को सटीक रूप से व्यक्त करना आसान हो जाता है, और श्रोताओं के लिए वक्ता की बातों का पालन करना और याद रखना आसान हो जाता है। रूपरेखा उपदेश को कुल रूप से दिखाती है, जैसे कोई कंकाल देख रहा हो। अन्य सभी भागों और टुकड़ों को उनके उचित स्थान पर इसमें चिपका दिया जाता है। इस से यह देखना आसान हो जाता है कि, खाली स्थान, कमजोर स्थान या बहुत अधिक जानकारी कहाँ है। यह संदेश को शुरू से अंत तक प्रवाहित करने में मदद करता है। यह एक नक्शा बन जाता है जो उपदेशक या शिक्षक को दिखाता है कि वह कहाँ से शुरू करना चाहता है कहाँ समापत करना चाहता है। सभी अच्छे वक्ता एक रूपरेखा से शुरू होते हैं। इसी तरह वह जो किताबें, नाटक या फिल्में लिखते हैं। यह एक ऐसा कौशल है जिसे हर अच्छे वक्ता को विकसित करना चाहिए।

2. एक संदेश को कैसे रेखांकित करें

क- प्रार्थना

जैसा कि हमने पहले देखा, उपदेश की तैयारी के पहले, उसके दौरान और बाद में प्रार्थना करना बहुत महत्वपूर्ण है। यदि आप जल्दी में हैं और जल्दी करना चाहिए, तो प्रार्थना में समय की लापरवाही ना करें। मार्टिन लूथर ने कहा, "जिसने अच्छी तरह से प्रार्थना की है उसने अच्छी तरह से अध्ययन किया है।" ई एम बाउंड्स ने कहा, "हमारी प्रार्थना का चरित्र हमारे उपदेश के चरित्र को निर्धारित करेगा। हल्की प्रार्थना से हल्का उपदेश मिलता है। परमेश्वर के लिए मनुष्यों से बात करना बहुत अच्छी बात है, लेकिन अभी भी मनुष्यों के लिए परमेश्वर से बात करना इससे भी अच्छा है। व्यक्तिगत रूप से, मुझे बख्त सिंह का उदाहरण पसंद है जो लोगों से बात करने से पहले पूरी रात परमेशवर के मार्गदर्शन और शक्ति के लिए प्रार्थना करता था ।

ख- हिस्से का अध्ययन करें

मेरी किताब, “बाइबल का अध्ययन” इस बारे में विस्तार से बताती है। बाइबल के उपदेशों को तैयार करने के लिए इसे पढ़ना और महारत हासिल करना चाहिए। यदि आपके पास एक प्रति नहीं है, तो आप http://india.christiantrainingonline.org/books पर ऑनलाइन पा सकते हैं या मुझे jerry@schmoyer.net पर ईमेल कर सकते हैं और मैं आपको एक इलेक्ट्रॉनिक प्रति ईमेल करूंगा। यहाँ इस बात का सारांश दिया गया है कि उस पुस्तक से बाइबल का अध्ययन कैसे किया जाए।

चरण 1. अवलोकन/देखरेख

1. प्रार्थना करें

2. विभिन्न अनुवायदों में, हिस्से को कई बार पड़े , चुपचाप भी और ऊँची आवाज़ से।

3. प्रशन लिखें

आप लेखक से क्या पूछेंगे यदि वह आपके साथ बैठा हों?

पूछें- कौन, क्या, क्यों, कब, कहाँ, कैसे

जवाब देने की कोशिश मत करो, बस पूछो

4. भागों को देखें - हिस्से की रूपरेखा तैयार करें

5. विवरण को देखें

हिस्से को ऐसे देखें जैसे कि आप इसे पहली बार देख रहे हों।

हिस्से को अपने शब्दों में फिर से लिखिए

इसकी तुलना, इसका विपरीत ,इसका दोहराए गए, इसका तार्किक संबंध ,इसका सामान्यीकरण, इसके प्रगतिशील होने को भी देखें

<u>चरण 2: व्याख्या</u>

1. अपने काम को इस तरह से व्यवस्थित और सुरक्षित करें जैसे आपके लिए सुविधाजनक हो

2. सब कुछ प्रसंग में रखें

क- हिस्से का प्रसंग - समझें कि हिस्से के पहले और बाद में क्या आता है

ख- भूगोल प्रसंग - कहाँ हुआ था और उस स्थान का महत्व

ग- ऐतिहासिक संदर्भ - उत्तर दे - कौन, क्या, क्यों, कब, कहाँ, कैसे

घ- सांस्कृतिक संदर्भ - उस समय जीवन कैसा था जो हिस्से को समझने में मदद करेगा?

3. मुख्य विचार

हिस्से में लेखक किस मुख्य विचार को व्यक्त करने का प्रयास कर रहा था?

मूल श्रोता क्या सोचेंगे कि हिस्से का मुख्य विचार क्या था?

4. साहित्य के प्रकार

क- इतिहास - जानिए कौन, क्या, क्यों, कब, कहाँ और कैसे

ख- शिक्षण - मुख्य विचार का एक रूपरेखा में टूटना

ग- कविता-कविता, पंक्ति 2 से पंक्ति 1 का संबंध; हिस्से का मुख्य विचार; अलंकार

घ- दृष्टान्त - इतिहास के प्रशन , आज की संस्कृति भी, एक मुख्य विचार

ङ- भविष्यवाणी - लेखक का क्या मतलब था? पाठकों ने क्या समझा? प्रतीकों और संस्कृति को जानें

च- नीतिवचन - सत्य की शिक्षा देने वाले छोटे दृष्टान्त, सिद्धांत- वादे नहीं

5. व्याख्या के मूल सिद्धांत

क- संरचना और व्याकरण - क्रिया, पूर्वसर्ग, भाषण के भाग

ख- सामान्य, प्रचलित, शाब्दिक व्याख्या - जो लेखक का मतलब था और जो पाठकों ने इसे समझा

ग- अलंकार - अलंकारिक प्रशन , दृष्टान्ती, रूपांतर, निदर्शन , मानवीकरण

घ- प्रकार - घटना, व्यक्ति, वस्तु जो आध्यात्मिक सत्य बताती है

ङ-अंक - जो लेखक का मतलब था और पाठक ने इसे समझा ।

6. अन्य संसाधन - किताबें, इंटरनेट - अपना खाना खुद चबाएं!

7. गहरा अध्ययन - शब्द, विषयगत, या चरित्र अध्ययन

1) शब्द, अवधारणा या व्यक्ति के संदर्भ में सभी बाइबल संदर्भों की सूची बनाएं

2) एक संक्षिप्त सारांश लिखें कि प्रत्येक हिस्सा इसके बारे में क्या कहता है

3) उन आयातों को समूहित करें जो एक ही बात कहती हैं, उन्हें चिन्हत करें

4) शब्द या अवधारणा को जयादा से जयादा स्पष्ट रूप से परिभाषित करें

5) आपने जो सीखा है उसका सारांश लिखें

चरण 3: अनुप्रयोग

तो क्या हुआ? मुझे कैसे प्रतिक्रिया देनी चाहिए? मैंने जो सीखा है उसका मुझे क्या करना चाहिए?

1. अच्छे अनुप्रयोग विकसित करना

बाइबल हमारे लिए लिखी गई है लेकिन हमें नहीं

केवल एक ही व्याख्या - लेखक का क्या मतलब था और पाठकों ने क्या समझा

लेकिन कई, अनेक अनुप्रयोग

व्याख्या से सहमत होना चाहिए, संपूर्ण बाइबल, विशिष्ट और मापने योग्य हों

2. अनुप्रयोगों के प्रकार

क्या पालन करने की आज्ञा है? यदि ऐसा है तो क्या? यह आज मुझ पर कैसे लागू होता है?

क्या अनुसरण करने के लिए कोई उदाहरण है? यदि ऐसा है तो क्या? यह आज मुझ पर कैसे लागू होता है?

क्या ध्यान देने की कोई चुनौती है? यदि ऐसा है तो क्या? यह आज मुझ पर कैसे लागू होता है?

क्या कोई पाप है जिससे बचा जाये ? यदि ऐसा है तो क्या? यह आज मुझ पर कैसे लागू होता है?

क्या सीखने के लिए कोई शिक्षण है? यदि ऐसा है तो क्या? यह आज मुझ पर कैसे लागू होता है?

क्या करने की लिए कोई कार्रवाई है? यदि ऐसा है तो क्या? यह आज मुझ पर कैसे लागू होता है?

क्या प्रार्थना करने के लिए कुछ है? यदि ऐसा है तो क्या? यह आज मुझ पर कैसे लागू होता है?

क्या दावा करने का कोई वायदा है? यदि ऐसा है तो क्या? यह आज मुझ पर कैसे लागू होता है?

<u>3. पालन करना सीखना - जो आपने सीखा है उसे सबसे पहले अपने जीवन में लागू करें</u>

<u>4. उन आयातों को याद करें जो आपके लिए विशेष या महत्वपूर्ण हैं</u>

<u>ग- हिस्से के मुख्य विचार पर ध्यान केन्द्रित करना</u>

मुख्य विचार किसी भी सफल संदेश की कुंजी है। यह एक तीर के बीम की तरह है, और इसे सीधे लक्ष्य पर जाने के लिए एक दम सीधा होना चाहिए। यदि यह टेढ़ा है तो तीर किनारे की ओर घूमेगा और लक्ष्य से चूक जाएगा। मुख्य विचार को जानना और विकसित करना ही संदेश को एक सीधी रेखा में गतिमान रखता है। उस मुख्य विचार में वह शामिल है जो आप चाहते हैं कि लोग जानें और करें। उदाहरण के लिए, जब मैं पौलूस के रूप में कपड़े पहनता हूं और दिखावा करता हूं कि मैं वह हूं तो मैं उसके जीवन के बारे में बता सकता हूं, मैं उसकी उद्धार से पहले और बाद की सभी प्रतिभाओं और उपलब्धियों की तरफ संकेत करता हूं। मैं अपनी बात को इस तरह रेखांकित करता हूं:

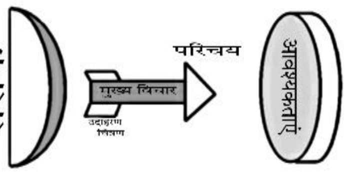

I. उद्धार से पहले - किसी चीज ने पौलूस को संतुष्ट नहीं कीया

II. उद्धार के समय - पौलूस समझता है कि केवल यीशु ही संतुष्ट करता है

III. उद्धार के बाद - यीशु पौलूस की अंदरूनी जरूरतों को पूरा करना जारी रखता है

इस नाटक के लिए मेरा शीर्षक है "केवल यीशु संतुष्ट करता है।" अपने मुख्य विचार के लिए मैं चाहता हूं कि लोग यह जानें कि कुछ भी संतुष्ट नहीं करता, केवल यीशु। मैं चाहता हूं कि वे अपने जीवन में संतुष्टि के लिए केवल यीशु की ओर देखें और कहीं भी नहीं।

जब मैं लोगों से बात करता हूं, तो मेरा इरादा उन्हें अपने लक्ष्य तक ले जाने का होता है। ऐसा करने के लिए मुझे वहीं से शुरू करना चाहिए जहां वे वर्तमान में हैं, फिर उन्हें उस दिशा में ले जाऊ जहां मैं चाहता हूं कि उनकी सोच जाए। मैं उन बातों से शुरू करता हूँ जो वे जानते हैं और जो उनके जीवन में हो रहा है, और फिर अपने शब्दों के द्वारा मैं उन्हें उस लक्ष्य की ओर ले जाना शुरू करता हूँ जिसे मैं अपने संदेश द्वारा पूरा करना चाहता हूँ।

जब मैं एक कमरे में चलता हूं तो मैं एक जगह से शुरू करता हूं और दूसरी पर समाप्त होता हूं। मैं वहाँ कैसे पहुँचता हूँ यह चरणों की एक श्रृंखला द्वारा है। प्रचार एक ही है। हम एक बिंदु से दूसरे बिंदु तक चरणों की एक श्रृंखला द्वारा पहुंचते हैं, पहले एक, फिर दूसरा और उसके बाद एक। वे सभी एक ही आकार के हैं और सभी एक ही दिशा में आगे बढ़ते हैं, जहां एक समाप्त होता है, दूसरा वहां से शुरू

होता है । किसी सबक या उपदेश को विकसित करते समय, उन कदमों की श्रृंखला को लिख लें जो लोगों को जहाँ वो है, से, वहां ले जाए जहाँ उन्हें होना चाहिए ।

एक उपदेश के विभिन्न भाग होते हैं जो इसे एक संगठित तरीके से बनाने में मदद करते हैं। हम उन्हें आगे देखेंगे।

घ- परिचय

तीर का बिंदु वो है जो सबसे पहले लक्ष्य से संपर्क करता है। इसे सीधा और तेजधार होना चाहिए, क्योंकि यह पहले लक्ष्य से संपर्क करता है। इसका उद्देश्य लोगों का पूरा ध्यान आकर्षित करना और उन्हें ध्यान से सुनने का महत्व दिखाना होता है।

उदाहरण के लिए, जब मैं पौलूस के जीवन का नाटक करता हूं, तो मैं वैसी वेशभूषा में आता हूं और पौलूस के रूप में अपना परिचय देता हूं। हर कोई यह जानने के लिए उत्सुक होता है कि पौलूस क्या कहेगा इसलिए मुझे उनका पूरा ध्यान प्राप्त होता है । इस पुस्तक में परिचय के बारे में इसके बाद अधिक बताया जाएगा।

ङ- निष्कर्ष

निष्कर्ष, जो कहा गया है उसका एक संक्षिप्त सारांश है। कुछ भी नया नहीं जोड़ा गया है, यह सिर्फ एक सर्वेक्षण है। मुख्य विचार का सर्वेक्षण कीया जाता है और विभिन्न शब्दों में दुबारा शुरू किया जाता है। ये वो शब्द है जो सबसे आखिर में सुने जाते है और सबसे ज्यादा याद रहने वाले शब्द हैं, जैसे भोजन में भोजन का अंतिम निवाला वह स्वाद छोड़ देता है जो सबसे लंबे समय तक मुंह में रहेगा।

पौलूस के बारे में अपने संदेश में, जब मैं उसके रूप में कपड़े पहनता हूं, तो मैं पौलूस के साथ उसके जीवन की उन सभी चीजों को सारांशित करता हूं जो संतुष्ट नहीं करती हैं, लेकिन यह, कि केवल यीशु ही संतुष्ट करता है। ध्यान पौलूस पर नहीं बल्कि यीशु पर है। हम निष्कर्ष के बारे में बाद में बात करेंगे।

च- संक्रमण

संक्रमण, संदेश के एक प्रमुख भाग से दूसरे भाग में परिवर्तन होना हैं। वे बहुत महत्वपूर्ण हैं ताकि सुनने वाले खो ना जाएं। किसी को यात्रा का निर्देश देते समय, आप मोड़ों के संबंध में अतिरिक्त विवरण देते हैं। अगर वे चूक गए, तो मंजिल कभी नहीं मिलेगी। उपदेश बनाते या उपदेश देते समय भी यही सच है।

जब मैंने पौलूस के जीवन का नाटक करता हूँ , तो मैं यह सुनिश्चित करता हूँ कि जब मैं उसके जीवन के एक बड़े हिस्से से दूसरे हिस्से में जाऊं तो हर कोई मेरे साथ हो, जो पहले हो चुका था और फिर आगे जो हो रहा था, उसका सारांश करते हुए । इस तरह लोग मेरी बात का आसानी से अनुसरण कर सकते थे। अच्छे संक्रमण के बारे में अधिक जानकारी बाद में आएगी।

छ- उदारण

भले ही एक तीर बहुत सीधा हो और इसका बिंदु नुकीला हो, उसे उस दिशा में जाने के लिए, जिस दिशा में वह जा रहा है, उस पर पंखों की आवश्यकता होती है । पंख तीर को सीधा रखते हैं। उनके बिना यह एक छोर से दूसरे छोर तक मुड़ जाता और किसी भी दिशा में चला जाता, लक्ष्य को नहीं टकराएगा और ना टिकेगा जैसे इसके लिए इरादा किया गया होता है । उधारण का संदेश के साथ भी ऐसा ही काम हैं। वे अमूर्त सत्य की ठोस शब्दों में व्याख्या करते हैं। वे दिखाते हैं कि सच्चाई कैसे लागू होती है, क्योंकि

नातान ने अमीर आदमी का गरीब आदमी की एकमात्र भेड़ को चुराने की कहानी का इस्तेमाल कीया था, यह दिखाने के लिए कि दाऊद ने बतशेबा के साथ क्या किया था (2 शमूएल 12:1-4)। कहानी ने दाऊद के लिए सच्चाई को इतना जीवंत कर दिया कि वह धनी व्यक्ति पर क्रोधित हो गया (2 शमूएल 12:5), तब उसे यह एहसास कराया गया कि धनी व्यक्ति की तरह वह खुद ही था ।

<u>3. एक बुनियादी रूपरेखा</u>

जब मैं उस घर में गया जिसमें मैं अब रहता हूं, मुझे कई बड़े डिब्बे मिले, सभी एक ही आकार के थे, जिसमें मेरा सामान ले जाने के लिए पैक किया गया था। मैं किसी को भी दुसरे से ज्यादा बड़ा या भारी होना देना नहीं चाहता था। रसोई का सारा सामान एक डिब्बे में, बाथरूम का सारा सामान दूसरे डिब्बे में, आदिः। इसी तरह की सामग्री के छोटे बक्से या बैग भी रखे गए थे। फिर मैंने अपने नए घर में पहुंचने पर सारे समान और डिब्बों को खोलने के क्रम को जानने के लिए प्रत्येक पर लेबल और नंबर लगाया । इस तरह जब मैं अपने समान को खोलने और व्यवस्थित करने के लिए तैयार था तो मैं सामान के एक बेढंगे ढेर पर काम करने से बच गया ।

इस तरह हम अपने दिमाग से विचारों को किसी डिबे में पैक करके दूसरों के दिमाग तक स्थानांतरित कर सकते हैं। जब विचारों को एक साथ समूहित किया जाता है, क्रम में व्यवस्थित किया जाता है और एक से दूसरे में स्थानांतरित किया जाता है तो हमारे श्रोताओं के लिए उन चीजों को समझना और याद रखना आसान होता है जो हम उन्हें सिखा रहे हैं।

1. मुख्य विचार विकसित करें: तीर का भीम जो सीधे लक्ष्य तक जाता है:

   आप क्या चाहते हैं कि लोग जाने :

   आप क्या चाहते हैं कि लोग करें :

2. मुख्य बिंदुओं को रेखांकित करें (मुख्य, पैकिंग के बड़े डिब्बे)

   I.

   II.

   III.

3. प्रत्येक मुख्य बिंदु को तोड़ें (प्रत्येक बड़े डिब्बे में छोटे डिब्बे)

   I.

      क-

      ख-

      ग-

4. बाकी की रूपरेखा को भरें (छोटे डिब्बों में छोटे थैले जो बड़े डिब्बों में हैं)

   I.

   क-

1.

2.

5. परिचय और निष्कर्ष जोड़ें

6. संक्रमण जोड़ें

7. उदारण को जोड़ें (मुख्य बिंदुओं पर)

4. कदम दर कदम रूपरेखा का विकास

मान लीजिए आपने मरकुस 5:1-20 का अध्ययन किया है और **मुख्य विचार** की खोज की है जो लेखक चाहता है कि उसके पाठक जानें, कि यीशु दानाव्ग्रस्त लोगों को मुक्त कर सकता है क्योंकि वह शैतान से बड़ा है। इसलिए उसके पाठकों को यीशु पर भरोसा करना चाहिए और शैतान और दानवों पर जीत के लिए उसका अनुसरण करना चाहिए।

जैसा कि आप ने हिस्से का अध्ययन किया है, आप इसे पहले ही **मुख्य भागों** में तोड़ चुके हैं। उपदेशों में एक सामान्य प्रवाह है समस्या दिखाना फिर समाधान देना। यहीं बात यहाँ पर है। समस्या यह है कि आदमी दनाव्ग्रस्त है। समाधान यह है कि यीशु उसे मुक्त कर सकता है।

I. यीशु आदमी से मिलता है 1-5

II. यीशु ने दुष्टात्माओं को हराया 6-13

III. यीशु लोगों का अभिन्दन करता है 14-20

यह रूपरेखा की एक अच्छी शुरुआत है, लेकिन प्रत्येक **खंड** बहुत बड़ा है, इसलिए इसे और अधिक तोड़ा जाना चाहिए। प्रत्येक खंड का विकास किया जाना चाहिए। यह रसोई के सामान के डिब्बे को बर्तन, भोजन, डिब्बिओं और धूपदान आदि में विभाजित करने जैसा है। फिर वही काम बैठक कमरे और सोने वाले कमरे में किया जाता है।

I. यीशु आदमी से मिलता है 1-5

क- जगह (कहाँ) 1 गेरासेन्स

ख-लोग (कौन) 2 यीशु और आदमी

ग- समस्या (क्या) 3-5 आदमी दनाव्ग्रस्त है

II. यीशु ने दुष्टात्माओं को मात देता है 6-13

क- आदमी यीशु के पास आता है 6

ख- राक्षसों ने मनुष्य को छोड़ दिया 7-13a

ग- सूअर झील में डूबते है 13b

III. यीशु लोगों का अभिन्दन करता है 14-20

क- लोगों द्वारा अस्वीकृति 14-17

ख- भूतपूर्व दनाव्ग्रस्त व्यक्ति द्वारा स्वागत 18-20

ग- आज हमारे द्वारा स्वागत

कभी-कभी इन्हें **<u>छोटे वर्गों</u>** में भी विभाजित किया जा सकता है। व्यंजन को प्लेट, कप, चम्मच आदि में विभाजित किया जा सकता है।

I. यीशु आदमी से मिलता है 1-5

क- जगह (कहाँ) 1 गेरासेन्स

ख- लोग (कौन) 2 यीशु और आदमी

1. यीशु लोगों का अभिन्दन करता है

2. आदमी (पुरुष)

क- शैतान - नेता

ख- दानव - सहायक

ग- समस्या (क्या) 3-5 आदमी राक्षसी है

1. अंधकार और मृत्यु

2. क्रोध और हिंसा

3. नियंत्रण से बाहर

4. दर्द और आत्म-विनाश

5. कामुकता, यौन विकृति

6.दानाव्ग्रस्ती के लक्षण

II. यीशु दुष्टात्माओं को हरता है 6-13

क- आदमी यीशु के पास आता है 6

ख- दानव मनुष्य को छोड़ देते है 7-13a

1. दानव यीशु से डरते हैं

2. दुष्टात्माओं को यीशु की आज्ञा माननी पड़ती है

ग- सूअर झील में डूबते है 13b

III. यीशु लोगों का अभिन्दन करता है 14-20

क. लोगों द्वारा अस्वीकृति 14-17

ख- भूतपूर्व दानाव्ग्रस्त व्यक्ति द्वारा स्वागत 18-20

ग- आज हमारे द्वारा स्वागत

1. परमेश्वर अधिकार प्रदान करता है (मत्ती 28:18-20; लूका 10:18-19)

2. परमेश्वर सामर्थ प्रदान करता है (लूका 17:10; प्रेरितों के काम 1:8)

3. हमारे पास अधिकार और शक्ति है (लूका 9:1)

इनमें से प्रत्येक अनुभाग के अंतर्गत, **<u>आप जिस बारे में बात करना चाहते हैं रूपरेखा के उस भाग की व्याख्या करने के लिए, नोट्स डाल सकते हैं</u>** । उदाहरण के लिए ।.क-1 के तहत। यीशु , आप नोट कर सकते हैं कि यीशु पृथ्वी पर आने वाला परमेश्वर है, और कि वह यह दिखाने के लिए चमत्कार कर रहा है कि वह परमेश्वर है इसलिए ताकि लोग उस पर विश्वास करेंगे, कि वह इस आदमी से इतना प्यार करता है कि उसके पास आने के लिए उसने वह सब छोड़ दिया जो वह कर रहा था ताकि गलील की झील को पार करे,

पर शैतान ने तूफान भेजकर उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन यीशु ने तूफान से बात की और उसे रोक दिया (मरकुस 4:35-41)।

अब जब आप जानते हैं कि उपदेश कैसे विकसित होगा और मुख्य विचार क्या है, तो आपको एक स्पष्ट **<u>परिचय</u>** विकसित करने की आवश्यकता है जो सभी का ध्यान आकर्षित करे, और एक अच्छा निष्कर्ष, जो सारांश के साथ-साथ संदेश के मुख्य विचार को दर्शाता हो।

परिचय

अपने जीवन में एक समय के बारे में एक कहानी बताएं जब आपने दानवी शक्तियों का सामना किया और क्या हुआ। लोगों से पूछें कि क्या उन्होंने अपने जीवन में कभी ऐसा कुछ अनुभव किया है। इस विषय के बारे में आप क्या कहेंगे, यह सुनने में उनकी रुचि बढ़ेगी।

निष्कर्ष

फिर से बताएं कि यीशु दान्व्ग्रस्त लोगों को मुक्त कर सकता है क्योंकि वह शैतान से बड़ा है और इसलिए उसके पाठकों को यीशु पर भरोसा करना चाहिए और शैतान और दानवों पर जीत के लिए उसका अनुसरण करना चाहिए। यह आदमी जो उसके अपने जीवन मे है उसका एक उदाहरण है। हमारे जीवन में भी ऐसा ही हो सकता है यदि हम यीशु पर भरोसा करते हैं, उसका अनुसरण करते हैं, और उस अधिकार और शक्ति का उपयोग करते हैं जो उसने हमें यीशु के नाम पर दिया है। आप किसी के यीशु के पास आने और मुक्त होने के बारे में बाइबल या जीवन से एक अच्छी, छोटी कहानी जोड़ सकते हैं। फिर प्रार्थना से बंद करें। अब आप सब कुछ एक साथ बाँधने के लिए तैयार हैं ताकि यह आपके **<u>संक्रमण</u>** लिखने द्वारा आसानी से प्रवाहित हो।

परिचय

<u>संक्रमण</u>

जितना यीशु का दानवों से सामना हुआ और उनके बारे में शब्द था, उतना किसी और का नहीं था।

दर्जनों मुठभेड़

गेरास्नेस में एक विशिष्ट मुठभेड़ हुई

I. यीशु आदमी से मिलता है 1-5

क- जगह (कहाँ) 1

<u>संक्रमण</u>

हम एक सम्मानित समुदाय के नेता को चुनेंगे लेकिन देखें कि यीशु ने किसे चुना!

ख- लोग (कौन) 2 यीशु और आदमी

1. यीशु

<u>संक्रमण</u>

यीशु ने स्वर्ग और जंगल में शैतान को हराया (40 दिन की अजमाइश)

अब पृथ्वी पर उसके और उसके दानवों के राज्य को लेता है

2. आदमी (पुरुष)

क- शैतान - नेता

ख- दानव - सहायक

<u>संक्रमण</u>

अब आइये इसे मार्क 5 . पर लागू करते हैं

ग- समस्या (क्या) 3-5 आदमी राक्षसी है

1. अंधकार और मृत्यु
2. क्रोध और हिंसा
3. नियंत्रण से बाहर
4. दर्द और आत्म-विनाश
5. कामुकता, यौन विकृति
6. दानवीकरण के लक्षण

<u>संक्रमण</u>

समस्या - दानवग्रस्त , बंधन में (1-5)

समाधान - यीशु (6-13)

II. यीशु ने राक्षसों को हराया 6-13 (जानने के लिए)

क- आदमी यीशु के पास आता है 6

संक्रमण

मनुष्य यीशु के पास आता है लेकिन दानवो का अभी भी नियंत्रण हैं

ख- दानव मनुष्य को छोड़ते है 7-13a

1. दानव यीशु से डरते हैं

संक्रमण

दुष्टात्माएँ न केवल यीशु से डरती हैं

लेकिन उन्हें यीशु की आज्ञा भी माननी पड़ती है

2. दानवों को यीशु का पालन करना पड़ता है

संक्रमण

इसलिए दुष्टात्माओं यीशु की बात मानती है ।

उन्होंने आदमी को छोड़ दिया और सूअरों में प्रवेश किया

ग- सूअर झील में डूबे जाते है 13b

संक्रमण

इसने उन्हें कैसे प्रभावित किया?

III. यीशु लोगों का अभिन्दन करता है 14-20 (करने के लिए)

क. लोगों द्वारा अस्वीकृति 14-17

संक्रमण

जबकि लोग अस्वीकार करते हैं, मनुष्य स्वयं यीशु का अनुसरण करता है

ख- भूतपूर्व दान्व्ग्रस्त व्यक्ति द्वारा स्वागत 18-20

संक्रमण

मनुष्य ने अब दानवों पर विजय प्राप्त कर ली है

दूसरों की भी यीशु में विजय प्राप्ति हेतु मदद कर सकते हैं - और हम भी कर सकते हैं!

ग- आज हमारे द्वारा स्वागत

1.परमेश्वरअधिकार प्रदान करता है

<u>संक्रमण</u>

क्या होता है जब दानव आपने आप को परमेश्वर के अधिकार के अधीन नहीं करता ?

2. परमेश्वर शक्ति प्रदान करता है

<u>संक्रमण</u>

परमेश्वर शक्ति और अधिकार दोनों प्रदान करता है क्योंकि हमें दोनों की आवश्यकता है

3. हमारे पास अधिकार और शक्ति है

निष्कर्ष

अंतिम चरण है **<u>चित्र-उदारणों</u>** को इसमें जोड़ना । जब आप रूपरेखा पर काम करते हैं और आप जो जानकारी जोड़ना चाहते हैं उसे भरते समय आप कुछ जोड़ सकते हैं, लेकिन अब सुनिश्चित करें कि आपके पास अपने कुछ प्रमुख बिंदुओं के लिए अच्छे चित्र हैं।

परिचय

<u>उदारण</u> : अपने जीवन में एक समय के बारे में एक कहानी बताएं जब आपने राक्षसी शक्तियों का सामना किया और क्या हुआ।

I. यीशु आदमी से मिलता है 1-5

क- जगह (कहाँ) 1 गेरासेन्स

ख- लोग (कौन) 2 यीशु और आदमी

1. यीशु

2. आदमी (पुरुष)

क- शैतान – अगुवा

ख- दानव - सहायक

ग- समस्या (क्या) 3-5 आदमी दनाव्ग्रस्त है

1.अंधकार और मृत्यु

उदारण: लोगों का उदाहरण आज मृत्यु, अंधकार, काला, आदि में व्यस्त है

2. क्रोध और हिंसा

उदारण: आज हत्या, अपराध, हिंसा, महिलाओं, बच्चों के साथ दुर्व्यवहार आदि

3. नियंत्रण से बाहर

उदारण : व्यसनों, शराब, ड्रग्स, सेक्स, जंगली लोगों की कहानी

4. दर्द और आत्म-विनाश

उदारण: किसी के खुद को काटने, टैटू गुदवाने, आत्महत्या करने, दूसरों को चोट पहुंचाने का उदाहरण

जरूरी नहीं है कि आपके पास इनमें से प्रत्येक बिंदु के लिए उदारण हो , लेकिन एक या दो तो होने चाहिए

5. कामुकता, यौन विकृति

6. दानवीकरण के लक्षण

II. यीशु ने दानवो को हराता है 6-13

क- आदमी यीशु के पास आता है 6

ख- दानव मनुष्य को छोड़ देते है 7-13a

1. दानव यीशु से डरते हैं

2. दुष्टात्माओं को यीशु की आज्ञा माननी पड़ती

उदारण : किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में कहानी बताएं जिसे मैं जानता हूं, जिसके बारे में इतिहास में, बाइबल में सुना है।

उस विजय के बारे में बताएं जो यीशु ने उन्हें दिलाई

ग-   सूअर झील में डूबे जाते है 13b

III. यीशु लोगों का अभिन्दन करता है 14-20

क- लोगों द्वारा अस्वीकृति 14-17

ख- भूतपूर्व दनाव्ग्रस्त व्यक्ति द्वारा स्वागत 18-20

ग-   आज हमारे द्वारा स्वागत

1. परमेश्वर अधिकार प्रदान करता है (मत्ती 28:18-20; लूका 10:18-19)

उदारण: पुलिस को कानून लागू करने, अपराधियों को गिरफ्तार करने आदि के लिए प्राधिकरण की आवश्यकता है

पुलिस का बिल्ला

उन्हें कानूनों को लागू करने के लिए दिया गया, इसके पीछे सरकार का अधिकार

2. परमेश्वर सामर्थ प्रदान करता है (लूका 17:10; प्रेरितों के काम 1:8)

उदारण: पुलिसकर्मी का हथियार

बन्दूक, क्लब, बैकअप सहायता, आदि - प्राधिकरण को लागू करने के लिए जो कुछ भी आवश्यक हो

3. हमारे पास अधिकार और शक्ति है (लूका 9:1)

उदारण : यीशु का अनुसरण करने वाले विश्वासियों के लिए भी पुलिसकर्मी का बैज और हथियार।

निष्कर्ष

उदारण: किसी के यीशु के पास आने और मुक्त होने के बारे में बाइबल या जीवन से एक अच्छी, छोटी कहानी जोड़ें।

5. प्रासंगिक संदेशों को रेखांकित करना

यहाँ "विवाह में दास्त्वता " रुपी प्रासंगिक उपदेश का एक उदाहरण दिया गया है जो मैंने विवाह में एक-दूसरे की सेवा करने वाले पतियों और पत्नियों के महत्व पर किया था। मैं चाहता था कि श्रोता एक दूसरे की सेवा करने से संबंधित आवश्यकताओं, कारणों और संसाधनों को जानें। मैं चाहता था कि वे इसे अपने जीवन में लागू करें और एक दूसरे की सेवा करें जैसे यीशु उनकी सेवा करता है। मैंने इस विषय के बारे में बात करने वाले विभिन्न हिस्सों का उपयोग किया और उन्हें एक साथ रखा, जिससे वे एक प्रासंगिक उपदेश बन गए।

परिचय

I. दासत्वता का मतलब (मत्ती 20:26-28; फिलिप्पियों 2:5-11)

II. दासत्वता की आवश्यकताएँ (इफिसियों 5:21-33)

क- पति = सेवक अगुवा

1. एक सेवक अगुवा जिम्मेदारी लेता है (इफिसियों 5:21)

2. एक सेवक अगुवा सेवा करने के द्वारा अगुवाई करता है (इफिसियों 5:25, 31)

3. एक सेवक अगुवा बेशर्त प्यार करता है (इफिसियों 5:28)

ख- पत्नी = सेविका की अधीनता

1. एक समर्पित सेविका प्रेम का प्रतिउतर देती है (इफिसियों 5:22-24)

2. एक समर्पित सेविका आदर और सम्मान दिखाती है (इफिसियों 5:33)

3. एक समर्पित सेवक वास्तव में यीशु के अधीन होता है (इफिसियों 5:21-24)

III. सेवक -प्रधानता के कारण

क- परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता (फिलिप्पियों 2:2-8; इफिसियों 5:33)

ख- परमेश्वर से आशीश

1.पति के लिए (इफिसियों 5:31)

2. पत्नी के लिए (1 पतरस 3:1-6)

3. दोनों के लिए (उत्पत्ति 2:18)

4. बच्चों के लिए

IV. सेवक प्रधानता के लिए संसाधन

क- परमेश्वर के साथ घनिष्ठ व्यक्तिगत संबंध (यूहन्ना 15:1-8)

ख- बलिदानी प्रेम दिखाने की प्रतिबद्धता (रोमियों 12:1-2)

ग. आत्मा के फल से भरा हुआ (गलातियों 5:22-24)

घ- यीशु के उदाहरण का अनुसरण करें (मत्ती 20:26-28; 10:24-25)

निष्कर्ष

6. वर्णनात्मक संदेश को रेखांकित करना

बाइबल के एक हिस्से या पुस्तक को सिखाते समय एक रूपरेखा भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। हम वहां पर शुरू करते हैं जहां लेखक हिस्से को शुरू करता है। जैसे लेखक इसे विकसित करता है हम उसी तरह इसे विकसत करते हैं। हमें देखना चाहिए कि उसने डिब्बों को कैसे पैक किया और उसने इनमे से प्रत्येक में क्या रखा ताकि हम उन्हें सुनने वाले लोगों के लिए खोल सकें। प्रत्येक बिंदु पर हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि लोग यह समझें कि यह उन पर कैसे लागू होता है। यदि नहीं, तो वे इसे उस तरह से नहीं सीखेंगे या लागू नहीं करेंगे जैसा उन्हें करना चाहिए।

एक वर्णनात्मक उपदेश का अनुसरण करते हुए मैंने 2 तीमुथियुस 3:14-17 पर उपदेश दिया जिसे "परमेश्वर के वचन की महानता" कहा जाता है । मैं चाहता था कि श्रोता यह जानें कि बाइबल परमेश्वर का सिद्ध वचन है जिसे हमें जानना चाहिए और अपने जीवन में लागू करना चाहिए। यह सिर्फ शुरुआती रूपरेखा है। प्रत्येक बिंदु के तहत वक्ता समझाएगा कि इस बाइबल हिस्से का क्या अर्थ है, और यह कैसे लागू होता है। अर्थ को स्पष्ट करने के लिए शब्द अध्ययन, दृष्टांतों और उदाहरणों का उपयोग किया जा सकता है।

परिचय

I. परमेश्वर के वचन में बने रहें 2 तीमुथियुस 3:14क

14, परन्तु जो कुछ तुम ने सीखा है और जिसके प्रति आश्वस्त हो गए हैं, उस पर चलते रहो

क- इसे सीखो (मन)

आपने जो सीखा है उसमें लगातार बने रहें (मुख्य विचार = उन्हें क्या जानना चाहिए)

ख- इसे लागू करें (जीवन)

और इसके प्रति आश्वस्त हो गए हैं, (मुख्य विचार = क्या चाहते हो कि वह)

II. परमेश्वर के वचन पर भरोसा रखें 2 तीमुथियुस 3:14ख-15

क्योंकि तुम उन्हें जानते हो जिनसे तुमने यह सीखा है,

15 और तुम बालपन से पवित्र शास्त्र को जानते हो, जो तुम्हें मसीह यीशु पर विश्वास करने के द्वारा उद्धार के लिये बुद्धिमान बनाते हैं।

क. क्योंकि यह दूसरे के जीवन को बदलता है 2 तीमुथियुस 3:14ब

क्योंकि तुम उन्हें जानते हो जिनसे तुमने यह सीखा है,

ख. क्योंकि आप इसकी कीमत जानते हैं 2 तीमुथियुस 3:15क

15 और कैसे बचपन से आप पवित्र शास्त्रों को जानते हैं (मुख्य विचार = जानें)

ग. क्योंकि इसने आपके जीवन को बदल दिया 2 तीमुथियुस 3:15ब

जो आपको मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा उद्धार के लिए बुद्धिमान बना सकते हैं। (मुख्य विचार =करें)

III. परमेश्वर के वचन से लैस हो जाओ 2 तीमुथियुस 3:16-17

16 सब पवित्र शास्त्र परमेश्वर का फूँका साँस है,और सिखाने, ताड़ना देने, सुधारने और धार्मिकता का प्रशिक्षण देने के काम करता है।

17 ताकि परमेश्वर का भक्त सब प्रकार के भले कामों के लिए सुसज्जित व लैस हो जाए।

क. पवित्रशास्त्र परमेश्वर की ओर से है 2 तीमुथियुस 3:16क

16 सारा पवित्र शास्त्र परमेश्वर का फूँका साँस है

ख. पवित्रशास्त्र हमें सुसज्जित व लैस करता है 2 तीमुथियुस 3:16ख-17 .

और सिखाने, ताड़ना देने, सुधारने और धार्मिकता का प्रशिक्षण का काम करता है।

1. शिक्षण द्वारा
2. ताड़ना से
3. सुधारने से
4. धार्मिकता का प्रशिक्षण देकर

निष्कर्ष

ग . संदेश का मुख्य भाग

अब जबकि वक्ता जानता है कि उसका मुख्य विचार क्या है और संदेश कैसे विकसित और प्रवाहित होगा, संदेश का मुख्य भाग पूरी तरह से विकसित होना चाहिए। आमतौर पर यह तब किया जाता है जब रूपरेखा बनाई और लिखी जाती है, लेकिन अगर यह पूरी नहीं हुई है, तो अब यह सुनिश्चित करने का समय है कि यह पूरी तरह से विकसित हो।

1. वचन का अधिकार

हमारे पास आपना कोई अधिकार नहीं है। हमारा अधिकार परमेश्वर के वचन से आता है। इसलिए हमें उसके वचन की शिक्षण करना है, ना कि अपने सुझावों या विचारों को। हम जो कुछ भी कहते हैं वह पवित्रशास्त्र से आना चाहिए। अपने श्रोताओं को यह दिखाने से उन्हें विश्वास होता है कि हम जो कहते हैं वह सच है। यह उन्हें यह सुनिश्चित करने के महत्व को भी दिखाता है कि वे जो कुछ भी मानते हैं वह पवित्रशास्त्र से ही आता है। मैं अपनी सभी पुस्तकों में जो कुछ भी कहता हूं, उसके लिए पवित्रशास्त्र के हवालों को शामिल करने का प्रयास करता हूं ताकि पाठक यह जान सके कि यह परमेश्वर बोल रहा है, मैं नहीं।

जब आप किसी हिस्से का प्रचार या उपदेश करते हैं, तो आप जो कह रहे हैं उसका समर्थन करने के लिए अन्य शाश्त्रों का हवाला देना अच्छा होता है। ऐसा ही पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों के काम 2:14-10 में किया। उसने एक प्रारंभिक बयान दिया (प्रेरितों के काम 2:15) फिर योएल 2:28-32 (प्रेरितों 2:16-21) का हवाला देते हुए इसका समर्थन किया। इसके बाद उसने प्रेरितों के काम 2:22-24 में एक और बयान दिया और भजन सहिता 16:8-11 (प्रेरितों 2:25-28) का हवाला देते हुए उसका समर्थन किया। उसने एक तीसरा बिंदु बनाया (प्रेरितों के काम 2:29-33) और इसका समर्थन करने के लिए भजन संहिता 110:1 का हवाला दिया (प्रेरितों के काम 2:34-35)। अंत में, उसने अपना निष्कर्ष निकाला (प्रेरितों के काम 2:36-40)। वह जानता था कि उसके श्रोताओं को उसके शब्दों पर विश्वास करने के लिए अधिकार की आवश्यकता है, और पुराने नियम का हवाला देना वह अधिकार था जिसे वह मानते थे । पौलुस जो कुछ भी कहता था उसका समर्थन करने के लिए पवित्रशास्त्र का उपयोग करता था । पिसिदिया के अन्ताकिया में (प्रेरितों के काम 13:13-43) पौलुस यीशु के पुनरुत्थान के बारे में बात कर रहा था। उसने जो कहा उसका पुराने नियम के साथ समर्थन किया। वह उसका अधिकार था। यीशु के पुनरुत्थान के बारे में बताने के बाद (प्रेरितों 13:332-33क) पौलुस ने भजन संहिता 2:7 (प्रेरितों 13:33ब) का हवाला देते हुए इसका समर्थन किया। वह पुनरुत्थान के बारे में अपने दावे को दोहराता है (प्रेरितों के काम 13:34क) और यशायाह 55:3 (प्रेरितों 13:34ब) और भजन संहिता 16:10 (प्रेरितों 13:35) के साथ इसका समर्थन करता है। फिर वह इन हिस्सों की व्याख्या करता है और उन्हें यीशु पर लागू करता है (प्रेरितों के काम 13:36-37)। वह उन्हें यीशु पर विश्वास करने के लिए चुनौती से बात समाप्त करता है (प्रेरितों के काम 13:38-40)। अंत में, वह एक अंतिम हिस्से , हबक्कूक 1:5 का एक चेतावनी के रूप में हवाला देता है यदि वे विश्वास नहीं करते हैं (प्रेरितों के काम 13:41)।

यहाँ तक कि यीशु ने भी ऐसा ही किया था। अपनी शिक्षाओं में उसने व्यवस्थाविवरण 8:3 (मत्ती 4:4; लूका 4:4), व्यवस्थाविवरण 6:3 (मत्ती 4:10; लूका 4:8), यशायाह 61:1-2 (लूका 4:17-19) का हवाला दिया । , (निर्गमन 20:13) (मत्ती 5:21), (निर्गमन 20:14) (मत्ती 5:27), व्यवस्थाविवरण 24:1-4 (मत्ती 5:31), लैव्यव्यवस्था 19:12 (मत्ती 5:33), निर्गमन 21 :23-25 (मत्ती 5:38), होशे 6:6 (मत्ती 9:131), मीका 7:6 (मत्ती 10:35-36), मलाकी 3:1 (मत्ती 11:10), यशायाह 6:9 -10 (मत्ती 13:14), और पुराने नियम के बीस अन्य हिस्सों का भी। जब भी संभव हुआ उसने पुराने नियम के अधिकार का उपयोग उसका समर्थन

करने के लिए किया जो वह कह रहा होता था । जिस प्रकार मैं यीशु, पतरस और पौलुस को पवित्रशास्त्र के उदाहरण के रूप में और अपने अधिकार को आपको यह बताने के लिए उपयोग करता हूं, वैसे ही आपको अपने श्रोताओं से जो कुछ भी कहना है, उसके लिए आपको पवित्रशास्त्र का उपयोग करना चाहिए।

नए नियम की प्रत्येक पुस्तक कथनों और शिक्षाओं के समर्थन के रूप में पुराने नियम के अंशों का हवाला देती है। एकेले इब्रानियों की पुस्तक में पुराने नियम के 86 पद हैं। प्रकाश्त्वाक्य में 249 पुराने नियम के आयतों का हवाला देता है। कुल मिलाकर, नए नियम में पुराने नियम के लगभग 850 आयतें हैं। यह टोटल यहुना के सुसमाचार के आकार के बराबर है। यह नए नियम की 3 पुस्तकों को छोड़कर सभी से अधिक है। स्पष्ट रूप से, पुराने नियम को अधिकार के रूप में उपयोग करना नए नियम के वक्ताओं और लेखकों के लिए महत्वपूर्ण था। अब हमारे पास उपयोग करने के लिए संपूर्ण नया नियम भी है!

इसलिए, हमारे उपदेश और शिक्षा को केवल परमेश्वर के वचन पर आधारित और इससे समर्थित होना चाहिए। यह हमारा एकमात्र अंतिम, पूर्ण अधिकार है और हम जो कुछ भी कहते हैं वह उसके प्रति सत्य होना चाहिए।

2. यीशु के प्रचार से उदाहरण

एक उत्तम संचारक के रूप में यीशु से बेहतर कोई उदाहरण नहीं है। हम अपने संदेशों को उसके अनुरूप ढालने को छोड़ किसी तरह बेहतर नहीं कर सकते। उसके संदेश, विचार की स्पष्ट प्रगति, और रूपरेखा पर आधारित होते थे।

जब हम यीशु का बोलना देखते हैं, तो हम कर कुछ नहीं सकते, लेकिन देखतें है कि यीशु अक्सर अपनी बात लम्बी करके लोगों को चौंका देता हैं: हमें अपनी आँखें फाड़नी चाहिए या अपने हाथ काटने चाहिए यदि वे हम से पाप करातें हैं (मत्ती 5: 29-30); जो लोग दूसरों का न्याय करते हैं उनकी आंखों में लट्ठा होता है (मत्ती 7:3-5); उसके अनुयायियों को उसका अनुसरण करने के लिए अपने परिवारों से घृणा करनी चाहिए (लूका 14:26)। यह कथन शाब्दिक रूप से लिया जाने के लिए नहीं थे, लेकिन उसने वास्तव में श्रोताओं का ध्यान खींचा और आपनी बात पर जोर दिया।

जब यीशु ने बात की तो उसने आकर्षक तरीके से बातें कही ताकि लोग याद रखें कि उसने क्या कहा था। इन्हे हमारी व्याख्याओं में देखना हमेशा आसान नहीं होता है, लेकिन जिस भाषा में यीशु बात करता था उसमें स्पष्ट है। उदाहरण के लिए, यीशु ने यादगार रूप से कहा, "दोष मत लगाओ और तुम पर दोष नहीं लगाया जाएगा; निंदा मत करो, और तुम्हारी भी निंदा नहीं होगी ; क्षमा करों, और तुम्हे भी क्षमा किया जाएगा; दो, और तुम्हें भी दिया जाएगा।" (लूका 6:37-38अ)। एक और महान उदाहरण -सुनहरा नियम है (लूका 6:31)। यदि आप यीशु की तरह प्रचार करना चाहते हैं, तो याद रखने योग्य भाषण तैयार करें।

एक बयान देने के बजाय, यीशु अक्सर अपने श्रोता से उत्तर के बारे में सोचने के लिए एक प्रशन पूछता था । इस तरह एक श्रोता सोचने, उत्तर की तलाश करने ; और फिर सच्चाई को समझने के लिए इसे अधिक समय तक याद रखने के लिए मजबूर हो जाता। उदाहरण के लिए मत्ती 16:26, या 22:20-21 को देखें। जब आप बोलते हैं, तो अपने श्रोताओं से कभी-कभार एक प्रशन पूछें ताकि वे आपके द्वारा दिए जा सकने वाले किसी भी उत्तर को ध्यान से सुनते हुए सोचते रहें।

दोहराना एक और उपकरण है जिसका यीशु इस्तेमाल करता था । उसने वही प्रमुख विषयों को बार-बार सिखाया। उदाहरण के लिए, यीशु ने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में बार-बार बात की (मरकुस 8:31; 9:31; 10:33-34 - कम से कम सात बार), और शिष्यों को अभी भी यह समझ नहीं आया। कभी -कभी लोगों को पूरी तरह से किसी बात को गहराई से समझने से पहले कई बार सुनने की जरूरत होती है। बार-बार सिखाई गयी बातें याद की गई बातें बन जाती हैं। हालाँकि, उन्ही बिंदुओं को दोहराते हुए एक ही पाठ तक पहुँचने के अलग अलग तरीके ढूंढे।

हर कोई एक अच्छी कहानी सुनना पसंद करता है, और यीशु इतना महान शिक्षक था, क्योंकि वह हमेशा आसानी से समझने वाले तरीके से आध्यात्मिक सत्य को चित्रित करने के लिए कहानियाँ, या दृष्टान्त (मरकुस 4:34) बता रहा होता था ताकि लोग उसके सबक याद रखें और उन्हें अपने जीवन में लागू करने में सक्षम बने। उड़ाऊ पुत्र के दृष्टान्त के बारे में सोचें (लूका 15:11-32)। यीशु यह घोषणा कर सकता था, "परमेश्वर तुमसे इतना प्रेम करता है कि वह तुम्हारा स्वागत उसके पास वापस जाने पर करेगा चाहे तुम कितनी ही दूर क्यों न चले गए हो।" यह निश्चित रूप से सच है। हालाँकि, यीशु इसके बजाय एक लड़के की कहानी बताना अच्छा समझता है, जिसने अपने परिवार को त्याग दिया, अपनी विरासत को अलग कर दिया, दया की भीख माँगने के लिए घर आया, और आश्चर्यजनक रूप से आपने पिता को खुले हाथों से उसका स्वागत करते देखता है, जो उसकी वापसी के लिए प्रतिदिन प्रतीक्षा करता था। अधिक प्रभावी/शक्तिशाली कौन सा है?

यीशु ने संवाद करने के लिए भौतिक पाठों का भी उपयोग किया: उसने सेवकों को नेतृत्व सिखाने के लिए शिष्यों के पैर धोए (यूहन्ना 13:3-17); उसने बच्चे के समान विश्वास पर चर्चा करने के लिए एक छोटे बच्चे को अपने पास बुलाया (मत्ती 18:1-4); उसने एक विधवा को मंदिर की भेंट में दो छोटे सिक्के गिराते हुए देखने के बाद निस्वार्थ देने का वर्णन किया (मरकुस 12:41-44)। जब उसने बोने वाले का दृष्टान्त सुनाया, तो वह शायद उस खेत की ओर देख रहा था जहाँ एक आदमी बीज बो रहा था (मत्ती 13:1-9)।

जब मैं बोलता हूं तो मैं व्यक्तिगत रूप से भौतिक पाठों का उपयोग करना पसंद करता हूं क्योंकि लोग केवल सुनने के बजाय किसी चीज को देखने पर तीन गुना ज्यादा याद करते हैं। जब मैं परमेश्वर के पवित्र आत्मा से भरे होने की बात करता हूँ तो मैं एक दस्तानों का उपयोग करता हूँ। उद्धार के समय मेरी मुट्ठी (पवित्र आत्मा) दस्ताने में चली जाती है, लेकिन दस्ताना केवल हाथ से भर जाता है जब हम उसे आपने जीवन के हर क्षेत्र पर नियंत्रण करने की अनुमति देते हैं। यह मेरी सारी उँगलियों को दस्तानों की उँगलियों में डालकर पूरी तरह से भरने जैसा है। मैं जो कला करतब करता हूं वह दृश्य सबक होता हैं जिन्हें लोग याद करते हैं। रचनात्मक बनें और उन तरीकों के बारे में सोचें जिनमें आप वस्तुओं का उपयोग करके जो सच कह रहे हैं उसे अधिक समझने योग्य और यादगार बना सकते हैं।

3. सुसमाचार को शामिल करें

प्रत्येक संदेश या पाठ में, मुख्य विचार चाहे जो भी हो, यीशु को किसी न किसी समय और किसी न किसी रूप में परमेश्वर के लिए एकमात्र मार्ग के रूप में महिमा दी जानी चाहिए। सुसमाचार एक खुशखबरी है (मत्ती 4:23; 9:35) और इसे हर संदेश का हिस्सा होना चाहिए। हर बार जब आप बोलते हैं तो कोई सुन रहा होगा जिसने यीशु में अपना विश्वास नहीं रखा है, या एक मसीही जिसे उसके विश्वास की पुष्टि करने की आवश्यकता है। इसे न केवल अंत में टांग दे, बल्कि इसे संदेश के रेशे रेशे में भर दें । इसका लंबा और विस्तृत होना जरूरी नहीं है, लेकिन हर संदेश में कुछ ऐसा होना चाहिए जिसे परमेश्वर का आत्मा किसी भूखी या प्यासी आत्मा को उसके पास लाने के लिए उपयोग कर सके। यीशु के द्वारा उद्धार के मार्ग की ओर कुछ इशारा करना चाहिए।

घ- परिचय

जब आपको पता हो कि आपका संदेश वास्तव में क्या होगा और आप अपने मुख्य विचार के बारे में सुनिश्चित हैं, तो आप अपने संदेश को पेश करने के तरीके को अंतिम रूप दे सकते हैं। संदेश को सही स्थान तक पहुँचाने के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है, जैसा कि एक तीर की नोक होती है। जब मेरा बेटा तीर चलाता है, तो नोक का वजन ईसे सीधा उड़ने में मदद करता है और तेज नोक उसे लक्ष्य में चिपका देती है। उपदेश का परिचय उस दिशा में रुख करता है जिस दिशा में आप जाना चाहते हैं, लोगों का ध्यान आकर्षित करता है, और उन्हें इस बात के महत्व को देखने में मदद करता है कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं ताकि वे बेहतर ढंग से सुन सकें। मैं उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए अपने जीवन में से एक घटना, इतिहास से एक उदाहरण, प्रकृति से एक सादृश्य, एक कहानी या एक वर्तमान घटना का उपयोग करना पसंद करता हूं। हमारे शुरुआती शब्द सही बिंदु पर होने चाहिए और सही स्थान पर पहुँचने चाहिए।

परिचय में आपको अपने श्रोताओं के साथ पहचान बनाने की आवश्यकता है ताकि वे जान सकें कि आप उनकी परवाह करते हैं और केवल उन्हें भाषण नहीं दे रहे हैं और उन्हें नीचा नहीं देख रहे हैं। पौलुस ने ऐसा तब किया जब उसने यहूदियों को "हमारे" पूर्वजों के रूप में संदर्भित करते हुए बात की (प्रेरितों के काम 13:17)। एथेंस में उसने लोगों को बहुत धार्मिक होने के लिए बधाई दी (प्रेरितों के काम 17:22)। लोगों के साथ अपनी पहचान बनाकर, उसने जो कहा, उसमें उनके विश्वास और रुचि का आश्वासन था।

वक्ताओं के रूप में हम अक्सर डरते हैं कि लोग हमारी बात सुनना बंद कर देंगे। हालाँकि, इससे भी बुरा यह है अगर वे पहली बात से ही सुनना शुरू नहीं करते हैं । ऐसा लग सकता है कि वे सुन रहे हैं, लेकिन उनके विचार दूर हो सकते हैं। वक्ताओं को अपनी आवाज में विश्वास के साथ शुरुआत करनी चाहिए और लोगों से सीधे नजरें मिलाना चाहिए। इसलिए आपको अपना परिचय , शब्द दर शब्द, लिख लेना चाहिए और इसे याद रखना चाहिए ताकि आप इसे आत्मविश्वास और ध्यान के साथ बोल सकें। याद रखें, आपको आपना प्रथम अच्छा प्रभाव बनाने का दूसरा मौका कभी नहीं मिलता है।

उदाहरण के लिए, मैं ऊपर मरकुस 5 पर अपना उपदेश यह कहकर शुरू कर सकता था कि "यीशु का दुष्टात्माओं के साथ अधिक संपर्क था और बाइबल में किसी की भी तुलना यीशु ने उनके बारे में जो बोला सबसे अधिक था।" यह विषय का परिचय देगा और सभी का ध्यान आकर्षित करेगा। या मैं एक व्यक्तिगत कहानी के साथ शुरू कर सकता हूं: "आप विश्वास नहीं कर सकते कि मेरे साथ क्या हुआ / जिसे मैं हाल ही में जानता हूं! मैं शायद ही खुद इस पर विश्वास करता हूं।" या यह हो सकता है "कुछ लोग राक्षसों में विश्वास नहीं करते हैं, अन्य लोग उनसे डरते हैं और यहां तक कि कई लोग उनकी पूजा करते हैं। मसीही होने के नाते हम जानते हैं कि वे वास्तविक हैं, लेकिन हम उनके प्रभाव से मुक्त होने के लिए क्या कर सकते हैं?" इनमें से कोई भी बात लोगों की रुचि प्राप्त करेगी और उन्हें और अधिक सुनने के लिए दिलचस्पी लेने के लिए प्रेरित करेगी।

अपने परिचय के साथ रचनात्मक बनें। इसे छोटा रखें लेकिन बात तक। इसे लिखें ताकि आपको प्रत्येक शब्द सही लगे। इसे याद रखें ताकि आप आत्मविश्वास से शुरु कर सकें और सभी का ध्यान आकर्षित कर सकें। यह केवल एक वाक्य है, लेकिन यह शेष संदेश के लिए राग सेट करता है।

ङ- संक्रमण/बदलाव

संदेश में एक विषय से दूसरे विषय में सहज परिवर्तन करने के लिए एक अच्छे संक्रमण की आवश्यकता होती है। जब एक जन कार चला रहा होता है और दूसरे के पीछे होता है, तो यह बहुत आसान होता है यदि आगे चलने वाली कार मोड़ से पहले संकेत देती है, धीमी गति से आपने पीछे आ रही कार को मोड़ने से अपने साथ रहने देती है, फिर तेज गति पे आती है । यदि वो ऐसे नहीं करती तो दूसरी कार आसानी से गुम हो सकती है। बोलने में भी ऐसा ही है। अपने श्रोताओं को स्पष्ट रूप से एक बिंदु से दूसरे पर ले जाना, जो आपने कहा है उस पर निर्माण करना और फिर आगे बढ़ना, उपदेश की तैयारी का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है। उन्का धयान ना खोएं, सुनिश्चित करें कि वे अंत तक आपके साथ हैं। ये परिवर्तन इतने महत्वपूर्ण हैं कि जब तक आप अनुभव प्राप्त नहीं कर लेते, तब तक आपको इन्हें शब्द दर शब्द लिखना चाहिए। फिर भी आपको इस बारे में एक नोट बनाने की जरूरत है कि आप अपनी रूपरेखा में कैसे बदलाव करेंगे। मार्क 5 पर मेरे उपदेश से संक्रमण का मेरा उदाहरण आपको बदलाव के कार्य और महत्व को समझने में मदद करेगा।

च-उदारण

आपका संदेश या पाठ लगभग पूरा हो चुका है, लेकिन एक बहुत ही महत्वपूर्ण कदम बाकी है - उदाहरण या उदाहरण को जोड़ना। हो सकता है कि आप ऐसा कर रहे हों क्योंकि आपने अपने उपदेश पर काम कीया है, लेकिन अब समय है कि आप इसे देखें और सुनिश्चित करें कि आपके पास प्रमुख बिंदुओं के उपयुक्त उदाहरण हैं - ना बहुत अधिक और ना ही बहुत कम। एक अच्छी कहानी बताना या एक स्पष्ट उदाहरण का उपयोग करना आप जो कह रहे हैं उस पर प्रकाश डालता है, जैसे कि एक खिड़की का खोलना एक अंधेरे कमरे में रोशनी देता है ताकि अस्पष्ट चीजें आसानी से देखी जा सकें। इसलिए अपने पाठ को "प्रकाश" करने के लिए कहानी बताने में अपने कौशल का अभ्यास करें और इसे विकसत करें।

वस्तुओं को चित्र-उदारण के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। परमेश्वर ने तम्बू को एक सुंदर शिक्षण उपकरण के रूप में इस्तेमाल कीया क्योंकि यह व्यावहारिक रूप से उन धार्मिक सत्यों को दिखाता था जिन्हें वह व्यक्त करने का प्रयास कर रहा था। बलिदान प्रणाली, याजकों की पोशाक और कर्तव्य और कई यहूदी रीति-रिवाज सभी को स्पष्ट रूप से उन सत्यों को दिखाना था जिन्हें परमेश्वर उन्हें समझाना चाहता था। बाइबल में वक्ताओं और लेखकों ने अपने संदेश को व्यक्त करने में मदद के रूप कई दृष्टांतों और वस्तुओं का उपयोग किया।

दृष्टांतों का उपयोग एक बिंदु को स्पष्ट करने के लिए किया जा सकता है (जैसे खोए हुए सिक्के और भेड़ के, यीशु के दृष्टान्त), पाप का दोषी (नाथन के द्वारा दाऊद को धनी व्यक्ति के बारे में जो गरीब आदमी की मात्र एक भेड़ भी ले गया था), श्रोताओं को कार्रवाई के लिए प्रेरित करता है (जैसे उड़ाऊ पुत्र या नेक सामरी के दृष्टान्त), और सत्य को और अधिक स्मरणीय बनाते हैं (सुई की आंख से गुजरते हुए, एक आंख को बाहर निकालना, आदि)।

हालांकि, प्रभावी होने के लिए, एक उदाहरण को उस सच्चाई से मेल खाना चाहिए जो वह बता रहा है जैसे कपड़ों का एक अच्छा टुकड़ा उस व्यक्ति पर फिट बैठता है जो इसे खरीदता है। यह बहुत लंबा नहीं होना चाहिए और ना ही अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने वाला होना चाहिए, बल्कि आपके मुख्य बिंदु को बढ़ाने वाला होना चाहिए।

एक संदेश में बहुत सारे चित्र-उदारण गड़बड़ पैदा कर देंगे। एक उदाहरण एक बिंदु पर जोर देता है, और केवल कुछ बिंदुओं पर ही जोर दिया जा सकता है। यदि आप बहुत अधिक जोर देने की कोशिश करते हैं, तो वास्तव में कुछ भी अलग नहीं होगा।

चित्र-उदारण छोटे हो सकते हैं, यहाँ तक कि एक साधारण शब्द भी। यीशु को चरवाहा कहना केवल एक शब्द ही एक चित्र बना देता है । अपने बारे में बहुत सारे दृष्टांतों का उपयोग करने के बारे में सावधान रहें, विशेष रूप से वे जो आपका विकास करते हैं, क्योंकि धयान का केंद्र वक्ता पर नहीं बल्कि संदेश पर होना चाहिए।

आप बाइबलऔर दैनिक जीवन में कहानियाँ और उदाहरण पा सकते हैं। समाचार घटनाएँ, विज्ञान, इतिहास, आपके द्वारा सुने गए अन्य उपदेश, आपके द्वारा पढ़ी गई पुस्तकों की सामग्री या आपके द्वारा देखी जाने वाली फिल्में, खेल, हास्य, कविता या चर्च के इतिहास की घटनाएं और लोग सभी अच्छे चित्र-उदारण के स्रोत हैं। रोजमर्रा की जिंदगी में उनकी तलाश करें। उन्हें लिख लें ताकि जरूरत पड़ने पर आप उन्हें याद कर सकें। यदि आपके पास कंप्यूटर तक पहुंच है, तो हजारों मुफ्त चित्र-उदारण ऑनलाइन मिल सकते हैं।

ङ- संदेश का समापन

1. एक अच्छा निष्कर्ष

निष्कर्ष का भी उतना ही महत्व है । अंतिम शब्द आमतौर पर सबसे लंबे समय तक याद किए जाते हैं: एक मरने वाले व्यक्ति के अंतिम शब्दों का महत्व; किसी गीत, पुस्तक या फिल्म के अंतिम शब्द। यही एक उपदेश की भी सचाई है। निष्कर्ष हर चीज को एक साथ एक साफ पैकेज में बांधता है ताकि श्रोता एक बार फिर इसका पुनर्विचार कर सकें। कोई नई सामग्री नहीं जोड़ी जा सकती है, केवल आप जो चाहते हैं वह जाने और जो चाहते हैं वह करें, इसका एक छोटा पुनर्विचार उन्हें परिचय में वापस लाता है और पूरे संदेश को एक इकाई में जोड़ता है।

मुख्य विचार को एक बार फिर से प्रकाशित करने के लिए पुर्नविचार, एक उपयुक्त उदाहरण या कहानी उचित है। मैं आमतौर पर निष्कर्ष के लिए मुख्य बिंदु का अपना सबसे अच्छा उदाहरण छोड़ देता हूं। मैं परिचय के लिए अपने दूसरे सर्वश्रेष्ठ का उपयोग करता हूं।

अपने निष्कर्ष को लिखना भी अच्छा हो सकता है, विशेष रूप से अंतिम वाक्य, ताकि आप भी स्पष्ट रूप से आँख से संपर्क करके आत्मविश्वास से समाप्त कर सकें। एक वक्ता का अजीब या अचानक समाप्त होना वह सब कुछ छीन सकता है जो पहले कहा जा चुका है; और एक उपदेश जो चलता रहता है और जो भी लाभकारी प्रभाव पहले मौजूद था उसे खो देता है। तो अपने निष्कर्ष को कसकर केंद्रित रखें और एक अच्छी लंबाई रखें।

2. सार्वजनिक या निजी आमंत्रण

कुछ कलीसियाएँ किसी के लिए भी एक सार्वजनिक निमंत्रण के साथ सभा समाप्त करती हैं, जो यीशु में अपना विश्वास रखना चाहते हैं, उन्हें प्रार्थना के लिए चर्च के सामने आने के लिए या प्रार्थना के माध्यम से लोगों की अगुवाई करने के लिए कहते हैं, जैसे वे बैठे होते हैं। कुछ इसे हर हफ्ते करते हैं, दूसरे बस समय-समय पर। जबकि यीशु के लिए एक सार्वजनिक कदम लेना प्रत्येक विश्वासी के लिए महत्वपूर्ण है,

ऐसा करना जरूरी इस लिए नहीं कि यह उद्धार के लिए यीशु में विश्वास करने के लिए आवश्यक है। सार्वजनिक रूप से सामने आना कुछ लोगों के लिए एक व्याकुलता हो सकती है, और यह मुद्दा वास्तव में व्यक्ति और केवल परमेश्वर के बीच का है। दूसरों को यह विचार मिल सकता है कि चर्च में आगे बढ़ने से उन्हें मुक्ति मिलती है और यह महसूस नहीं करते कि यह वास्तव में यीशु में आंतरिक विश्वास से प्राप्त होती है। साथ ही, एक समापन आमंत्रण ना केवल उद्धार के लिए होना चाहिए, बल्कि हर किसी के लिए एक चुनौती होनी चाहिए जो इस आधार पर हो कि आप उन्हें जो वे अब जानते हैं उसे क्या करना चाहते हैं । एक संदेश के बाद उद्धार के लिए सार्वजनिक आमंत्रण में निश्चित रूप से कुछ भी गलत नहीं है, जब तक कि इसका उद्देश्य सभी को स्पष्ट रूप से समझ में आता है। लेकिन हर हफ्ते यह जरूरी भी नहीं है।

3. प्रार्थना में समापन

प्रार्थना में संदेश को बंद करना बहुत महत्वपूर्ण है। आप यहां जो प्रार्थना करते हैं वह महत्वपूर्ण है और आपके उपदेश के निष्कर्ष के समान होना चाहिए, कहानी या उदाहरण को छोड़कर। इसे लिखें या इसकी रूपरेखा तैयार करें ताकि आप प्रार्थना को उसी विचार के साथ रख सकें जिस पर उपदेश दिया गया है। यह प्रार्थना लोगों को परमेश्वर के साथ बातचीत करने और अभी प्राप्त सबक से पवित्र आत्मा की शिक्षा को सुनने के लिए प्रेरित करने के लिए है।

आपका संदेश अब पूरा हो गया है और वितरित होने के लिए तैयार है। अच्छे कार्य के लिए बधाई, शाबाश!

III. संदेश देना

अब जब आप ने अपने संदेश को पूरा कर लिया है और यह कागज पर तैयार है, तो अगला कदम इसे अपने श्रोताओं तक इसे मौखिक रूप से देना है। यदि आप कोई पुस्तक या लेख लिख रहे थे, तो आप यहाँ तक ठीक उन्हीं चरणों का पालन करेंगे, लेकिन शब्दों को बोलने के बजाय आप उन्हें लिखेंगे। आप बोलते हैं और लोग सुनते हैं, यह उतना ही सरल है जितना दिखाई देता है। लेकिन यहां तक कि एक अच्छी तरह से लिखा गया उपदेश भी अनुचित तरीके से दिए जाने से बर्बाद हो सकता है जो इसे उस तरह से प्राप्त किये जाने में बाधा डाल सकता है जैसे इसे प्राप्त किया जा सका होता । यह एक अच्छे तैयार किये गए भोजन को पकाने, लेकिन फिर इसे बे ढंगे तरीके से परोसने जैसा है। जब भोजन आकर्षक रूप से परोसा जाता है तो लोग अधिक खाते हैं और इसका बेहतर आनंद लेते हैं।

क- वक्ता बोलता है

1. अच्छे वितरण का महत्व

मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से, एक अच्छा उपदेश लिखना इसे पेश करने से ज्यादा स्वाभाविक तौर से आता है। मेरे शुरुआती दिनों में मेरा बोलना बहुत कमजोर था । यह सपाट, अरोचक और अक्सर लोगों को सुनने के लिए बहुत सुस्त सा होता। मेरी कमजोर पेशकश मेरा अच्छा संदेश खराब कर देती । इसलिए, मैं अपनी पूरी सेवकाई में अपने संदेश देने पर काम कर रहा हूं। मैं स्वाभाविक रूप से प्रतिभाशाली वक्ता नहीं हूं, लेकिन मैंने कुछ चीजें सीखी हैं जिस से मेरा सन्देश देना सुनने वालों को अधिक प्रसन्न करती हैं। मैं उन्हें आपके साथ साझा करना चाहता हूं।

पतरस इस बात में मेरे विपरीत था, वह एक स्वाभाविक वक्ता था। अन्य सभी शिष्यों की तुलना में उस के शब्द सुसमाचारों में अधिक दर्ज हैं! उसे जो कुछ कहना होता था वह उस पर बहुत आताम्विश्वासी दिखाई देता था : निडरता से, स्पष्ट रूप से और जोर से बोलता ताकि हर कोई उसे सुन सके (प्रेरितों के काम 2:14)। पतरस की आवाज़ दमदार थी (प्रेरितों के काम 2:40)। वह अपने संदेश के महत्व को जानता था, और यह भी कि कई लोग इसे अस्वीकार कर देंगे। उसका सन्देश देना व्यक्तिगत था, जिसमें सीधे आँख से संपर्क और सुनने वालों के लिए व्यावहारिक अनुप्रयोग होता था (प्रेरितों के काम 2:22, 29, 36)। वह पवित्र आत्मा से भर हुआ था, और निडरता, बुद्धि और संवेदनशीलता के साथ बोलता था (प्रेरितों के काम 2:4;4:8)।

2. अच्छे वितरण के लिए उपयोगी सुझाव

चूँकि मैं स्वाभाविक रूप से एक ऐसा व्यक्ति नहीं हूँ जो बहुत अधिक बोलता है और बहुत सारी भावनाएँ दिखाता है, मुझे अपने प्रचार के इस हिस्से पर काम करना पड़ा है ताकि मैं अपने द्वारा तैयार किए गए उपदेश को बेहतर ढंग से व्यक्त कर सकूं। मैं शर्मीला हूँ और दूसरों से बात करते समय आत्म-विवेक महसूस करता हूँ। एक बेहतर वक्ता बनने के लिए, मुझे आपने खुद के और दूसरों के विचारों से अपने आप को दूर रखना होगा। उपदेश मेरे बारे में नहीं है, यह परमेश्वर के सत्य के बारे में है जैसा कि उसके वचन में प्रकट किया गया है। मैं केवल वह साधन हूं जिसका वह उपयोग करता है। मैं उस पाइप की तरह हूं जो अपने स्रोत से उन लोगों तक बहुत जरूरी पानी पहुंचाता है जिन्हें इसकी जरूरत है। धयान पाइप पर नहीं बल्कि पानी पर केंद्रित हो । प्रार्थना और सच्चाई पर ध्यान केंद्रित करके मैं जरूरतमंद लोगों को बता रहा हूं, मैं अपना ध्यान खुद से दूर रखने में सक्षम हूं और इसलिए प्रचार का बेहतर काम करता हूं।

हो सकता है कि आप एक स्वाभाविक वक्ता हों जो समूह के सामने रहना पसंद करते हैं और आसानी से उनका ध्यान आकर्षित कर सकते हैं। यह एक उपहार है जिस के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए ; हालाँकि, बोलने का उद्देश्य ध्यान आकर्षित करना या मनोरंजन करना नहीं है, यह परमेश्वर की सच्चाई को व्यक्त करना है। अपने लिए ध्यान आकर्षित करने के लिए सार्वजनिक बोलने के प्रलोभन से सुचेत रहें। लोगों की प्रशंसा पर ध्यान केंद्रित ना करें, बल्कि बाइबल की सच्चाई पर ध्यान दें। काश हम कभी भी परमेश्वर के वचन का उपयोग करके उसकी बजाय स्वयं पर ध्यान केंद्रित कराने के लिए और इस तरह उसकी महिमा को चुराने के दोषी कभी ना ठहरें।

इन वक्ताओं को जिस दूसरे खतरे से बचना चाहिए, वह यह है कि वे आमतौर पर अध्ययन और उपदेशों को एक साथ रखने में स्वाभाविक रूप से अनुशासित नहीं होते हैं। वे परमेश्वर की बातों के बजाय संदेश के लिए अपनी बोलने की क्षमता का उपयोग कर सकते हैं। उन्हें अच्छे, अच्छे, बाइबल के संदेशों को विकसित करने के लिए कड़ी मेहनत करना सीखना चाहिए ताकि लोग सीखें और बढ़ें, और फिर बोलते समय अपना ध्यान खुद से हटा कर रहें।

सभी वक्ताओं के लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम स्वयं पर नहीं, बल्कि परमेश्वर की सच्चाई पर ध्यान केंद्रित करें। लोगों के साथ सीधा संपर्क महत्वपूर्ण है। इसलिए आपको उपदेश के मुख्य भाग जैसे परिचय, परिवर्तन और निष्कर्ष को याद रखना चाहिए ताकि आप लोगों के साथ आँख -संपर्क कर सकें। जब आप ऐसा करते हैं तो वे अधिक ध्यान से सुनते हैं।

जब मैं बोलता हूं, तो मैं कुछ ऐसे लोगों को देखना पसंद करता हूं जिनका मुझे पता है कि जो मैं कहने वाला होता हूँ, उसके लिए भूखे हैं और ध्यान से सुन रहे हैं। यह मुझे पूरे समूह के बजाय अलग-अलग लोगों से बात करने में मदद करता है। वास्तव में, मैं अक्सर इन लोगों के बारे में सोचता हूँ जब मैं उपदेश की तैयारी कर रहा होता हूँ। इससे मुझे एक उपदेश तैयार करने में मदद मिलती है, ना कि सिर्फ एक शिक्षण का भाषण। बेशक, मैं किसी एक व्यक्ति को नहीं देखता, बल्कि एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति की ओर देखता हूं। अक्सर मैं देखता हूं कि लोग ध्यान नहीं दे रहे हैं या सो रहे हैं, और कभी-कभी मेरा उदास ना होना मुश्किल होता है, लेकिन मैं जल्दी से उनके लिए एक मौन प्रार्थना करता हूं और कोशिश करता हूं कि उनकी ओर ना देखूं या उनके बारे में ना सोचूं।

याद रखें के मुस्कराहट से लोगों में दोस्ती की भावना का संचार होता है: अवमानना, क्रोध या आलोचना से नहीं। इसलिए इशारों और शरीरक संकेतों का उपयोग करें। यह अलग अलग चीजो को जोड़ती हैं और महत्वपूर्ण बिंदुओं पर जोर देती हैं, जिससे लोगों के लिए आपको समझना आसान हो जाता है। जैसा कि किसी भी अन्य चीज़ के साथ होता है, विविधता महत्वपूर्ण है, लेकिन बहुत अधिक इशारे या एक ही इशारे को बार-बार करने का उद्देश्य ना रखें। बहुत अधिक, या दोहराए जाने वाले, या गंभीर हावभाव बहुत विचलित करने वाले हो सकते हैं। शरीरक भाषा को देखें जो क्रोध या अस्वीकृति भी दिखाता है। अपने जीवनसाथी या मित्र से यह बताने के लिए कहें कि क्या ये चीजें हो रही हैं। हावभाव प्राकृतिक होने चाहिए, अपनी बाहों को कंधों से हिलाना चाहिए, कोहनी से नहीं। एक महत्वपूर्ण बिंदु पर जोर देने के लिए व्यापक, बड़े इशारों का उपयोग एक अच्छा तरीका है। याद रखें कि आपके हावभाव श्रोताओं से कहीं अधिक बड़े आपको लगते हैं।

जब आप उपदेश देते हैं या सिखाते हैं तो स्वाभाविक बनें, आप जो हो वही बनो , कोई अलग जन नहीं। पौलुस ने साहस और विश्वास के साथ पवित्र आत्मा की शक्ति से बात की (प्रेरितों के काम 13:9), जैसा कि पतरस ने किया था। हालाँकि, पौलुस का बोलने का तौर तरीका पतरस से भिन्न प्रतीत होता है। परमेश्वर ने आपको बनाया है और आप जैसे हैं वैसे ही आपका उपयोग करना चाहता हैं। किसी अन्य वक्ता के उपदेश देने की प्रतिलिपि बनाने या किसी और की तरह बनने के लिए परिवर्तन करने का प्रयास ना करें। आपका पूरा जीवन भी बोल रहा है, इसलिए सुनिश्चित करें कि आप जो उपदेश दे रहे हैं उसका अभ्यास कर रहे हैं! अच्छे पासबान और अच्छे पालन-पोषण करने वाले का यह पहला नियम है।

जब आप दूसरो को उपदेश देते हैं, तो याद रखें कि आप स्वयं को भी उपदेश दे रहे हैं। सुनिश्चित करें कि आप परमेश्वर की आराधना और स्तुति करते हैं, वैसे ही जैसे आप अपने लोगों को ऐसा करने के लिए प्रेरित करते हैं।परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको और आपके श्रोताओं को छूने के लिए संदेश का उपयोग करे। प्रचार करने से कई दिन पहले अपना संदेश अच्छी तरह से तैयार और पूरा कर लें, क्योंकि एक उपदेश जो जल्दी से एक साथ रखा जाता है, विशेष रूप से अंतिम समय में, वह भी काम नहीं आएगा। आप अंतिम समय में एक साथ फेंके गए भोजन की तुलना में योजनाबद्ध और तैयार किए गए भोजन के बीच अंतर बता सकते हैं। आपके श्रोता इस बारे में भी अंतर बता सकते हैं कि आप उन्हें क्या खिला रहे हैं। प्रचार करने से एक दिन पहले, या यहाँ तक कि जिस सुबह आप प्रचार करेंगे, उसका उपयोग उपदेश की समीक्षा करने के लिए करें, उस पर काम करने के लिए नहीं । फिर, जिस दिन आप बोलें, प्रार्थना करने और तैयारी करने के लिए सभा में जल्दी पहुंचें, और बोलने की बारी आने से पहले लोगों के साथ आराधना करें।

जब आप बोलते हैं, तो ऐसे शब्दों का प्रयोग करना याद रखें जिन्हें हर कोई आसानी से समझ सकता है, यहाँ तक कि बच्चे भी जो सुन रहे हैं। परमेश्वर के वचन के साथ लोगों को बोर करना या भ्रमित करना

क्या ही शर्म की बात है! मसीही शब्दों का प्रयोग उन्हें समझाए बिना ना करें, खासकर यदि ऐसे बच्चे या वयस्क हैं जो इस शब्दावली से अपरिचित हैं। हम 'विश्वास', 'अनुग्रह', 'नया जन्म लेने', 'इसे यीशु की ओर मोड़ने' और ऐसी ही अन्य चीजों के बारे में बात करते हैं जिन्हें वास्तव में समझना बहुत कठिन हो सकता है जब तक कि कोई एक परिपक्व मसीही ना हो।

जब आप देखते हैं कि लोग सुन रहे है , तो आप महसूस कर सकते हैं कि वे कब कुछ समझ रहे हैं, या गड़बड़ा रहे हैं, ऊब गए हैं और उनकी इसमे रूचि नहीं है, या आप जो कह रहे हैं उस से प्रभावित हैं। अपने लोगों को पढ़ना सीखें ताकि आप अपने उपदेश को समायोजित कर सकें और उनकी प्रतिक्रिया के अनुसार ध्यान केंद्रित कर सकें।

एक और बात जो याद रखनी चाहिए वह है, साफ और ऊँचा बोलना ताकि सभी सुन सकें। अपने शब्दों का शुद्ध उच्चारण करो, ना तो बहुत जल्दी बोलें और ना ही बड़बड़ाऐ। अपने सिर को सीधा रखें और अपनी छाती से गहरी सांस लें, अपनी आवाज को पूरे वाक्य के लिए तेज और स्पष्ट रखें। हालांकि, ऐसे ना चिल्लाएं जैसे क्रोध में हों । यीशु, पतरस और पौलुस हमेशा धीरे से लेकिन दृढ़ता से बोलते थे। किसी को डांट खाना पसंद नहीं है। प्रेम में सच बोलो (इफिसियों 4:15)। याद रखें कि जब आप बोलते हैं तो लोग यीशु को देख रहे होते हैं, यह एक बहुत बड़ी और अनूठी जिम्मेदारी है।

अपने उपदेश देने को बेहतर बनाने के लिए किसी ऐसे व्यक्ति से पूछें जिसका आप सम्मान करते हैं, उसे सुझाव देने के लिए कहें, या किसी अन्य वक्ता को आपको सुनने के लिए कहें। आप अपने फोन या टेप रिकॉर्डर पर खुद को रिकॉर्ड कर सकते हैं और बाद में खुद इसका मूल्यांकन करने के लिए सुन सकते हैं। यह बहुत मददगार हो सकता है, बहुत विनम्र भी!

3. नोट्स का उपयोग करें या ना करें

कुछ वक्ता अपना पूरा उपदेश लिख देते हैं और लोगों को पांडुलिपि पढ़कर सुनाते हैं। हालांकि इससे लोगों से जुड़ना बहुत मुश्किल हो जाता है। अधिक आँख -संपर्क नहीं रहता है, सिर नीचे झुका होता है इसलिए आवाज आगे नहीं बढ़ती और यह श्रोताओं को घटिया लग सकता है। पांडुलिपि लिखना अच्छी तैयारी हो सकता है ताकि आपका संदेश अच्छी तरह से प्रवाहित हो और आपको ठीक से पता हो कि आप क्या कहना चाहते हैं। हालाँकि, यदि आप इसका उपयोग उपदेश का प्रचार करने के लिए करते हैं, तो प्रत्येक पैरे में मुख्य शब्दों को चिह्नित करें ताकि आप शब्द दर शब्द पढ़ने के बजाय, समय समय पर नीचे देख सकें।

अन्य वक्ता बोलने के लिए किसी भी नोट का उपयोग नहीं करते हैं; वे सिर्फ उस पर भरोसा करते हैं जो उन्हें अपने अध्ययन से याद है। यह उन्हें लोगों के साथ अच्छी नज़र रखने, अपना सिर ऊपर रखने और अपने दिल से ईमानदारी से बोलने की अनुमति दे सकता है। वे आत्मा को सुन सकते हैं जैसे वह मार्गदर्शन और निर्देश देता है। इसके लिए अतिरिक्त काम की आवश्यकता होती है, क्योंकि यदि इसे याद नहीं किया जाता है तो कोई व्यक्ति इधर-उधर छोड़ देगा या महत्वपूर्ण बिंदुओं को भूल जाएगा, इस प्रकार प्रवाह टूट जायेगा । यदि आप इस तरह बोलना चाहते हैं, तो आपको रूपरेखा को याद रखना चाहिए और बिना नोट्स के पूरे संदेश का अभ्यास करना चाहिए।

अधिकांश वक्ता क्या करते हैं, जिनमें मैं खुद भी शामिल हूँ , वे जो कहना चाहते हैं उसकी रूपरेखा तैयार करते है। मैं हाइलाइट किए गए प्रमुख शब्दों के साथ काफी संपूर्ण रूपरेखा से सिखाता हूं। इस तरह

मेरे पास पूरा संदेश होता है ताकि मैं खो ना जाऊं या कुछ भूल ना जाऊं, लेकिन जब मैं बोल रहा हूं तो मुझे सभी विवरणों को देखने की जरूरत नहीं है; हाइलाइट किए गए शब्द अलग दिखते हैं और मुझे याद दिलाते हैं कि आगे क्या है। मैं एक पूरी रूपरेखा भी बनाता हूं ताकि मैं इसे भविष्य में उपयोग या शोध के लिए रख सकूं।

4. परिणाम परमेश्वर पर छोड़ दो

हमने देखा है कि यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम सबसे अच्छा संदेश तैयार करें और दें , लेकिन इससे आगे हम जिम्मेदार नहीं हो सकते। एक बार जब शब्द हमारे मुंह से निकल जाते हैं, तो यह सुनने वालों पर निर्भर करता है कि वे उनके साथ क्या करते हैं। अमेरिकी फ़ुटबॉल में *क़ार्टरबैक* वह होता है जो फ़ुटबॉल को अपने प्राप्तकर्ता के लिए मैदान में फेंकता है। यह महत्वपूर्ण है कि वह *रिसीवर* को पकड़ने में आसान बनाने के लिए एक अच्छा, सटीक पास फेंकने की पूरी कोशिश करे, लेकिन एक बार गेंद उसके हाथ से निकल जाती है तो यह रिसीवर पर निर्भर करता है कि वह उसे पकड़ ले या गिरा दे । सासर के खेल में भी यही सच है। गेंद को पास करने वाला सबसे अच्छा पास बनाता है जो वह कर सकता है, लेकिन फिर यह प्राप्त करने वाले पर निर्भर करता है कि आगे क्या होता है। वक्ताओं के रूप में हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं, फिर परिणाम परमेश्वर पर छोड़ देते हैं। अगर हम परिणामों को नियंत्रित करने की कोशिश करते हैं, तो जैसे लोग प्रतिक्रिया देते हैं, हम लोगों को अपराधबोध या भावनाओं में उनका शोषण कर रहे होंगे । यह हमारी जिम्मेदारी नहीं है। उनकी प्रतिक्रिया उनके और परमेश्वर के बीच का मामला है। हम जो कहते हैं या नहीं, उसे स्वीकार करने और लागू करने के लिए उनमें कार्य करना आत्मा का कार्य है। याद रखें, हम लोगों तक पानी पहुंचाने वाले पाइप हैं। जब वे जीवित जल प्राप्त करते हैं तो वे इसके साथ क्या करते हैं यह उनके और परमेश्वर के बीच है। इसे पहुंचाना ही हमारी जिम्मेदारी है। वह उसे वहाँ से ले जाएगा (यशायाह 55:11)।

मुझे कई बार याद आता है जब लोग संदेश के बाद मेरे पास आते और मुझे मेरे द्वारा दिए गए एक विशेष बयान के बारे में बताने लगते हैं जो उनके लिए बहुत मायने रखता था। परमेश्वर ने उन्हें गहराई से छूने के लिए इसका इस्तेमाल किया और उन्होंने मुझे यह बोलने के लिए धन्यवाद दिया। एकमात्र परेशानी यह है कि मुझे वह बयान कभी याद नहीं आया। वास्तव में, मुझे पूरा विश्वास था कि मैंने उपदेश में ऐसा कुछ नहीं कहा था! मुझे लगता है कि अधिकांश प्रचारकों के साथ ऐसा हुआ होगा । संदेश के दौरान परमेश्वर का आत्मा उस व्यक्ति से बात कर रहा था , और मैंने जो कुछ कहा, उसके माध्यम से उस सच्चाई को स्पष्ट कर दिया, भले ही मैंने ये शब्द सटीक रूप में कभी नहीं बोले हों। परमेश्वर हमारे वचनों को लेता है और उन्हें अपनी महिमा के लिए उपयोग करता है।

किसी के लिए यह कहना असामान्य नहीं है कि मेरा संदेश विशेष रूप से उनके लिए था, कि मैंने जो कहा वह वही था जो उन्हें चाहिए था और यह ऐसे भी था, जैसे कि मैं केवल उनसे बात कर रहा था। जब हम बोलते हैं तो हमें ठीक-ठीक पता नहीं होता कि उन्हें क्या चाहिए, लेकिन परमेश्वर जानता है। जैसा कि हम बोलते हैं, परमेश्वर का आत्मा भी बोल रहा होता है (यूहन्ना 16:13-15)। वह हमें ऐसे शब्द देता है जो वह चाहता है कि हम उपयोग करें और फिर वह उन शब्दों को उन लोगों के मन और हृदय पर लागू करता है जो उन्हें सुन रहे होते हैं। आप जो कहते हैं भरोसा करें कि वह उन शब्दों को लेकर आपनी महिमा के लिए उनका उपयोग करें।

5. जब आप बोल चुके हों

जब आप प्रार्थना कर लें, तो वह सब कुछ जो कहा था उसे परमेश्वर के उपयोग के लिए समर्पत करें । जो लगता है कि सही ढंग से नहीं हो रहा था उस पर ध्यान केंद्रित ना करें । दूसरे लोग तुम्हारे बारे में क्या सोचते हैं इसकी परवाह ना करें या सबका ध्यान आकर्षित करना कितना अच्छा लगा। सब कुछ परमेश्वर को सौंप दो। अगर ऐसा कुछ है जो आप अगली बार कुछ अलग ढंग से करना चाहते हैं, तो उसको तुरंत नोट कर लें , फिर उस समय इसके बारे में ना सोचें। आराम करो और परमेश्वर को भी अपकी सेवा करने दो। जब लोग आपको बताते हैं कि यह कितना महान संदेश था, तो उन्हें धन्यवाद दें, लेकिन अपने दिल में परमेशवर को श्रेय दें। उसकी महिमा को अपने लिए मत चुराओ! आप जानते हैं कि उसके बिना आप यह कभी नहीं कर पाते। उपदेश देने से वक्ता में से बहुत अधिक शारीरिक और भावनात्मक ऊर्जा निकलती है, और यह उसे निराशा या गर्व के प्रति बहुत संवेदनशील बनाता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि संदेश कैसा रहा ।

ख- श्रोता सुनते हैं

हमने एक अच्छा , धार्मिक संदेश तैयार करने और फिर उसे स्पष्ट और आसानी से समझे जाने के तरीके से वितरित करने के महत्व के बारे में बात की है। हालाँकि, अभी भी एक अंतिम चरण है - श्रोता वास्तव में सुन रहे हैं कि आप क्या कह रहे हैं। आप जितना अच्छा हो सके फुटबॉल फेंकते हैं, या सॉसर बॉल को अपनी क्षमता के अनुसार पास करते हैं। फिर यह उस पर निर्भर है जो इसे प्राप्त करता है (रोमियों 10:17)। आपके श्रोताओं के पास इस बारे में स्वतंत्र इच्छा है कि वे आपकी बातों को सुनते हुए क्या करेंगे।

लोग कानो से सुनते हैं, लेकिन वे हमेशा दिल से नहीं सुनते हैं। यीशु ने यह उन लोगों से कहा जिन्होंने उसके वचनों को तो सुना लेकिन वास्तव में (दिल से) नहीं सुना कि वह क्या कह रहा है (मरकुस 8:18)। पतरस ने मूल रूप से कैसरिया में अन्यजातियों (प्रेरितों के काम 10:34-35) और अन्ताकिया में यहूदियों (प्रेरितों 15:16-41) को एक ही संदेश दिया। अन्यजातियों ने इसे ख़ुशी से स्वीकार कर लिया जबकि यहूदियों ने अस्वीकार कर दिया। यह वक्ता या संदेश नहीं था, यह श्रोताओं के दिल थे जिन्होंने फर्क किया।

एक पासबान या वक्ता को अपने श्रोताओं के लिए प्रार्थना करनी चाहिए और उन्हें यह सिखाना चाहिए कि कैसे सुनना है। शैतान सुनते समय उनका ध्यान भटकाने की कोशिश करेगा, उनके मन को भटकाने या जो कुछ उन्होंने सुना उसे भूल जाने के लिए कहेगा (मत्ती 13:1-8)। आत्मा तो सीखना और बढ़ना चाहती है, लेकिन शरीर थका हुआ, कमजोर और आलसी है (मत्ती 26:41; मरकुस 14:38)। कई बार लोग नहीं जानते कि वास्तव में कुछ मिनटों से अधिक कैसे सुनना है, उनकी तवजो (धयान देने) शक्ति कम होती है।

अपने लोगों को प्रशिक्षित करें कि वह चुपचाप बैठे रहें , जब आप बोल रहे हों । यह आपके और परमेश्वर के वचन के लिए सम्मान दर्शाता है, और दूसरों को परेशान नहीं करता है। उपदेश से पहले कहे गए कुछ शब्द, विशेष रूप से चुपचाप सुनने और इधर-उधर ना जाने के लिए, उन्हें धन्यवाद देने में, बहुत मददगार हो सकते हैं। अगर कमरे में गर्मी है और लोग सो रहे हैं या विचलित हो रहे हैं, तो खड़े होने के लिए एक छोटा ब्रेक लेना और यहां तक कि एक कोरस भी गाना उन्हें वापस ध्यान में ला सकता है।

जब मैं देखूंगा कि लोग ध्यान नहीं दे रहे हैं तो मैं बोलने के बजाय सवाल पूछूंगा। इससे उन्हें साथ बने रहने में मदद मिलती है। उदाहरण के लिए, यदि मैं दूसरों को क्षमा करने की आवश्यकता के बारे में बात कर रहा हूं, तो यह कहने के बजाय कि "यह महत्वपूर्ण है कि हम दूसरों को क्षमा करें" और फिर उन्हें कुछ कारण बताएं, मैं पूछूंगा "दूसरों को क्षमा करना क्यों महत्वपूर्ण है?" फिर सीधे नज़रों से संपर्क करते हुए मैं थोड़ा रुकता हूँ कि वह सोचें । मैं एक और प्रशन कर सकता हूं, "क्या होगा यदि हम किसी को क्षमा नहीं करते हैं?" "यह परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते को कैसे प्रभावित करेगा?" प्रशन पूछना लोगों को मानसिक रूप से उपस्थित रखता है; और बात करने के प्रवाह को तोड़ने के लिए रुकना भी ध्यान खींचता है। उपयुक्त कहानियां या उदाहरण से भी ध्यान खींच जाएगा। आप जो कहते हैं उसके बारे में नोट्स लिखने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करने से, उन्हें ध्यान देने और बेहतर रूचि से सुनने में मदद मिलती है।

"यह महत्वपूर्ण है," "इसे याद रखें," या "इसे लिखो" इन शब्दों को कभी-कभी बोलकर,उनकी बेहतर रूचि से सुनने में मदद कर सकते हैं। किसी चीज को दोहराना भी उस पर जोर देता है और उन्हें यह जानने में मदद करता है कि यह महत्वपूर्ण है। मुख्य बिंदुओं के बीच संक्रमण जो पिछले मुख्य बिंदुओं की तुरंत जाँच करते हैं, उन्हें संरचना को अपने दिमाग में रखने में मदद करता है। वे जानते हैं कि वे कहाँ गए हैं और कहाँ जा रहे हैं।

मैं अक्सर अपने संदेश से पहले या अपने संदेश के दौरान अपने चर्च के बच्चों से विशेष रूप से बात करता हूं, उन्हें एक कहानी सुनाता हूं या एक वस्तु पाठ का उपयोग करता हूं। मुझे लगता है कि वयस्क बच्चों की तरह ध्यान से सुनते हैं, और कभी-कभी उससे भी अधिक प्राप्त करते हैं उसकी तुलना जब मैं सिर्फ वयस्कों से बात करता हूं!

<u>V. संदेश का मूल्यांकन</u>

अब आप समाप्त कर चुके हैं, कम से कम वर्तमान संदेश को । आप ने इसे तैयार किया है, इसे पेश कीया है और लोगों ने इसे सुना है। इससे पहले कि आप इसे दर्ज करें और इसके बारे में भूल जाएं, इसका मूल्यांकन करने के लिए कुछ समय दें ताकि आप सीख सकें कि आप आगामी समय के संदेशों में क्या बेहतरी ला सकते हैं।

एक खाना पकाने वाली अपने भोजन पर प्रतिक्रिया पसंद करती है ताकि वह जान सके कि लोग उसके बारे में क्या सोचते हैं और यदि कोई कमी है तो वह अगली बार इसे सुधार सकती है। आपके द्वारा एक संदेश दिए जाने के बाद और सभी के घर लौट जाने से पहले, किसी एक को संदेश के बारे संक्षेप में बताने के लिए कहने से, आपको यह जानने में मदद मिलती है कि क्या उन्होंने मुख्य बिंदु को समझा है। उनसे पूछें कि क्या कुछ ऐसे तो नहीं था जो भ्रमित करने वाला या समझने में कठिन था। एक चर्च के अगुवा या आपके परिवार में किसी से यह पूछना अच्छा होगा, उन्हें बताने में ईमानदार और मददगार होना चाहिए। मेरी पत्नी अच्छी, ईमानदार प्रतिक्रिया देने में मेरी बहुत मदद करती है ताकि मैं अपने प्रचार में सुधार कर सकूं।

एक अच्छा वक्ता बनने में समय और अभ्यास लगता है, लेकिन सिर्फ बहुत कुछ बोलने से वह पूरा नहीं हो जाता। आप जो कह रहे हैं आपको उसकी योजना बनानी होगी और बाद में उसका मूल्यांकन करना होगा ताकि आप सीख सकें और अगली बार बेहतर कर सकें। अच्छे वक्ताओं को सुनें और देखें कि आप उनसे क्या सीख सकते हैं। उनमें से किसी एक को कुछ समय आपकी बात सुनने के लिए कहें।

याद रखें कि हर उपदेश महान नहीं होगा। कुछ दूसरों की तुलना में अधिक प्रभावी होंगे। बस तैयार करने और वितरण करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें, और बाकी सब परमेश्वर पर छोड़ दें। मेरा पहला उपदेश मेघारोहण(रैप्चार) के बारे में था। मैंने पूरी तैयारी की। जब मैं नोट्स से अभ्यास करता था तो मुझे उपदेश देने में 45 मिनट लगते थे, लेकिन जब मैं बोलता था तो मैं बहुत घबरा जाता था और मैं उनके माध्यम से दौड़ता था और 7 मिनट में ही उपदेश पूरा हो जाता था! बिली ग्राहम ने खुद कहा था कि उनके साथ भी ऐसा ही हुआ था जब उन्होंने अपने पहले उपदेश का प्रचार किया था। यहाँ तक कि पौलुस के बोलते समय भी कोई सो गया था। वह आदमी खिड़की से बाहर गिर गया और मर गया; परमेश्वर ने उसे फिर से जीवित किया (प्रेरितों के काम 20:9)। शायद कमरे में गर्मी थी और बहुत देर रात थी, इसलिए इसमें इनका भी हिस्सा था ।

यदि कोई आपके संदेश की बुरी तरह से आलोचना करता है, तो देखें अगर उसमे कुछ ऐसा है जो आप उनके शब्दों से सीख सकते हैं और फिर उन्हें और उस आत्मा को क्षमा करें जिसमें उन्होंने ऐसा कहा था (लूका 23:34)। अपने मन को अच्छी , सही, महान और शुद्ध बातों पर केंद्रित रखें, ना कि नकारात्मक शब्दों या आलोचना पर (फिलिप्पियों 4:8)। शैतान उन चीज़ों का इस्तेमाल आपको हतोत्साहित करने और हराने के लिए करेगा! जैसे ही आप अगले संदेश पर काम करते हैं, पिछले संदेश से सीखें ताकि आप सुधार कर सकें, लेकिन इसके अलावा इसे अपने दिमाग से निकाल दें। जैसे कि यह अतिरिक्त अच्छा या अधिक बुरा था, तो इसे अपने पीछे रख दें और अगले के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें (फिलिप्पियों 3:13-14)।

निष्कर्ष

उपदेश बनाना घर बनाने के समान है। एक अच्छा घर, एक अच्छे उपदेश की तरह आराम, वृद्धि, सुरक्षा और प्रोत्साहन लाता है। सबसे पहले घर बनाने वाले को यह पता होना चाहिए कि वह किस तरह की जमीन पर निर्माण कर रहा है। दलदली , रेतली या ऐसी जगह जो आसानी बाढ़ द्वारा प्रभावित हो सकती है, घर बनाने के लिए अच्छी नहीं होती है। उपदेशक को उन लोगों के दिलों को जानना चाहिए जिनमें वह सच्चाई का निर्माण करने की कोशिश कर रहा है।

निर्माण शुरू करने से पहले, पहली जरूरत है खुदाई, ड्रिल और निर्माण करने की शक्ति। जब हम एक उपदेश का निर्माण करते हैं पवित्र आत्मा हमारी शक्ति का स्रोत होता है। उसके बिना इसे बनाने का प्रयास असफल हो जाएगा।

निर्माण से पहले घर बनाने वाला योजना बनाता है कि उसके घर की व्यवस्था कैसे की जाए, जहां प्रत्येक कमरे का निर्माण किया जाएगा। इसी तरह समय से पहले उपदेशों की भी योजना बनाई जानी चाहिए। निर्माण करने के लिए, बिल्डर को पता होना चाहिए कि अपने व्यापार के उपकरणों का उपयोग कैसे करना है: हथौड़ा, आरी और विमान। एक अच्छा संदेश बनाने के लिए पादरी साहिब को पता होना चाहिए कि अपने औजारों, बाइबल और सहायक पुस्तकों का उपयोग कैसे करना है। बिल्डर्स दूसरों से सीखते हैं और समय के साथ अपने कौशल का निर्माण करते हैं, इसी तरह अच्छे प्रचारक भी करते हैं ।

घर को मजबूत और सक्षम बनाने के लिए सबसे पहले एक ठोस नींव रखनी चाहिए। एक अच्छे उपदेश की नींव ठोस बाइबल अध्ययन है, इसलिए सिखाए जाने वाले हिस्से को अच्छी तरह से समझा जाता है। इसे इसकी दृढ़ नींव के रूप में परमेश्वर के वचन पर बनाया जाना चाहिए। नींव के बाद घर के लिए ढांचे का निर्माण होता है। दीवारें, छत, खिड़कियां और दरवाजे सभी एक साथ एक अच्छे ढांचे से जुड़े हुए हैं।

एक उपदेश को भी एक अच्छे, ठोस ढांचे या रूपरेखा की आवश्यकता होती है, जिससे बाकी सब कुछ जुड़ा हो। आप के पास एक स्पष्ट मुख्य विचार होना चाहिए, जो आप आपने सुनने वालों को चाहते हैं कि वह सुने और करें । उपदेश के सभी मुख्य बिंदु इस मुख्य विचार को विकसित करते हैं। यह संदेश के लिए ढांचा है, और इसकी प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती है कि ढांचा कितनी अच्छी तरह से बनाया गया है।

बारिश और ठंड से बचने और गर्मी से बचने के लिए घर की दीवारें इसे ढकती हैं। उपदेश को बिना किसी दरार या छेद के सुचारू रूप से बहने की जरूरत है ताकि लोगों को जो चाहिए यह उन्हें प्रदान कर सके। लेकिन बिना खिड़कियों वाली सभी दीवारें बेसूरत और अंधेरी होती हैं। खिडकियां रौशनी को आने देती है और जो अंदर को रोशन करती है। उसी तरह कहानियां, उदाहरण और उदाहरण संदेश में मुख्य बिंदुओं को उजागर करते हैं ताकि लोग आपके द्वारा बोले जा रहे बिंदुयों को बेहतर ढंग से देख सकें।

बेशक एक घर में दैनिक जीवन के दौरान बाहर जाने के लिए एक दरवाजा होना चाहिए। उपदेशों को अनुप्रयोगों की आवश्यकता होती है ताकि वे दैनिक जीवन में लागू हो सकें और लोगों के जीने के तरीके में बदलाव ला सकें। वे सिर्फ सुनते समय मनोरंजन के लिए नहीं हैं; वे इसलिए हैं ताकि लोग अपने साथ सिखाए गए नए सत्य को दुनिया में अपने दैनिक जीवन में ले सकें।

एक अच्छी छत के साथ एक घर को ढंकना इसे उन तत्वों से बचाता है जो इसे नष्ट कर देते है । प्रार्थना उन शब्दों के लिए आवश्यक ढाल है जो आप लोगों से बोलेंगे, इसे संदेश और लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए उन्हें मजबूत, अटल और प्रत्यक्ष होना चाहिए।

आप शायद और समानताओं के बारे सोच सकते हैं, लेकिन मुझे यकीन है कि आप इस बिंदु को देखते हैं। दूसरों के लिए परमेश्वर के वचन का प्रचार करना एक महान विशेषाधिकार और सम्मान है, लेकिन इसके लिए कड़ी मेहनत और सावधान रहने की आवश्यकता है। पेशे के तौर पर यीशु एक बढ़ई था, शाब्दिक : एक घर बनाने वाला। उसने अपने अनुयायियों को खिलाने और सुसज्जित करने के लिए मजबूत, बाइबल संदेश भी बनाए और वितरण किए। आइए हम उसके उदाहरण का अनुसरण करें और उसके समान बनें जब हम उसकी भेड़ों को चराने के लिए अपनी परमेश्वर-द्वारा दी गयी जिम्मेदारी को पूरा करते हैं (यूहन्ना 21:15-17; 2 तीमुथियुस 4:1-2)।

परमेश्वर आपको भरपूर आशीषें दें और अपने वचन से आपको खिलाएं जब आप दूसरों को खिलाते हैं (2 तीमुथियुस 2:6)। इस दुनिया में प्रभु यीशु मसीह की सेवा करने से बड़ा कोई विशेषाधिकार नहीं है। अगर उसने आपको अपनी भेड़ों को खिलाने के लिए विशेष लोगों में से एक के रूप में चुना है, तो उसे धन्यवाद दें और इस महान सम्मान और विशेषाधिकार को पूरा करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें। इस धरती पर अपना छोटा सा जीवन बिताने का इससे बड़ा या बेहतर दूसरा कोई तरीका नहीं है । आपको अनंत काल के लिए भरपूर पुरस्कृत किया जाएगा, इसलिए आपके पास अभी जो भी अवसर है उसका उपयोग किसी भी तरह से उसकी सेवा करने के लिए करें! जब आप स्वर्ग में पहुंचें, तो मुझे भी देखें फिर एक साथ हम अपने उद्धारकर्ता और राजा, प्रभु यीशु मसीह की स्तुति करेंगे!

उपदेशों का नमूना

मैंने इस पुस्तक के पीछे उपदेश की रूपरेखा का नमूना शामिल कीया है ताकि आरंभ करने में आपकी सहायता हो , ना कि इसे एक बैसाखी बनने के लिए या आपको अपने उपदेश की तैयारी करने से रोकने के लिए। जब मैं पहली बार प्रचार करना शुरू कर रहा था, तब दूसरों के उपदेश की रूपरेखा ने मुझे यह सीखने में मदद की कि कैसे अपना खुद का विकास करना है, इसलिए मैं उन्हें आपकी मदद करने के लिए शामिल करता हूं। पहले उपदेश उनकी रूपरेखा में अधिक विस्तृत हैं; अंत में वे बहुत व्यापक और सामान्य हैं। उन्हें अलग-अलग तरीकों से रेखांकित किया गया है ताकि आप उन्हें विभिन्न तरीकों से देख सकें कि आप इसे आपने आप करते है । बेझिझक उन्हें बदलें और अपनी पसंद के अनुसार उनका उपयोग करें, लेकिन उन्हें अपने खुद के उपदेश विकास की जगह ना दें।

याद रखें, आरंभ करने में आपकी सहायता करने के लिए वे केवल रूपरेखा हैं। अपने स्वयं के नोट्स, उदाहरण और बाइबल आयातों को इसमें जोड़ें। वे सिर्फ एक कंकाल हैं जिन पर आपको विकास करना और मांस भरना है । मेरी वेब साइट http://india.christiantrainingonline.org/ पर और भी संपूर्ण संदेश हैं। बस "उपदेश" पर क्लिक करें और आप मेरे द्वारा उपयोग किए जा सकने वाले 70 पूर्ण लंबाई के उपदेश देखेंगे। यदि आप उन्हें डाउनलोड करना चाहते हैं तो सूची के निचले भाग में "उपदेश डाउनलोड" पर क्लिक करें या http://india.christiantrainingonline.org/sermons/sermon-downloads/ पर जाएं। यदि आपके कोई प्रशन हैं या मैं आपकी किसी भी तरह से मदद कर सकता हूं, तो आप मुझे jerry@christiantrainingorganization.com पर ईमेल कर सकते हैं।

आध्यात्मिक युद्ध और यीशु (मरकुस 5:1-20) - आध्यात्मिक युद्ध

यीशु के नाम में शक्ति और अधिकार (लूका 9:1; 10:1, 17-19) - आध्यात्मिक युद्ध

यीशु जीवन को अर्थ देता है (सभोपदेशक 1:1-8; 3:1-8; 12:1,13) - अंतिम संस्कार सेवा

वचन का अधिकार (2 तीमुथियुस 3:16-17; इब्रानियों 4:12) - बाइबल

यीशु का अनुसरण करना (1 कुरिन्थियों 2:15; 3:1-3) - शिष्यत्व, बपतिस्मा

तुरही के लिए सुनना (यूहन्ना 14:1-3; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18) - भविष्यवाणी, मेघारोहण

जीवन के संकेत: मैं कैसे सुनिश्चित हो सकता हूं कि मैं एक मसीही हूं? (1 यूहन्ना) - उद्धार का आश्वासन

परमेश्वर पतियों और पत्नियों से क्या उम्मीद करता है (इफिसियों 5:22-33; 1 पतरस 3:1-7) विवाह

परमेश्वर माता-पिता से क्या उम्मीद करता है (इफिसियों 5:22-33; 1 पतरस 3:1-7) - परिवार, बच्चे

बच्चे जैसा विश्वास (मरकुस 10:15; मत्ती 6:25-34; 18:3; 19:14) - विश्वास

क्रिसमस हमें परमेश्वर के बारे में क्या सिखाता है (लूका 2:1-20) - क्रिसमस

चर्च का उद्देश्य और कार्य (प्रेरितों के काम 2:41-42, इब्रानियों 10:25) - चर्च

परमेश्वर का अनुग्रह (लूका 7:11-17; मरकुस 12:41-44) - परमेश्वर का अनुग्रह

यीशु जरूरतमंद लोगों को पुनर्स्थापित करता है (मत्ती 15:21-28; लूका 5:12-14; मरकुस 5:25-35) - अपराधबोध, शर्म, सम्मान

यीशु का अनुसरण करना गंभीर व्यवसाय (लूका 9:57-62) - शिष्यत्व

तीन काल में धन्यवाद (भजन 66) - धन्यवाद, आराधना

जनाजों से सबक (2 कुरि. 5:8; भजन संहिता 23:4; 1 कुरिं. 15:20-26) - अंतिम संस्कार सेवा

बच्चे विशेष हैं (मत्ती 18:2-6; मरकुस 9:35-37; 10:13-16) -बाल मख्सूसियत , जन्मदिन (पृष्ठ 97)

दानिय्येल: विश्वासयोग्यता (दानिय्येल की पुस्तक) - विश्वासयोग्यता

विवाह भक्ति (इफिसियों 5:22-33; 1 पतरस 3:1-7) - विवाह, वर्षगांठ

बच्चे तीर की तरह होते हैं (भजन 127:4-5) - शिशु या बाल मख्सुसिअत

इंजीलवाद/सुसमाचारी उपदेश - इंजीलवाद/सुसमाचार

आध्यात्मिक युद्ध और यीशु

मरकुस 5:1-20

(यह संदेश अन्य उपदेशों से भिन्न है, क्योंकि यह शब्द दर शब्द लिखा गया है। यह एक ऐसा है जिसे मैं भारत में पादरियों के हर सम्मेलन में उपयोग करता हूं। आप इसे बदल सकते हैं या अपनी इच्छानुसार इसमें जोड़ सकते हैं।)

मुख्य विचार: शैतान और दानवों पर हमारी जीत को समझने के लिए और इसे अपने जीवन में लागू करने के लिए

परिचय

उदाहरण: उस समय के बारे में बताएं जब आपने या किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सुना हो कि जिसने एक व्यक्ति का सामना किया जो दान्व्ग्रस्त था ,और यीशु के नाम पर उस पर विजय प्राप्त की। सुनिश्चित करें कि परमेश्वर को महिमा और श्रेय मिले, किसी इंसान को नहीं।

इससे पहले कि परमेश्वर ने दुनिया बनाई, उसने स्वर्गदूतों को बनाया,की उसकी सेवा करे

लेकिन स्वर्गदूतों में से एक ऐसा नहीं करना चाहता था,

वह इसके बजाय अपनी सेवा कराना चाहता था, वह परमेश्वर को हराने में सक्षम नहीं था इसलिए परमेश्वर ने उसे स्वर्ग से निकाल दिया। 1/3 स्वर्गदूत उसके पीछे हो लिए हम उन्हें दानव कहते हैं और जो उनकी अगुवाई करता है उसे शैतान कहते है ।

उनका पूरा उद्देश्य परमेश्वर का विरोध करना और दुनिया को नियंत्रित करना है

वह लगभग परमेश्वर जितना शक्तिशाली नहीं है, लेकिन वह हमसे अधिक शक्तिशाली है

केवल वे जिन्हें नियंत्रित नहीं करता, वे हैं मसीही

हम ही हैं जो उसके अँधेरे में उजाला ला सकते हैं

इसलिए उसे सफल होने के लिए उसे चर्च को रोकना है

परमेश्वर बड़ा है, लेकिन हमें यह जानना चाहिए कि उस में विजय कैसे प्राप्त करें

हम दुष्टात्माओं पर परमेश्वर की सामर्थ के उदाहरण को देखेंगे - मरकुस 5:1-6

I. यीशु गादेरेनस जाता है - मरकुस 5:1-6

यीशु ने उन सभी को छोड़ दिया जिनके साथ वह झील के उस पार नाव ले गया था

वह एक ऐसे व्यक्ति की मदद के लिए जाना चाहता था जो उसके पास नहीं आ सकता था

शैतान नहीं चाहता था कि वह उस आदमी को आज़ाद करे
इसलिए उसने नाव को डुबाने के लिए एक तूफान भेजा
यीशु ने तूफान से बात की और सुरक्षित रूप से दूसरी तरफ पहुंच गए

मरकुस 5:1-13 पढ़ें

जब यीशु वहाँ पहुँचा तो उसकी मुलाकात एक ऐसे व्यक्ति से हुई जो दुष्टात्माओं द्वारा नियंत्रित था
जो उसमें रह रहे थे
जब हम इस आदमी के जीवन को देखते हैं तो हम कुछ चीजें देख सकते हैं
जो दानव लोगों से करते हैं

क- दान्व्ग्रस्ति के लक्षण

उन्होंने इस आदमी को शवों के साथ **एक गुफा में** रहने के लिए प्रभावित किया
दानवों को मृत्यु और अंधकार पसंद है
परमेश्वर प्रकाश और जीवन है, शैतान मृत्यु और अंधकार है

हम यह भी देखते हैं कि यह आदमी **गुस्से** से भर गया था
अगर कोई उसके पास आता तो वह उन्हें चोट पहुँचाने के लिए हर संभव कोशिश करता
वह दूसरों के लिए दर्द और विनाश लाना पसंद करता था

वो **खुद को भी दर्द देना** चाहता है
वह खुद को तेजधारी चट्टानों से काट लेता था

वह ये सब काम इसलिए करता क्योंकि ऐसा करने के लिए दानव उसके मन में विचार डालते थे
यह वे विचार नहीं थे जो वह चाहता था और ना ही यह वे विचार थे जो परमेश्वर ने उसे दिए थे
वे राक्षसों से थे, लेकिन वह नहीं जानता था
वह विचारों को सुनता और फिर उनके अनुसार कार्य करता

इसी तरह से आज भी दुष्टात्माएँ लोगों के साथ काम करती हैं

किसी व्यक्ति के दिमाग में ऐसे विचार डालना जो वे नहीं चाहते

और वे जानते हैं कि वे ऐसे विचार नहीं हैं जो परमेश्वर उन्हें दे रहा है

लेकिन विचार बार-बार आते रहते हैं

यह एक भयानक पाप करने का विचार हो सकता है

यह क्रोध के विचार हो सकते हैं

यह दूसरों को चोट पहुँचाने या खुद को चोट पहुँचाने के विचार हो सकते हैं

यह लालच या ईर्ष्या के विचार हो सकते हैं

यह डर के विचार हो सकते हैं और परमेश्वर पर भरोसा नहीं करने वाले हो सकते हैं

यह वासना के विचार हो सकते हैं

यह परमेश्वर की निंदा करने वाले विचार हो सकते है

"यीशु परमेश्वर नहीं है"

"परमेश्वर मुझे कभी प्यार नहीं करेगा और मुझे स्वर्ग नहीं ले जाएगा"

हम सभी को ऐसे विचार मिलते हैं जो हमारे पास नहीं होने चाहिए

जब हम उन्हें स्वीकार करते हैं और प्रार्थना करते हैं तो हम बढ़ सकते हैं और उन्हें रोक सकते हैं

लेकिन अगर हम कुछ भी करें तो भी विचार दूर नहीं होता है

तब यह विचार डालने वाला एक दानव है

यह अविश्वासियों के साथ-साथ मसीहीओ के साथ भी हो सकता है

कुछ लोग दूसरों की तुलना में अधिक प्रभावित क्यों होते हैं ?

बाइबल हमें यह नहीं बताती कि इस आदमी के पास इतनी दुष्टात्माएँ क्यों थीं जो उसके साथ ये काम कर रही थीं

लेकिन यह हमें कुछ कारण बताती है कि दानव हमारे जीवन में आ सकते हैं और हम पर हमला कर सकते हैं

यदि हम **अपने जीवन में किसी ऐसे पाप** की अनुमति देते हैं जो उनके लिए द्वार खोलता है, तो वे अंदर आ जाएंगे

अगर हम आपने आप को परमेश्वर के अलावा किसी अन्य शक्ति के लिए खोलते हैं, तो वे इसका इस्तेमाल करेंगे

यदि कोई मूर्तियों का उपयोग करता है या विधि सीदी का उपयोग करता है, तो इससे दानवों के आने का द्वार खुल जाएगा

जब वे अंदर आते हैं तो वे सब कुछ दावा करते हैं जो उस व्यक्ति का है

जब व्यक्ति के बच्चे होंगे तो वे **उन बच्चों पर दावा करेंगे**

फिर जब उनके बच्चे होते हैं तो उन बच्चों पर भी दावा करते हैं

इसलिए कभी-कभी आप एक ही पाप को एक ही परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी देखते हैं

हो सकता है कि किसी आदमी को शराब की समस्या हो

जब उसका एक बेटा होता है, तो उस बेटे को समस्या होती है, और फिर उसके बेटे को भी

या फिर वो आदमी हो सकता है जो अपनी पत्नी को पीटता हो

वह आपको बताता है कि उसके पिता ने उसकी पत्नी को पीटा और उसके दादा ने भी

क्योंकि आप **भारत में एक पादरी हैं** यह उनके लिए आपके खिलाफ काम करने का करण हो सकता हैं,

शैतान अपने दानवो को एक बड़ी सेना की तरह **विभाजित करता** है

उनके पास विभिन्न देशों और कार्यों के लिए अलग-अलग समूह हैं

उसके पास भारत को सौंपे गए कई मजबूत दानव हैं

उन्होंने कई सालों तक भारत को अंधेरे में रखा है

जब आप प्रकाश लेकर आएंगे, तो वे आपको नष्ट करने के लिए कुछ भी कर सकते हैं

भारत में कुछ ऐसे स्थान हैं जो दानवीकरण के लिए और भी अधिक खुले हैं

यदि भूमि के एक टुकड़े पर कुछ ऐसा होता है जो दानवों की उपस्थिति को आमंत्रित करता है, तो वे उस भूमि के टुकड़े पर दावा करेंगे

हो सकता है कि किसी समय वहां कोई समाधि थी या वहां कुछ सीदी विदि की गयी थी

हो सकता है कि वहां कोई भयानक पाप हुआ हो और वे उस भूमि का दावा करते हों

फिर यदि आप वहां अपना घर या चर्च बनाए, तो वे आप के विरुद्ध काम करेंगे

यदि आपके पहले आपके घर में कोई रहता था जिसके पास मूर्तियाँ या अन्य चीजें थीं, तब भी दानव उस घर पर दावा करेंगे

हो सकता है आपने धयान किया हो कि जब से आप इस घर या चर्च में आए हैं, ऐसा लगता है कि हर कोई बीमार हो रहा है

या हो सकता है कि लोग आपस में मिलके नहीं रह सकते और हमेशा लड़ाई-झगड़े होते रहते हैं

या यह हो सकता है कि आपके पास अधिक से अधिक खर्च हों और कभी भी पर्याप्त धन ना हो

वह उस भूमि का दावा करने वाले राक्षस हो सकते हैं

एक और कारण है कि अगर कोई आप पर **शाप** डालता है तो दानव आपके खिलाफ काम कर सकते हैं

हो सकता है कि कोई जानता हो कि आप एक पादरी हैं और वह आपको पसंद नहीं करता हो

उनमें मौजूद दानव आपके लिए व्यक्ति के दिल में गुस्सा भर सकते हैं

वे कहते हैं "मुझे आशा है कि उस पादरी के साथ कुछ भयानक होगा"

"मुझे आशा है कि उसका चर्च सफल नहीं होगा"

ये शैतान के लिए प्रार्थना की तरह हैं

दानव उन्हें सुनते हैं और उन प्रार्थनाओं का उत्तर देने का प्रयास करते हैं

ये सभी कारण हैं कि क्यों दानव हमारे खिलाफ काम कर सकते हैं

आज काम पूरा करने से पहले हम प्रार्थना करेंगे और वह सब तोड़ देंगे

ऐसा करने से पहले, मैं दानवों पर यीशु की शक्ति के बारे में अपनी कहानी समाप्त करना चाहता हूं

II. यीशु ने दानवो को हराया

जब यीशु उतरा, तो उस व्यक्ति ने उसके सामने घुटने टेके

एक व्यक्ति में कितने ही दुष्टात्माएँ क्यों ना हों, वह फिर भी यीशु की ओर मुड़ सकता है

यीशु दानवों की किसी भी संख्या से बड़ा है

1 यूहन्ना 4:4 जो तुम में है; वह, उस से जो जगत में है, बड़ा है

याद रखने और आध्यात्मिक युद्ध के लिए उपयोग करने के लिए यह एक अच्छी कविता है

इस आदमी में कई दानव थे

दानव जो सबसे मजबूत था वह नेता था और उन सभी के लिए बोलता था

उसने क्या कहा कि उसका नाम था?

एक सेना जिसमे में 5,000 या 6,000 सैनिक होते हैं!

यह दानव कह रहा था, "हम बहुत मजबूत हैं, यीशु, हम में से हजारों हैं!"

लेकिन कौन अधिक शक्तिशाली है, हजारों दुष्टात्माएं या एक यीशु?

जब यीशु ने इन दानवों को जाने की आज्ञा दी, तो उन्हें छोड़ना पड़ा।

वे कहाँ जाना चाहते थे? सूअरों में

यदि दानव किसी व्यक्ति में निवास नहीं कर सकते हैं, तो वे एक जानवर में रहना चाहते हैं

जब राक्षस अंदर गए तो सूअरों का क्या हुआ? मर गए

राक्षस हमेशा मृत्यु और विनाश लाते हैं।

कितने सूअर थे?

2000, इसलिए कम से कम 2,000 राक्षस रहे होंगे

जब राक्षस चले गए तो उस आदमी का क्या हुआ?

वह बदल गया था और अपने सही दिमाग में

तुरंत, एक बार दानवों के चले जाने के बाद वह पूरी तरह से ठीक हो गया

जब यीशु दानवों को हटाता है तो उसका जीवन बदल जाता है

जब राक्षस चले गए, तो यह आदमी पूरी तरह से चंगा हो गया

वह अन्य लोगों को भी बदल सकता था, यदि वे उसे अनुमति देते

पढ़ें मार्क 5:14-20

III. लोग चाहते हैं कि यीशु जाए

जो हुआ था उसे देखने के लिए हर जगह से लोग आए थे

वे जानते थे कि यह आदमी कैसा था, उन्होंने देखा कि वह कैसे बदल गया

आप सोचेंगे कि वे यह चाहते होंगे कि यीशु उनके लिए भी ऐसा ही करें

लेकिन वे नहीं चाहते कि यीशु रहे

वे दानवों को परेशान करने से डरते थे

दानवों ने लोगों को नियंत्रित करने के लिए डर का इस्तेमाल किया

उनकी शक्ति उतनी बड़ी नहीं है जितना वे चाहते हैं कि हम सोचें

इसलिए वे हमें यह सोचने के लिए डर का इस्तेमाल करने की कोशिश करते हैं कि वे और अधिक कर सकते हैं

इस सम्मेलन के बाद वे आपके दिल में डर पैदा करने की कोशिश करेंगे ताकि आपने जो सीखा उसे भूल जाओ

दानव केवल वही कर सकते हैं जो परमेश्वर उन्हें करने की अनुमति देता हैं

अय्यूब पर हमला करने के लिए शैतान को परमेश्वर की अनुमति लेनी पड़ी थी

परमेश्वर उन्हें केवल वही करने देगा जो उसकी महिमा और हमारे विकास के लिए है

क्योंकि वे दुष्टात्माओं से डरते थे, ये लोग चाहते थे कि यीशु चला जाए

आप आज लोगों को बताते हैं कि यीशु उन्हें आज़ाद कर सकता हैं, लेकिन वे अंधेरे में रहना पसंद करेंगे।

यीशु ने खुद को इन लोगों पर नहीं थोपा, वह चला गया

IV. आदमी गवाही देता रहता है

लेकिन उसने वहाँ एक मिशनरी को छोड़ दिया

यही एक कारण था कि वह वहाँ गया, ताकि उन्हें ज्योति की गवाही दे

आपको लगता है कि उसने किसी महत्वपूर्ण, सुशिक्षित व्यक्ति को चुना होगा

लेकिन उस आदमी को देखो जिसे उसने चुना था!

कभी-कभी हम सोचते हैं, परमेश्वर, आप मेरा इस्तेमाल कैसे कर सकते हैं

मेरे पास कोई शिक्षा नहीं है, मैं प्रभावशाली नहीं हूं

इस आदमी की तरह, मेरे अतीत में यह भयानक पाप है

लेकिन यही लोग हैं जिन्हें परमेश्वर उपयोग करने के लिए चुनता है

उसके पास इस आदमी के लिए एक <u>महत्वपूर्ण काम</u> है

वह आदमी यीशु के साथ जाना और यात्रा करना चाहता था

यह अजीब लगता है यीशु ने उसे जाने नहीं दिया

यीशु चाहता था कि वह वहीं रहे जहां वह था

वह लोगों को जानता था और लोग उसे जानते थे

परमेश्वर ने आपको वहीं रखा है जहां आपको सेवकाई करनी है।

यीशु ने उससे कहा कि वह **लोगों को बताए** जो हुआ था।

वह कभी बाइबल स्कूल नहीं गया था

वह केवल वही जानता था जो यीशु ने उसके जीवन में किया था

क्या यीशु ने आपके जीवन में कुछ किया है?

परमेश्वर चाहता है कि आप दूसरों को बताएं कि उसने आपके लिए क्या किया है।

यीशु चाहता है कि आप उसके लिए <u>**गवाह**</u> बनें

अदालत में एक गवाह बताता है जो वह जानता है

अदालत में वकील भी होते हैं

एक वकील और एक गवाह के बीच क्या अंतर है?

एक वकील अन्य लोगों को समझाने का तर्क देता है कि वह सही है,

एक गवाह सिर्फ वही बताता है जो उसने देखा, जो वह जानता है

यीशु क्या चाहता हैं कि हम बने ,एक वकील या गवाह ? - एक गवाह

यह आदमी **रुक गया** और सभी को बताता रहा कि यीशु ने उसके लिए क्या किया है

यीशु अपने देश वापस चला गया और उपदेश देना जारी रखा

थोड़ी देर बाद उसे सूली पर चढ़ाया गया और फिर वह स्वर्ग में चला गया

यरूशलेम में आरम्भिक कलीसिया का विकास होने लगा

जैसे-जैसे वे बड़ते गए उन्होंने मिशनरियों को भेजना शुरू किया

अधिकांश मिशनरियों को लोगों के सामने गवाही देने में कठिनाई हुई

परन्तु जब वे उस क्षेत्र में आए जहां यह व्यक्ति था, तो बहुते यीशु की ओर फिरे

आप जानते हैं क्यों?

यह आदमी ईमानदारी से बता रहा था कि यीशु ने उसके लिए क्या किया है

यह आदमी वर्षों से, ईमानदारी से मिट्टी तैयार कर रहा था और लोगों के दिलों में बीज बो रहा था

इसलिए जब मसीही आए तो वे फसल काट सकते थे

इस आदमी ने फसल नहीं देखी,

हो सकता है कि वह अब और जीवित ना रहा हो

लेकिन वह ईमानदारी से बताता रहा कि यीशु ने क्या कीया था

परमेश्वर ने **आप में से बहुतों को** उस आदमी की तरह एक सेवकाई में बुलाया है

आप अंधेरे की जगह पर हैं और पहली बार बीज बो रहे हैं

यह कठिन है, आपको बहुत परिणाम नहीं दिख रहे हैं

लेकिन वफादार रहो और लोगों को यीशु के बारे में बताते रहो

एक दिन परमेश्वर इसका उपयोग एक बड़ी फसल होने के लिए करेगा जहां आप हैं

हो सकता है कि आप फसल न लाएँ, हो सकता है कि आप यहाँ और ना हों

लेकिन परमेश्वर महान परिणाम लाने के लिए उसका उपयोग करेगा जो आपने शुरू किया था

निराश ना हों, **वफादार रहें**

यह मत सोचो कि एक मसीही के रूप में आपके साथ कुछ गलत है

क्योंकि आपको बहुत सारे परिणाम दिखाई नहीं देते हैं

यह एक विशेषाधिकार है जो परमेश्वर आपको एक स्थान पर मिट्टी का काम शुरू करने के लिए देता है

आपको फसल के लिए उसी तरह से धन्य और पुरस्कृत किया जाएगा जैसे उस आदमी को जो इसे लाता है

यीशु ने इस व्यक्ति को अपनी महिमा और अपने राज्य के लिए इस्तेमाल किया

उसने अपने शिष्यों को यह सिखाने के लिए इसका इस्तेमाल किया कि कैसे दानवों पर विजय प्राप्त की जाए

V. हमारे पास वही अधिकार और शक्ति है

यीशु ने चेलों को सब दुष्टात्माओं को निकालने की शक्ति और अधिकार दिया (लूका 9:1)

उसने उन्हें भेज दिया और कहा कि उनका राक्षसों पर अधिकार है

जब वे वापस आए तो वे बहुत उत्साहित थे

उन्होंने कहा, "राक्षसों को भी तेरे नाम से हमारे अधीन होना पड़ता है "

यह यीशु के नाम में है, हमारे पास शक्ति है, मेरा नाम या आपका नाम नहीं

दानवों को आपकी या मेरी बात सुनने की जरूरत नहीं है, लेकिन उन्हें यीशु की बात माननी पड़ती !

पौलूस ने इस अधिकार का इस्तेमाल किया

एक दिन वह एक गली से गुजर रहा था और एक दासी जो दुष्टात्मा से जकड़ी हुई उसका पीछा कर रही थी

वह घूमा और उसने यीशु के नाम से दुष्टात्मा को जाने की आज्ञा दी

तुरंत ही दानव चला गया

मैं चाहता हूं कि अब आप उस शक्ति और अधिकार का उपयोग, यह सुनिश्चित करने के लिए, करें कि कोई भी दानव आपके या आपके परिवार के खिलाफ काम नहीं कर रहा है

मैं चाहता हूं कि हम सभी दानवों के चले जाने के लिए प्रार्थना करें

मैं चाहता हूं कि आप देखें कि आप अपने और अपने चर्च के लिए कैसे प्रार्थना कर सकते हैं

उद्धार के लिए सामूहिक प्रार्थना

प्रिय यीशु, यीशु नाम में हमारे पास जो उद्धार है, उसके लिए हम आपको धन्यवाद देते हैं।

हम जानते हैं कि आप शैतान और उसके दानवों से बड़े हैं (उद्धरण 1 यूहन्ना 4:4)

"जो हमारे भीतर है, वह उस से जो संसार में है, बड़ा है!"

हम जानते हैं कि आपके पास उन पर अधिकार है और आपने हमें वह शक्ति यीशु के नाम पर दी है।

यीशु के नाम में, मैं हर दानव को मेरे या मेरे परिवार या मेरे चर्च के खिलाफ काम करने से रोकता हूँ

यदि मैंने कोई ऐसा पाप कीया है जिसका वे मेरे विरुद्ध काम करने के लिए उपयोग करते हैं, तो मैं उसे यीशु के खून तले रखता हूं। (1 यूहन्ना 1:9)

यीशु के नाम में, मैं अपने परिवार के माध्यम से आने वाले किसी भी दावे को तोड़ता हूँ। (2 कुरिन्थियों 5:17)

यीशु के नाम में, मैं परमेश्वर को वो भूमि समर्पित करता हूँ जहाँ मेरा घर और चर्च है ।

यीशु के नाम में, मैं किसी भी व्यक्ति द्वारा मेरे, मेरे परिवार या मेरे चर्च के विरुद्ध किए गए हर श्राप को तोड़ता हूं।

(यीशु मेरे लिए श्राप बन गया है गलातियों 3:13)

यीशु के नाम में, मैं किसी भी कारण से हर दानव को मेरे या मेरे परिवार या मेरे चर्च के खिलाफ काम करने से रोकता हूँ ।

मैं खुद को और अपने परिवार को और अपने चर्च को केवल परमेश्वर को समर्पित करता हूं।

मुझे अपनी पवित्र आत्मा से भर दो

मुझे अपने स्वर्गदूतों का बाड़े में रख लें

मुझे अपनी महिमा के लिए उपयोग करें।

<u>यीशु के नाम में शक्ति और अधिकार</u>

<u>लूका 9:1; 10:1, 17-19</u>

(यह उपदेश अन्य उपदेशों से भिन्न है क्योंकि यह शब्द दर शब्द लिखा गया है। यह छोटा है लेकिन आप इसमें जोड़ सकते हैं, या इसे मरकुस 5, आध्यात्मिक युद्ध और यीशु के साथ जोड़ सकते हैं। आप इसे आपनी इच्छा अनुसार बदल सकते हैं या इसमें जोड़ सकते हैं ।)

<u>मुख्य विचार</u>: यह जानने के लिए कि हमारे पास शैतान और दानवों पर शक्ति और अधिकार है और यह समझने के लिए कि इसे जीत के लिए कैसे उपयोग करना है ।

<u>परिचय</u>

उदाहरण: उस समय के बारे में बताएं जब आपने या किसी ऐसे व्यक्ति ने जिसके बारे आपने सुना हो उसने ने किसी ऐसे व्यक्ति का सामना किया जो दान्वग्रस्त था, और यीशु के नाम पर विजय प्राप्त की हो । सुनिश्चित करें कि परमेश्वर को महिमा और श्रेय मिले, किसी इंसान को नहीं।

यीशु की शक्ति शैतान या दुष्टात्माओं से भी बड़ी है

वह उस शक्ति को हमारे साथ भी साझा करता है:

लूका 9:1 पढ़ें

I. अधिकार

उसने उन्हें शक्ति और अधिकार दिया ताकि वे सभी दानवों को बाहर निकाल सकें

वह हमें उसके नाम से बोलने का अधिकार देता है

उदाहरण: जब मैं भारत आया तो मैं दिल्ली हवाई अड्डे पर आया। वहां कई सैनिक थे। वे वर्दी और बैज पहने हुए थे। बैज ने उन्हें भारत के कानूनों को लागू करने का अधिकार दिया। वे अपने दम पर ऐसा नहीं कर सकते थे। जब भारत सरकार ने उन्हें बैज दिया, तो उसके नाम पर कार्रवाई करने का उनके पास सरकारी अधिकार था।

यीशु ने हमें मसीहीयों के रूप में उसके नाम पर कार्य करने का अधिकार दिया है।
जब हम मसीही बने तो उसने हमें वह दिया।
उसने उस समय हमें बहुत कुछ दिया

उसने हमारे सभी पापों को हमेशा के लिए क्षमा कर दिया
उसने हमें अपने बेटे और बेटियां बनाया

हम जब भी उससे बात करना चाहें, वह हमें प्रार्थना में उससे बात करने का अधिकार देता है

वह गारंटी देता है कि हम हमेशा उसके साथ स्वर्ग में रहेंगे

(अधिक जोड़ें.....)

जब हम मसीही बन जाते हैं तो वह हमें बहुत कुछ देता है।

लेकिन कभी-कभी हम भूल जाते हैं और उन चीजों का इस्तेमाल नहीं करते हैं।

उदाहरण: एक अनाथ लड़का था जो झुग्गियों में रहता था। उसका कोई परिवार नहीं था या उसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था। एक दिन एक अमीर आदमी झुग्गी-झोपड़ियों से गुजर रहा था और उसने लड़के को देखा। वह उसकी मदद करना चाहता था इसलिए वह उसे घर ले गया और उसे अपने बेटे के रूप में अपनाता है । अब लड़के के पास वह सब कुछ था जो पिता के पास था। यह उसके लिए अद्भुत था। लेकिन कभी-कभी वह अपना सब कुछ भूल जाता था। वह भूखा हो जाता और भीख माँगना या भोजन चुराना शुरू कर देता। तब वह उसे याद करता जो कुछ उसके पास था जब वह अपने पिता के साथ होता , और उसके पास वापस आना चाहता।

कभी-कभी हम उस लड़के की तरह होते हैं। हमारे पास वह सब कुछ है जिसकी हमें यीशु में आवश्यकता हो सकती है लेकिन कभी-कभी हम भूल जाते हैं और हम जीत के बजाय हार में जीते हैं। यह कभी ना भूलें कि परमेश्वर ने आपको अपना अधिकार दिया है। लेकिन उसने हमें कुछ और भी दिया है

II. शक्ति

उसने हमें शक्ति भी दी है।

एयरपोर्ट पर उन जवानों के पास एक से बढ़कर एक बैज था। उनके पास और क्या था ? एक बंदूक

अगर कोई उनके अधिकार को नहीं मानेगा , तो उनके पास इसे लागू करने के लिए एक बंदूक थी

परमेश्वर ने हमें अपना अधिकार दिया है, लेकिन उसने हमें अपनी शक्ति भी दी है

यह हमारी शक्ति नहीं है, यह उसकी शक्ति है

बाइबल कहती है कि जब पवित्र आत्मा हम पर आता है तो हमारे पास शक्ति होती है

III. शिष्य अधिकार और शक्ति का उपयोग करते हैं

हमारे पास दानवों पर अधिकार और शक्ति है

बाइबल कहती है कि प्रारंभिक शिष्यों ने उस शक्ति और अधिकार का इस्तेमाल किया जो यीशु ने उन्हें दिया था

पढ़ें लूका 10:1, 17-19

जब चेले वापस आए तो उन्होंने कहा, "दुष्टात्माएँ तेरे नाम से हमारे आधीन होती हैं!"

यीशु ने कहा कि उन्हें ऐसे करना ही होगा

यीशु वहाँ था जब शैतान को स्वर्ग से बाहर निकाला गया था

शैतान के पास तब भी परमेश्वर पर विजय पाने की शक्ति नहीं थी, और अब भी उसके पास नहीं है।

आयत 19 सांप और बिच्छू को रौंदने का अधिकार = शैतान और दानवों की तस्वीर

उसने हमें उन पर शक्ति और अधिकार दिया है

वह कहता है कि हम दुश्मन की सारी शक्ति को दूर कर सकते हैं

वह कहता है कि कुछ भी हमें नुकसान नहीं पहुंचाएगा - हमें शैतान और उसकी ताकतों से डरने की जरूरत नहीं है

IV. पौलूस अधिकार और शक्ति का उपयोग करता है

शिष्यों ने उस शक्ति का प्रयोग किया

पौलूस ने भी इसका इस्तेमाल किया

पढ़ें प्रेरितों 16:16-18

पौलूस के पीछे एक दासी है जिस पर एक दुष्टात्मा से जकड़ी हुई है

दानव ने भविष्य की भविष्यवाणी करने का नाटक किया और लड़की के मालिक बहुत पैसा कमा रहे हैं

दानव वास्तव में भविष्य नहीं जानते

लेकिन वे लंबे समय से हैं, बहुत होशियार हैं और अच्छे अनुमान लगा सकते हैं

साथ ही राक्षस एक साथ काम करते हैं ताकि ऐसा लगे कि वे भविष्य जानते हैं

लड़की के अन्दर दानव वो कहता कि क्या होने वाला था

अन्य दानव इसे ऐसा बनाएंगे ताकि यह वैसा ही हो जाऐ

इस प्रकार ऐसा लगता था कि वे भविष्य जानते हैं

पौलूस इस लड़की में दानव से बहुत परेशान था

तब वह घूमा और उस ने दुष्टात्मा को आज्ञा दी

"यीशु मसीह के नाम में मैं तुम्हें उससे बाहर आने की आज्ञा देता हूं"

दानव तुरंत चला गया

V. "यीशु के नाम पर"

ध्यान दें कि पौलुस ने क्या कहा - यीशु मसीह के नाम पर

क्या होता , यदि उसने कहा होता की मैं पौलूस के नाम पर तुम्हें आज्ञा देता हूं?

जब चेले वापस आए (लूका 10) उन्होंने कहा कि जब आपके नाम पर आज्ञा दी गई तो दानवों ने आज्ञा का पालन किया

हम यीशु के नाम के अधिकार में ऐसा कर सकते हैं, अपने आप में नहीं बल्कि केवल उसी में

हमारे नाम की कोई अहमियत नहीं है, लेकिन उसका ही नाम सब कुछ है

कौन सा बेहतर है, हमारा नाम या यीशु का नाम

हम यीशु के नाम में प्रार्थना करते हैं

हमारे पास यीशु के नाम का अधिकार है

हम अब प्रार्थना करना चाहते हैं और उस अधिकार का उपयोग करना चाहते हैं

हम ने जो बताये, वो सभी कारण जिनसे दानव अंदर आ सकते हैं

हम यीशु के नाम से प्रार्थना करके और उन दरवाजों को बंद करना चाहते हैं

मैं प्रार्थना करूंगा और फिर तुम मेरे बाद प्रार्थना करो

याद रखें यह मेरा नाम नहीं बल्कि यीशु का नाम है!

मैं चाहता हूं कि आप जाने और देखे कि आप आपने पास शक्ति और अधिकार का उपयोग कैसे करना है

तो आप अपने लिए प्रार्थना कर सकते हैं

और इसी तरह अपने परिवार और चर्च के लिए भी प्रार्थना करें

लेकिन पहले किसी भी कारण से वो दरवाजा बंद करें , जिस से दानव आपके जीवन या परिवार में काम करने का दावा करते हैं

उद्धार के लिए सामूहिक प्रार्थना

प्रिय यीशु, हम आपका धन्यवाद करते हैं उस उद्धार के लिए जो आप ने यीशु के नाम में हमें दिया है

हम जानते हैं कि आप शैतान और उसके राक्षसों से बड़े हैं

हम जानते हैं कि आपके पास उन पर शक्ति और अधिकार है

हम जानते हैं कि आपने हमें यीशु के नाम पर वह शक्ति और अधिकार दिया है।

यीशु के नाम में, मैं किसी भी दानव को मेरे या मेरे परिवार या मेरे चर्च के खिलाफ काम करने से रोकता हूँ

यीशु के नाम में, मैं हर कारण और दरवाज बंद कर देता हूं, जिस से उन्हें लगता है कि वे मेरे खिलाफ काम कर सकते हैं।

यदि मैंने कोई ऐसा पाप किया है जिस का वे मेरे विरुद्ध काम करने के लिए उपयोग करते हैं, तो मैं उसे यीशु के खून के तले रखता हूं।

यीशु के नाम में, मैंने उन्हें काम करने से रोकता हूँ और उन्हें जाने की आज्ञा दी।

यीशु के नाम में, मैं अपने परिवार के माध्यम से आने वाले किसी भी दावे को तोड़ता हूँ।

मैं परमेश्वर के परिवार में एक नई रचना हूं।

मैं अपने नाम या परिवार के माध्यम से मेरे खिलाफ किसी भी दावे को रोकता हूं।

यीशु के नाम में, मैं उस भूमि परमेश्वर को समर्पित करता हूँ जहाँ मेरा घर और चर्च है ।

मैं केवल उसकी उपस्थिति को उन स्थानों को भरने और उपयोग करने के लिए प्रार्थना करता हूँ।

यीशु के नाम में, मैं किसी भी दावे को तोड़ता हूँ जो दानव उन स्थानों से कर सकते हैं।

यीशु के नाम में, मैं किसी भी व्यक्ति द्वारा मेरे, मेरे परिवार या मेरे चर्च के विरुद्ध दीए गए किसी भी श्राप को तोड़ता हूं।

यीशु ने मेरे सभी शापों को क्रूस पर ले लिया है।

उसकी शक्ति ने मेरे विरुद्ध शत्रु की हर शक्ति को तोड़ दिया है।

इसलिए यीशु के नाम में, मैंने किसी भी दुष्टात्मा को मेरे या मेरे परिवार या मेरे चर्च के खिलाफ काम करने से रोकता हूँ ।

मैं खुद को और अपने परिवार को और अपने चर्च को केवल परमेश्वर के लिए समर्पित करता हूं।

मुझे अपनी पवित्र आत्मा से भर दो। मुझे अपने स्वर्गदूतों का बाड़े में रख लें।

मुझे अपनी महिमा के लिए उपयोग करें।

यीशु के नाम में मैं प्रार्थना करता हूँ। अमीन

जनाजे की रसम

<u>यीशु जीवन को अर्थ देता है</u>

<u>सभोपदेशक 1:1-8; 3:1-8; 12:1,13</u>

<u>मुख्य विचार:</u> लोगों को यह दिखाने के लिए अंतिम संस्कार के संदर्भ का उपयोग करना कि परमेश्वर के बिना जीवन कैसे खाली है, पर यीशु के साथ जीवन का अर्थ और उद्देश्य है। उद्धार के लिए यीशु में अपना विश्वास रखने और उसकी आज्ञाकारिता में जीने के लिए सभी को प्रोत्साहित करें।

<u>परिचय</u>

भजन सहिता 42:1-2, 19 पढ़िए

भजन संहिता 23; यूहन्ना 14:1-3, 27 जनाजो की रसम के लिए अन्य बाइबल हिस्सों में शामिल है

सुलेमान अब तक का सबसे बुद्धिमान व्यक्ति था

वह जीवन के बारे में सबसे अधिक जानता था

उसके साथ बात करना और उससे सवाल पूछना बहुत दिलचस्प होगा

कई लोग उस से पूछते थे कि जीवन का उद्देश्य क्या है और जीवन का अर्थ और महत्व कैसे खोजा जाए

सौभाग्य से उसने सभोपदेशक नामक अपनी पुस्तक में इन प्रशनों का उत्तर पहले ही दे दिया था

आइए देखें कि वह हमें उस पुस्तक में जीवन और अनंत काल के बारे में क्या बताता है

<u>I. परमेश्वर के बिना जीवन का खालीपन</u>

सभोपदेशक 1:1-2 पढ़ें

अर्थहीन = हिब्रू हेबेल 29 आयातों में 35 बार

अर्थहीन = वास्तविक पदार्थ के बिना, मूल्य, स्थायित्व, महत्व, अर्थ

पढ़ें सभोपदेशक 1:3

सूर्य के नीचे = 27 आयातों में 29 बार

जिंदगी को इस जिंदगी के नजरिए से ही देखिए

इस दुनिया की चीजों में अर्थ, महत्व नहीं मिल सकता है

क- मैं कौन हूँ?

ख- मैं कहां से आया हूं?

ग- मैं यहाँ क्यों हूँ?

घ- इस जीवन के बाद क्या होता है?

जनाजे से मन में इस तरह के विचार आते हैं

परमेश्वर के बिना जीवन खाली और अर्थहीन है

उदाहरण: इसका उदाहरण किसी के खुद के जीवन से है, जिसे आप जानते हैं या जिसके बारे में आपने सुना है

आपने चारों ओर देखने में जवाब नहीं पा सकते

ऐसा लगता है जीवन में कुछ भी नहीं बदलता

पढ़ें सभोपदेशक 1:4-7

इससे भी बुरी बात यह है कि कुछ भी संतोषजनक नहीं लगता है

पढ़ें सभोपदेशक 1:8

संक्रमण

परमेश्वर के बिना जीवन के खालीपन को दिखाने के बाद, सुलेमान परमेश्वर के लिए जीए गए जीवन की पूर्णता को दिखाता है

II. जीवन का उद्देश्य परमेश्वर के लिए जिया

इस संदर्भ में सुलेमान अपना उत्तर देना शुरू करता है कि हम यहाँ क्यों हैं और जीवन क्या है

पढ़ें सभोपदेशक 3:1-8

फिर से सभोपदेशक 3:1 पढ़ें

समय/मौसम = नियुत चक्र

परमेश्वर इस जीवन के प्रभारी हैं

- हर चीज के लिए एक समय और योजना है

सब कुछ वैसा ही होता है जैसा वह योजना बनाता है

शेष सभोपदेशक 13

14 आयत - विपरीत (7 पूर्ण संख्या की पूर्णता , यह सात को दोगुना करता है)

2 आयत -जन्म लेने का समय और मरने का समय,

इन पर मनुष्य का कोई नियंत्रण नहीं है, केवल परमेश्वर का है

निर्धारित नमूना : शुरू करने का समय और समाप्त करने का समय

मरने वाले के पास पैदा होने का समय था, मरने के लिए नियत समय नहीं था

दोनों जीवन का हिस्सा हैं

रोपण का समय और जड़ से उखाड़ने का समय,

वसंत में रोपण करना चाहिए - पतझड़ में पौधे नहीं लगा सकते और वसंत में फसल काट सकते हैं

रोपण से पहले फसल कटाई नहीं कर सकते

परमेश्वर के पास हमारे जीवन में हर चीज के लिए उचित समय होता है, हम उन्हें बदल नहीं सकते

3 आयत- मारने का समय और चंगा करने का समय,

परमेश्वर विपत्तियों और मृत्यु को देश पर प्रभावी होने देते हैं, फिर उपचार चक्र में शुरू होता है

फाड़ने का समय और निर्माण करने का समय,

विनाश और क्षय जीवन चक्र का हिस्सा हैं, लेकिन हमेशा के लिए नहीं रहते

फिर विकास और निर्माण का समय आता है

4 आयत- रोने का समय और हंसने का समय,

शोक करने का समय और नृत्य करने का समय,

जीवन हमेशा मजेदार और अनानाद्म्य नहीं होता, लेकिन यह हमेशा दुखदायक भी नहीं होता दुख और सुख दोनों का जीवन में अपना समय होता है

(चित्र उदारण : इसका उदाहरण किसी के आपने जीवन से, जिसे आप जानते हैं या जिसके बारे में आपने सुना है)

5 आयत -पत्यर बिखेरने का समय, और उन्हें बटोरने का समय,

बगीचे से पत्थर फेंके, उन्हें एक इमारत बनाने के लिए इकट्ठा करें

गले लगाने का समय और परहेज करने का समय,

पति-पत्नी - मिलन का समय, मिलन ना करने का समय मतलब अन्य कार्य करने का समय

6 आयत- खोजने का समय और खोजना बंद करने का समय,

खोई हुई चीजों की तलाश करने का समय, फिर उन्हें हमेशा के लिए छोड़ देने का समय

रखने का समय और फेंकने का समय,

बहुत महत्वपूर्ण काम का समय, और आराम करने और जीवन को आसान बनाने के लिए

7 आयत- फाड़ने का समय और सिलने का समय,

शोक में वस्त्र फाड़ना = शोक करने पर सुधारना

चुप रहने का समय और बोलने का समय,

सुनना अच्छा है और हमेशा बात करते रहना नहीं

लेकिन जब कुछ कहने का समय है और उस समय हमें चुप नहीं रहना है, तो हमें बोलना चाहिए

(उदाहरण: इसका उदाहरण किसी के आपने जीवन से, जिसे आप जानते हैं या जिसके बारे में आपने सुना है)

8 आयत-प्रेम करने का समय, और बैर करने का समय,

प्रेम परिवार, परमेश्वर = घृणा पाप, बुराई, अन्याय

युद्ध का समय और शांति का समय।

निर्दोषों और हमारी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए कभी-कभी युद्ध अवश्यंभावी होता है

लेकिन युद्ध हमेशा नहीं होता, शांति का भी समय होते हैं।

सुलेमान ने तर्क दिया कि परमेश्वर ने हर चीज के लिए एक समय नियुत किया है (3:11),

पढ़ें सभोपदेशक 3:11

परमेश्वर ने ना केवल हर चीज को समय दिया है - वह प्रभारी है

वह चीजों को सुंदरता (जीवन, अर्थ, उद्देश्य) देता है

उसने मनुष्यों के मनों में भी अनन्तकाल स्थापित कर रखा है;

केवल उसके ही माध्यम से जीवन का अर्थ खोजने के लिए परमेश्वर ने इसे हमारे दिल में रखा है,

हम जीवत रहने से ज्यादा समय मृतक अवस्था में बिताते हैं - जीवन छोटा है, अनंत काल हमेशा के लिए है

मनुष्य का आश्चर्य होना स्वाभाविक है कि हमारे मरने के बाद क्या होगा?

"मैं यहाँ क्यों हूँ?"

"मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है?"

"मेरे मरने के बाद क्या होता है?"

ये उत्तर "सूर्य के नीचे" - इस जीवन में नहीं मिल सकते

इन्हें परमेश्वर में पा सकते हैं

परमेश्वर जो करता है वह सर्वदा तक के लिए रहता है

पढ़ें सभोपदेशक 3:14

हम जो करते हैं वह अस्थायी है, स्थायी नहीं है - जो परमेश्वर करता है वह हमेशा के लिए रहेगा

जब सुलेमान इस पुस्तक के माध्यम से इस विचार को विकसित करता है तो वह अंतिम अध्याय पर आता है:

पढ़ें सभोपदेशक 12:1

जीवन की शुरुआत परमेश्वर के लिए करें, स्वयं के लिए नहीं - फिर अर्थ/उद्देश्य खोजें

सुलेमान ने अपने जीवन दर्शनशास्त्र का समापन इन शब्दों के साथ किया:

पढ़ें सभोपदेशक 12:13

परमेश्वर से डरना

भय = सम्मान, उसकी शक्ति और समर्थ को पहचानो

उसके लिए जियो, ना कि खुद के लिए

उसकी आज्ञाओं का पालन करना ,

उसकी और उसकी आज्ञाओं का पालन करें

जीवन का उद्देश्य - यीशु के लिए जीना

हम उसके लिए जीते हैं क्योंकि वह हमारे लिए मरा :

<u>निष्कर्ष</u>

(उद्धार की योजना की व्याख्या करें ताकि सभी जान सकें कि यह क्या है और यीशु के लिए कैसे जीना है)

समापती प्रार्थना

बाइबल

वचन का अधिकार

2 तीमुथियुस 3:16-17; इब्रानियों 4:12

मुख्य विचार: यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर मौजूद है और बाइबल हमारे लिए उसका सच्चा वचन है और हमारे लिए इसे जानना और उसका पालन करना महत्वपूर्ण है। बाइबल का अध्ययन करने और उसे लागू करने को जानने में मदद करने के लिए।

परिचय

आपकी पसंदीदा पुस्तक कौन सी है? तुम्हें यह क्यों पसंद है?

I. परमेश्वर के वचन की सच्चाई

क- परमेश्वर सच है

अस्तित्व की व्याख्या नहीं की गई, सिद्ध किया गया है - बस मान लिया गया है , प्रकृति में देखा गया है - रोमियों 1:20; भजन संहिता 19:1-6

संसार का डिजाइन परमेश्वर को ढूंढता है

यदि आप को किसी ऐसे क्षेत्र में घड़ी मिलती हैं, आप जानते हैं कि किसी ने इसे बनाया है, तो आपने आप ही नहीं बन गयी

हमारी संसार प्रकृति और हमारे शरीर में अद्भुत ढंग से भरी हुई है

दिल में परमेश्वर द्वारा बनाया खालीपन वही भर सकता है

इतनी सारी अस्वीकृति क्यों? - खुद को नम्र नहीं करना चाहते, उसके निरपेक्षता के प्रति जवाबदेह बनें

संक्रमण

यदि परमेश्वर मौजूद है, तो हम उसके बारे में कैसे जान सकते हैं?

ख- बाइबल सच है

एकमात्र आधिकारिक रिकॉर्ड, सत्य और प्रेरित

पढ़ें 2 तीमुथियुस 3:16-17; इब्रानियों 4:12

परमेश्वर की ओर से एक सच्चा, सटीक प्रकाशन संभव है और यह आवश्यक है

यह संभव है

यदि कोई परमेश्वर है, तो यह उचित ही है कि वह स्वयं को मनुष्य के सामने प्रकट करे

-सृष्टि में, विवेक केवल एक खुरदरी छवि / रेखाचित्र है कि परमेश्वर कैसा है

-लिखित शब्द द्वारा सबसे पूर्ण, सटीक प्रकाशन

यदि वे ब्रह्मांड की रचना कर सकता हैं, तो वे स्वयं को एक पुस्तक में प्रकट कर सकता हैं और आज इसे सटीक रख सकता हैं

यह आवश्यक है

इसके बिना हम परमेश्वर के बारे में नहीं जान पाते या कि वह हमसे कैसे जीने की चाहत रखता है

बाइबल ऐसी किताब नहीं है जिसे आदमी लिखता यदि उसने लिखना चाहा होता, या लिख सकता है तो लिख लेता

मनुष्य नहीं जानता: सृष्टि, एक परमेश्वर, त्रिमूर्ति, अनंत काल, भविष्य

विज्ञान और इतिहास (पुरातत्व) बाइबल में हर चीज की पुष्टि करते हैं

सैकड़ों पूर्ण भविष्यवाणियाँ - दिखाती है कि बाइबल सच है

पूर्ति की संभावना = हर तारे को हजारों बार भरने के लिए पर्याप्त चांदी के सिके

संक्रमण

यदि बाइबल परमेश्वर का वचन है, तो इतने सारे लोग इसे अस्वीकार क्यों करते हैं?

मनुष्य क्यों बाइबल को लगातार अस्वीकार करता है?

कई साल पहले, इंग्लैंड की यात्रा के दौरान, एक धनी व्यापारी एक शक्तिशाली माइक्रोस्कोप से मोहित हो गया था। इसके लेंस(शीशे) से देखते हुए क्रिस्टल और फूलों की पंखड़ियों का अध्ययन करने के लिए, वह उनकी सुंदरता और विस्तार पर चकित था। उसने एक को खरीदा और उसे घर ले गया। उसन इसका उपयोग करने में पूरी तरह से आनंद लिया जब तक कि एक दिन उसन उस भोजन की जांच नहीं की जिसे वह रात के खाने के लिए खाने की सोच रहा था। उसने देखा कि उसमें छोटे-छोटे जीव रेंग रहे थे। वह विशेष रूप से इस भोजन का शौकीन था और नहीं जानता था कि अब क्या करे । अंत में उसने निष्कर्ष निकाला कि इस दुविधा से बाहर निकलने का केवल एक ही रास्ता था: उन्होंने माइक्रोस्कोप को टुकड़ों में तोड़ दिया।

बहुत से लोग बाइबल के साथ ऐसा ही करते हैं क्योंकि यह उनके पाप को प्रकट करती है।

वे एक पवित्र परमेश्वर के प्रति जवाबदेह नहीं होना चाहते हैं इसलिए वे उसे और उसके वचन को अस्वीकार करते हैं

वे जो चाहते हैं वैसे करना चाहते हैं जैसे चाहते हैं वैसे जीना चाहते हैं , इसलिए वे कहते हैं कि ना कोई परमेश्वर है और ना बाइबल है

अगर वे मानते हैं कि परमेश्वर मौजूद है और बाइबल उसकी इच्छा प्रकट करती है तो वे जवाबदेह हैं

फिर बजाय इस के कि वे जो कुछ भी चाहते हैं उसे करें उनके पास हर चीज के लिए पूर्ण मानक हैं

संक्रमण

इसलिए चूँकि परमेश्वर का वचन सत्य और प्रेरित है, यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है

II. परमेश्वर के वचन का महत्व

क- परमेश्वर का वचन अमर है

दुनिया आज अस्थिर है, किसी चीज पर भी निर्भर नहीं कीया जा सकता है

जीवन का निर्माण नहीं कर सकते:

-वित्त पर , यह अस्थिर है और किसी भी क्षण जा सकता है

-नौकरी, अर्थव्यवस्था वही है, वैसे भी कार्य किये जाने के लिए बहुत पुरानी है

-स्वास्थ्य, बुढ़ापा आयेगा और स्वास्थ्य बिगड़ेगा

-रिश्ते, बदल जाते हैं, लोग चले जाते हैं, सबकी अपनी-अपनी खामियां होती हैं

स्थिरता केवल परमेश्वर और उसका वचन ही है, जो सर्वदा के लिए अमर है

पढ़ें भजन संहिता 119:89

ख- परमेश्वर का वचन हमारा हथियार है

परमेश्वर का वचन हमारा एकमात्र आक्रामक हथियार

इफिसियों 6:17 पढ़िए

परीक्षा में आने पर यीशु ने बाइबल का हवाला दिया !!! अगर उसे ऐसा करने की ज़रूरत है, तो हमें भी है !

परमेश्वर का वचन उपयोगी है , शक्तिशाली है , वही करता है जो तलवार करती है

इब्रानियों 4:12 पढ़ें

बाइबल सत्य है-आपके लिए यह क्या मायने रखता है ?

1. यह सब सच है: स्वर्ग, नरक, पाप, उद्धार , अनुग्रह, परमेश्वर का प्रेम और दया सभी मौजूद हैं

2. अस्थिरता और परिवर्तन से भरी दुनिया में जाने के लिए हमारे पास एक पूर्ण मानक है

3. हमारे पास परमेश्वर के मन और विचारों की अंतर्दष्टि है! - उसकी विश्वदृष्टि ही मेरी विश्वदृष्टि है!

4. बाइबल में दर्ज सुख और वादे सचे हैं, तोड़े नहीं जाएंगे

5. पाप पर यीशु की विजय, दुनिया निश्चित है - वह यहाँ और जल्द ही अपना राज्य स्थापित करेगा!

III. परमेश्वर के वचन का उपयोग

क- दैनिक अभ्यास

पढ़ें प्रेरितों 17:11

बेरेन्स नामक व्यक्ति प्रतिदिन शास्त्रों की खोज करता था - क्या आप करतें है ?

सप्ताह में एक उपदेश की स्थिति पर कभी कोई बाइबल विद्वान नहीं बना

बाइबल हमारी तलवार है - इसका उपयोग करना सीखना चाहिए

अजायबघर में तलवार को देखकर किसी ने कभी नहीं सीखा कि तलवार का उपयोग कैसे किया जाता है,

ना किसी और के द्वारा इसका उपयोग किए जाने के बारे में सुनने से कभी कोई सीख पाया है।

तलवार चलाना सीखने के लिए प्रतिदिन, घंटे दर घंटे तलवार से अभयास करना चाहिए,

यह स्वाभाविक रूप से नहीं आता इसमें कामयाब होने के लिए समय निकालें।

शैतान समय, प्राथमिकताओं और किसी काम पर जोर देने में बेमतलब दखलअंदाजी करता है

संक्रमण

दूसरों से बाइबल सीखना ठीक है, लेकिन इसे स्वयं भी पढ़ना और सीखना चाहिए।

ख- व्यक्तिगत अभ्यास

आपको दूसरों द्वारा वचन दिए जाने की प्रतीक्षा ना करें, स्वयं इसका अध्ययन करें

उपदेश, बाइबल अध्ययन अच्छा है, लेकिन केवल इस पर भरोसा ना करें

किताबें, रेडियो, स्पीकर, ऑडियो टीचिंग अच्छा है, लेकिन फिर भी सेकेंड हैंड ही है।

आप नहीं चाहते कि कोई और आपका खाना चबाकर आपको निगलने के लिए दे, किया आप चाहेंगे, नहीं ना ? आप इसे स्वयं चबाना चाहते हैं। जब आप केवल दूसरों से बाइबल सीखते हैं तो आप वह निगल रहे होते हैं जो उन्होंने चबाया था। अपना खुद का आध्यात्मिक भोजन चबाना सीखें, अपने लिए बाइबल का अध्ययन करें।

पढ़ें 2 तीमुथियुस 3:16-17

परमेशवर -श्वास-अर्थ? 'साँस में' = "परमेश्वर द्वारा प्रेरित"

शिक्षण - मतलब? बाइबल इसे कैसे करती है? अपने जीवन में इसका उदाहरण?

ताड़ना - मतलब? बाइबल इसे कैसे करती है? अपने जीवन में इसका उदाहरण?

सुधारना - मतलब? बाइबल इसे कैसे करती है? अपने जीवन में इसका उदाहरण?

धार्मिकता में प्रशिक्षण - मतलब? बाइबल इसे कैसे करती है? अपने जीवन में उदाहरण?

सुसज्जित/ लैस होना - मतलब? बाइबल इसे कैसे करती है? अपने जीवन में उदाहरण?

पूरी तरह से सुसज्जित - मतलब? बाइबल इसे कैसे करती है? उदाहरण?

अच्छा काम - मतलब? बाइबल इसे कैसे करती है? उदाहरण?

हर अच्छा काम - मतलब? बाइबल इसे कैसे करती है? उदाहरण?

ग- वचन याद रखना = हकीकत में जीतना

पढ़िए भजन 119:9-11

यीशु इसे दिल से जानता था, पुराने नियम का अधिकांश भाग - परीक्षा के समय व्यवस्थाविवरण का 3 बार हवाला दिया

हमारे लिए एक ही प्रलोभन, शैतान, दानवों पर विजय पाने के लिए यही लागु होता है

घ- वचन पर मनन करना

भजन संहिता 1:2 पढ़ें और इसके बारे में सोचें, मन/दिल को पवित्रशास्त्र से भरें और इसको विचार और दृष्टिकोण उत्पन करने दें, इसे इसमें भीगने का समय दे, आयत के बारे में अपने विचार, अंतर्दष्टि, आदि लिखें - आध्यात्मिक पत्रिका

निष्कर्ष

अपनी खुद की बाइबल रखनना महान विशेषाधिकार है

परमेश्वर के स्वयं के वचन

इस दुनिया में सब कुछ चले जाने के बाद भी टिकेगा, फिर भी सच!

जीवन के वचन - पढ़ने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, इसका अध्ययन करें!

यशायाह 40:8 और 55:11 पढ़ें बाइबल नष्ट नहीं होगी, यह हमेशा के लिए रहती है

मत्ती 24:35 और 1 पतरस 1:24-25 पढ़ें

आप बाइबल के बारे में जो सीखते हैं वह इस जीवन के लिए महत्वपूर्ण है और अनंत काल तक आपके साथ रहेगा

बाइबल का ज्ञान ही एकमात्र ऐसी चीज़ है जिसे आप अपने साथ स्वर्ग ले जा सकते हैं और अनंत काल तक उपयोग कर सकते हैं।

तो इसे सीखो और अभी इसका पालन करो।

शिष्यत्व, बपतिस्मा

यीशु का अनुसरण करना

1 कुरिन्थियों 2:15; 3:1-3

मुख्य विचार: उन लोगों को बपतिस्में का अर्थ और उद्देश्य सिखाने के लिए जिन्होंने उद्धार को स्वीकार कर लिया है और यीशु के लिए जीने को अपना जीवन समर्पित कर दिया है, और उन्हें उस प्रतिबद्धता को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करें यदि उन्होंने ऐसा नहीं किया है।

परिचय

हर रिश्ते को कायम रहने के लिए प्रतिबद्धता लाज़मी है

उदाहरण के लिए विवाह में दोनों को समर्पत होना चाहिए नहीं तो वह एक साथ नहीं बड़ेगें

ऐसा ही परमेश्वर के साथ संबंध में होता है - इसे कायम रहने के लिए प्रतिबद्धता आवश्यक है

वह हमारे लिए प्रतिबद्ध था - क्रूस पर मरता है ताकि हम उसके साथ रह सकें

हमें भी उसके प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता बनानी चाहिए।

संक्रमण

इस प्रक्रिया में हमें 2 कदम उठाने होंगे

I. उद्धार यूहन्ना 3:36 पढ़ें

क- स्वाभाविक अविश्वासी

1 कुरिन्थियों 2:14 पढ़ें

परमेश्वर के बिना पाप में मृतक ,

जीवन में स्वयं सिंहासन पर

जीवन में यीशु का कोई वास्तविक स्थान नहीं है

उसके बारे में सुना, उसके बारे में जाना है , एक अच्छा इंसान बनने की कोशिश करो

समस्या: पाप परमेश्वर से अलग करता है

उदाहरण: अस्पताल में एक ऑपरेशन कमरा साफ़ होना चाहिए, कोई रोगाणु या बीमारी नहीं, होनी चाहिए कोई संदूषण नहीं होना चाहिए। इसी तरह, स्वर्ग भी शुद्ध और परिपूर्ण होना चाहिए क्योंकि परमेश्वर वहां है, परमेश्वर की उपस्थिति में कोई पाप नहीं हो सकता है।

समाधान: यीशु हमारे पापों के लिए क्रूस पर चड़ा

ख- संसारिक विश्वासी

1 कुरिन्थियों 3:1-3 पढ़िए

परमेश्वर के मुफ्त उपहार उद्धार को स्वीकार किया

उदाहरण: *यह बताएं कि यह आपके अपने जीवन में कब हुआ - अपने उद्धार के बारे में आप की अपनी संक्षेप गवाही*

खुद अभी भी सिंहासन पर हैं, उद्धार पूर्व जीवन जी रहा हैं, लेकिन यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया है

आप ने यीशु को बहुत पहले स्वीकार कर लिया था, लेकिन जीवन नहीं बदला था ?

यीशु आप के जीवन में हैं लेकिन आपके जीवन के सिंहासन पर नहीं हैं - वहां आप हैं

-सभ्य, नैतिक व्यक्ति - पाप का जीवन नहीं जी रहे हैं

-लेकिन उसके लिए जीने के लिए प्रतिबद्ध नहीं है, ना उसकी सेवा करने , ना उसे सबसे पहला स्थान देने के लिए

-मुसीबतों में उसकी ओर मुड़ना , फिर अक्सर भूल जाना

परमेश्वर का उपयोग करना , परमेश्वर को आपका इस्तेमाल ना करने देना

संक्रमण

बाहर से दोनों दुनिया को एक जैसे लगते हैं, यीशु के लिए नहीं दुनिया के लिए जीवन जीते हैं

आंतरिक रूप से भिन्न, सांसारिक विश्वाशी स्वर्ग जा रहे हैं, स्वाभाविक अविश्वासी नरक में जा रहे हैं

लेकिन एक तीसरा विकल्प है, जो अभी तक सबसे अच्छा है

II. शिष्यत्व

यीशु- बहुतों ने अस्वीकार किया , लोगों का बड़ा समूह मुफ्त भोजन, चंगाई के लिए पीछे चलता था ,

- चुनौती मिली और छोड़ गए

कुछ जो रुके थे वह उसके शिष्य, अनुयायी हुए

1 कुरिन्थियों 2:15; 3:1पढ़िए

उद्धार के साथ साथ जीवन के हर क्षेत्र में यीशु को प्रथम स्थान पर रखने का निर्णय

आपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए उसका उपयोग ना करें, लेकिन उसे उसकी अपनी महिमा के लिए आप का उपयोग करने दें

उदाहरण: आपके अपने जीवन में कब हुआ यह बताएं - यीशु का अनुसरण करने का निर्णय लेने के बारे में स्वयं की संक्षेप गवाही

उद्धार	शिष्यत्व
उद्धार स्वीकार करें	स्वयं को देंना (वास्तव में परमेश्वर को कुछ भी नहीं देना, उसके सहारा से हाथ खींच लेना)
दृष्टि में अनंत काल	दृष्टि में यह जीवन
मसीह उद्धारकर्ता के रूप में	मसीह प्रभु के रूप में

मैं परमेश्वर पर भरोसा कर सकता हूं।- परमेश्वर मुझ पर भरोसा कर सकता हैं

मेरे लिए मुफ़्त	मुझे कीमत चुकानी पड़ती है
यदि नहीं: नर्क	यदि नहीं: इस जीवन में यीशु के लिए नहीं जी रहे हैं तो भी स्वर्ग में,

हर कोई किसी ना किसी की सेवा कर रहा है: केवल 2 विकल्प, परमेश्वर की या स्वयं की (अन्य सभी का वास्तव में क्या मूल्य हैं)

यदि सेवा नहीं करते, परमेश्वर के लिए जी रहे हैं फिर स्वयं के लिए (इससे क्या मिलेगा, खुद का क्या लाभ है)

हम अपने आप को उसी का दास बना लेते हैं जिसके आगे हम झुक जाते हैं

शिष्य - अनुयायी, यीशु के लिए जीते हैं, स्वयं के लिए नहीं - यीशु हमें किस नाम से बुलाता है

14:25-27, 33; फिलिप्पियों 3:7-8; 1 यूहन्ना 2:15-17 पढ़ें लूका

उदाहरण : 2 कुर्सियों पर एक साथ बैठना बहुत कठिन है, यह उनके बीच गिरते रहना है । दोनों में से एक को चुनना होगा। जीवन में भी वही है , स्वयं के और यीशु के लिए एक साथ नहीं जी सकते, दोनों में से एक को चुनना होगा।

उद्धार पहला कदम

शिष्यत्व अगला कदम- किसके लिए जीते हैं - स्वयं के लिए या यीशु के लिए?

बपतिस्मा - दिखाता है कि उन्होंने यह निर्णय लिया है

यीशु का अनुसरण करना - उस पर नज़र रखें, समस्याओं पर, स्वयं पर , संसार पर नहीं

पहले जीवन को ठीक करने की ज़रूरत नहीं है - परमेश्वर आपको वैसे ही चाहता और प्यार करता है जैसे आप हैं!

प्रकाशितवाक्य 3:20 पढ़ें

याद रखें - परमेश्वर हमेशा सभी के दिलों में उस स्थान को भर देता हैं जो वहां छोड़ दिया जाता है।

निष्कर्ष

मुक्ति एक मुफ्त उपहार है, यीशु ने इसके लिए भुगतान किया, हम इसे स्वतंत्र रूप से प्राप्त करते हैं

जाने कि हमें क्षमा कर दिया गया है और हम अनंत काल तक स्वर्ग में उसके साथ रहेंगे

लेकिन इस जीवन का क्या, अभी हम किसके लिए जीते हैं?

शिष्यत्व - इस जीवन में यीशु का अनुसरण करने और उसके लिए जीने की प्रतिबद्धता

यह बहुत महंगा है, क्योंकि हम वही करते हैं जो वह चाहता है, ना कि वह जो हम चाहते हैं

यह निर्धारित नहीं करता कि हम स्वर्ग में जाते हैं या नहीं, वह मुफ्त उपहार पहले ही दिया जा चुका है

यह निर्धारित करता है कि हम कैसे जीते हैं और हम यह जीवन किसके लिए जीते हैं।

उदाहरण: एक लंबी यात्रा पर जाने वाली महिला अपने गहने चोरी हो जाने के डर से घर पर नहीं छोड़ना चाहती थी इसलिए इन्हें अपनी सबसे अच्छी सहेली को सुरक्षित रखने के लिए दे देती है । उसने अपनी सहेली पर भरोसा ना करते हुए कुछ बेहतरीन टुकड़े घर पर रखे। जब वह लौटी तो उसकी सहेली के पास उसके गहने सुरक्षित थे, लेकिन जो उसने घर में रखा था वह चोरी हो गया। हम परमेश्वर को जो देते हैं वह हमारे लिए सुरक्षित रखता है, जिसे हम अपने लिए लटकाते हैं वह अंतः खो जाएगा।

तुरही की आवाज़ सुनना

यूहन्ना 14:1-3; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18

मुख्य विचार:

जाने : यीशु की वापसी और इसके लिए तैयार रहने का महत्व

करें : महसूस करें कि यह जीवन कितना अस्थायी है और यीशु के लिए जीने पर ध्यान केंद्रित करें, यह जानते हुए कि हम किसी भी समय उसके साथ होने के लिए उठाये जा सकते हैं।

परिचय

हम अपने चारों ओर की दुनिया को देखते हैं और हम पाप, पीड़ा, बुराई और दुख देखते हैं

हम जानते हैं कि परमेश्वर के पास हमारे लिए कुछ इससे बेहतर है - लेकिन यह कब होगा?

बाइबल यीशु के वापस आने पर क्या कहती है?

I. यीशु की वापसी का वायदा

यूहन्ना 14:1-3 पढ़िए

बाइबल में यीशु की वापसी (मेघरोहन)का पहला उल्लेख

यीशु की गिरफ्तारी से पहले की रात, अंतिम भोज किया, उनके पैर धोए

यीशु ने अपनी गिरफ्तारी और मृत्यु की भविष्यवाणी की थी

"व्याकुल ना हों" = उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए कहा

"मैं आपके लिए जगह तैयार करने जाता हूं" = शाब्दिक रूप से "सजाना , सेटिंग करना "

यीशु अब हमारे स्वर्गीय घर का निर्माण कर रहा हैं

कोई कीमत नहीं छोड़ी, सब कुछ पूर्णता के लिए किया गया

दुनिया को बनाने में सिर्फ 6 दिन लगे

हमारे स्वर्गीय घर ने 2,000 साल +!

"मेरे पिता का घर" = शाब्दिक रूप से "निवास स्थान"

बच्चे ने माता-पिता के आसपास आघन में घर बनाए

हम अनंत काल तक परमेश्वर के साथ रहेंगे

" मै निश्चय दुबारा आऊंगा " = यूनानी में वर्तमान काल , पूरी जिमेदारी से कहना, पूरी शुद्ता से , शाब्दिक रूप से " इतना अच्छा जैसा आ ही गया "

"यही यीशु" = हकीकत में वही, हाथ में कीलों के निशान के साथ

क्रूस दिया जाना अंत नहीं

पुनरुत्थान क्रूस को वैध बनाता है, इसका मूल्य और शक्ति दिखाता है

स्वर्गारोहण पुनरुत्थान को पूरा करता है। वापस स्वर्ग में ,लेकिन फिर भी अंत नहीं

यीशु दूर है लेकिन गयब (ख़तम) नहीं !

अब प्रार्थना करना, मध्यस्थता करना, उपहार देना, हमारी अगुवाई करना,आपने पास हमारा घर तैयार करना

एक दिन वापस आना

सूली पर चढ़ाए जाने और पुनरुत्थान से जो हासिल हुआ, उसकी पूर्णता , इसलिए अब उसके साथ हमेशा के लिए

"वापस आएगा" = वायदा , गारंटी

उदाहरण: संयुक्त राज्य अमेरिका के जनरल डगलस मैकआर्थर ने द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत में फिलीपींस छोड़ दिया, ऐसा लग रहा था कि वे हार गए थे। ऑस्ट्रेलिया पहुंचने पर उन्होंने "मैं वापस आऊंगा" वचन भेजा, 3 साल बाद उन्होंने कहा "मैं वापस आ गया हूं।" अपनी बात रखी।

"उसी तरह जैसे आपने उसे जाते देखा है" = दृश्यमान, भौतिक, वास्तविक

प्रेरितों के काम 1:10-11 पढ़ें, स्वर्गारोहण पर स्वर्गदूतों का कहना है कि यीशु वैसे ही लौटेगा जैसे वह गया था

संक्रमण

इस बीच हम उसकी वापसी की तैयारी कर रहे हैं प्रतीक्षा कर रहे हैं

II. यीशु के आने की प्रतीक्षा में

इफिसियों 5:25-27 पढ़ें, यीशु हमें पवित्र बनाने और अपनी वापसी के लिए तैयार करने के लिए हम में काम कर रहा हैं

हमें उसके साथ रहने के लिए तत्पर रहना है, हमेशा देखते रहना है (मत्ती 25:1-13)

मरकुस 13:32 पढ़ें , पता नहीं यीशु कब लौटेंगे इसलिए हमेशा तैयार रहें

III. दूल्हा आता है

1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18 पढ़ें, दुल्हन के लिए जाने वाले दूल्हे और उसके सहयोगी परिवारक लोगों का विवरण

हमारे लिए यीशु के आने का वर्णन करता है!

"सो जाना " = शरीर के बारे में है, आत्मा/प्राण के बारे में नहीं

मृत्यु के तुरंत बाद वास्तविक हम, जो अंदर का हिस्सा प्यार करता है और सोचता है, वह स्वर्ग में चला जाता है

"आज तुम मेरे साथ जन्नत में रहोगे"

"जाओ और मसीह के साथ रहो" फिलिप्पियों 1:23

"शरीर से अनुपस्थित रहना प्रभु के साथ उपस्थित होना है" 2 कुरिन्थियों 5:8

घटनाओं का क्रम

1. जो पहले ही शारीरिक रूप से मर चुके हैं

शरीर मृत, क्षत-विक्षत

शरीर के मरने पर आत्मा, प्राण सीधे स्वर्ग चले गए

जब तक पार्थिव पुनरूत्थान नहीं होता तब तक के लिए अस्थायी आध्यात्मिक शरीर दिया गया

2. जो अभी भी पृथ्वी पर जीवित हैं उनके लिए आगे

ध्वनियों

"परमेश्वर की तुरही" = लाइन में आने की आवाज़, घोषणा

"प्रधान दूत की आवाज" = मीकाएल और स्वग्दूत, यीशु के आगमन पर जयकारे लगा रहे है

"यहोवा की जयजयकार" = यूनानी 'सैन्य आदेश', परमेश्वर अपने लोगों को घर बुला रहा है

"आराम" = "प्रोत्साहित करना , उत्साहित करना " यह सत्य महान शांति और आराम देता है

संक्रमण

पौलूस 1 कुरिन्थियों में अधिक विवरण जोड़ता है

1 कुरिन्थियों 15:51-55 पढ़ें

"रहस्य" = यीशु की वापसी पुराने नियम में प्रकट नहीं हुई, केवल नए नियम में

"एक आँख का टिमटिमाना" = एक आँख को झपकने में जितना समय लगता है - अचानक होता है

"बदला हुआ" = भौतिक शरीर से अविनाशी शरीर

"अविनाशी , अमर" = यीशु के शरीर की तरह बनना

यह असीमित था (प्रकट / गायब, दीवारों के माध्यम से जाना)

यह शारीरिक था (वह खा सकता और बोल सकता था)

यह अनंत काल के लिए था (बिना बदलाव सदा के लिए)

उदाहरण: बगीचे के पिछले हिस्से में झाड़ियों में दो छोटे पक्षियों का घोंसला था। पांच साल की एमी नामक बच्ची को घोंसला मिल गया। इसमें चार धब्बेदार अंडे थे। एक दिन, कुछ समय के लिए इधर उधर रहने के बाद, वह सुंदर अंडों को देखने के लिए बगीचे में भागी। उसे निराशा हुई जब उसको वहां केवल टूटे हुए शिकल मिले। "ओह," वह रोई, "सुंदर अंडे सभी खराब और टूटे हुए हैं!" "नहीं, एमी," उसके भाई ने कहा, "वे खराब नहीं हुए हैं। उनमें से सबसे अच्छे हिस्से ने पंख ले लिए हैं और उड़ गए हैं।" यह मृत्यु में होता है। जो शरीर पीछे छूट गया है वह केवल एक खाली खोल है, जबकि आत्मा, बेहतर अंग, पंख लेकर उड़ जाता है।

<u>आगे क्या होगा</u>: हम हमेशा के लिए यीशु के साथ स्वर्ग में रहेंगे

पृथ्वी पर न्याय के 7 भयानक वर्ष होंगे

तब पृथ्वी को शुद्ध किया जाएगा और अदन की वाटिका के रूप में पुनः स्थापित किया जाएगा

(अधिक जानकारी के लिए जेरी श्मॉयर द्वारा "बाइबल की भविष्यवाणी" देखें)

निष्कर्ष

अब दैनिक जीवन पर प्रभाव

1. यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करें

उद्धार की योजना

2. यीशु के लिए हर पल जिए

इस जीवन, संसार आदि में इतना मत उलझो।

अर्थ, उद्देश्य, संतुष्टि, आदि यीशु से, इस दुनिया से नहीं!

परीक्षण, निराशा, दिल का दर्द अस्थायी, किसी भी क्षण खत्म होंगे !

ईमानदारी से सेवा करो जहाँ उसने तुम्हें रखा है

रोमियों 8:18 पढ़ें , अनन्त प्रतिफल और यीशु के साथ आशीष यहाँ के कष्टों से कहीं अधिक महान है

मत्ती 24:42, 44 पढ़ें, पता नहीं वह कब आ रहा है इसलिए हमेशा तैयार रहें

उदाहरण: एक दिन एक आदमी स्कूल में आता है और बच्चों से बात करता है, उसने कहा कि जिनके पास उसके लौटने पर पूरी तरह से साफ डेस्क होंगे,उसके पास उनके लिए एक पुरस्कार है, । एक छोटी लड़की पुरस्कार चाहती थी, लेकिन उसके पास हमेशा टेढ़ी-मेढ़ी मेज होती थी। वह हर शुक्रवार को इसे साफ करती, मंगलवार आए तो क्या? वह मंगलवार और शुक्रवार को सफाई करती लेकिन बुधवार आए तो क्या? उसने कहा कि वह इसे हर सुबह साफ कर देगी, अगर दिन खत्म हो जाए तो क्या होगा? अंत में उसने महसूस किया कि उसे इसे हर समय साफ रखना चाहिए। हमारे बारे में भी यही सचाई है

यदि हम यीशु में विश्वास रखते हैं तो उसके आने पर हमारा मेघरोहन होंगा , भले ही हमारे जीवन में पाप क्यों ना हो

परन्तु कितना अच्छा है कि जब वह वापस आएगा तो हम पापी जीवन ना जीते हों !

3. शांति रखे , प्रोत्साहित रहें

परीक्षण, निराशा, दिल का दर्द अस्थायी - किसी भी क्षण खत्म होगा !

सभी अस्थायी, यीशु के साथ हमेशा के लिए!

जीवन कठिन है, लेकिन याद रखें यीशु जल्द ही आ रहा है इसलिए रुको!

जीवन के लक्षण :

मैं कैसे सुनिश्चित कर सकता हूँ कि मैं एक मसीही विश्वासी हूँ? 1 युहुना

मुख्य विचार: उन संकेतों को जानने के लिए जो दिखाते हैं कि किसी ने यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार कर लिया है, कि निसंदेह उनके पास वास्तव में उद्धार है और इसे कभी भी खोने का डर नहीं है।

बिना किसी डर के अपने उद्धार का आश्वासन रखते हैं।

परिचय:

उदाहरण: जब एक बच्चा पैदा होता है, तो आप कैसे बता सकते हैं कि वह जीवित है या मृत?

शारीरक जीवन को दर्शाने वाले संकेत क्या हैं?

जब कोई व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से नया जन्म लेता है, तो आप कैसे बता सकते हैं?

I. नए जीवन के महत्वपूर्ण संकेत (1 युहुना)

जब कोई बच्चा पैदा होता है तो हर कोई तुरंत जांच करता है कि वह जीवित और स्वस्थ है

यह दिखाने के लिए कुछ 'संकेत' शारीरिक रूप से होते हैं - आध्यात्मिक रूप का भी यही सच है

क- यीशु में उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में विश्वास

1 यूहन्ना 5:1 पढ़ें

संकेत : दिल से जानो कि यीशु ही परमेश्वर है जो हमारे पापों का भुगतान करने के लिए पृथ्वी पर आया है

क्योंकि आप एक मसीही घर में पले-बढ़े हैं या अब चर्च जाते हैं आप मसीही नहीं हैं

समीक्षा - उद्धार की योजना की व्याख्या करें ("सुसमाचार प्रचार उपदेश देखें")

ख- संसारिक राहों पर विजय

1 यूहन्ना 5:4 पढ़े

संकेत : दुनिया के लिए जीने और वहां मिलने वाली जरूरतों की तलाश करने के बजाय, यीशु उनसे मिलता हैं

चीजों के बारे में एक नया, अलग दृष्टिकोण, प्राथमिकताएं, मकसद, लक्ष्य

हम अभी भी पाप में है सिद्ध नहीं हैं, लेकिन अब हम पाप से लड़ते हैं क्योंकि हम पाप नहीं करना चाहते हैं

पहले हम पाप करना बंद नहीं कर सकते थे, अब परमेश्वर की शक्ति से हम विजय प्राप्त कर सकते हैं

ग. जीवन में पाप पर विजय पाने की प्रबल इच्छा

1 यूहन्ना 5:18 पढ़ें

संकेत : 'पाप' के लिए पूरी तरह से अलग दृष्टिकोण - पहले की तरह इसका 'आनंद' नहीं ले सकता

हमेशा सभी पापों को दूर करने में सक्षम नहीं (आजीवन प्रक्रिया)

आध्यात्मिक रूप से बढ़ने के साथ-साथ जीवन में पाप के क्षेत्रों पर विजय प्राप्ती में उनति करना

यदि हम वास्तव में बचाए गए हैं, तो हम अपने पापों के लिए शोक मनाएंगे, उन्हें स्वीकार करेंगे, और उन पर विजय प्राप्त करेंगे

घ- वही करना जो परमेश्वर ठीक समझे

1 यूहन्ना 2:29 पढ़ें

संकेत : 'धर्मी' - पवित्र जीवन जीना, परमेश्वर के जीवन में 'सही'

पवित्र जीवन जीने की नई इच्छा, परमेश्वर को भाता जीवन

बदला हुआ जीवन, विश्वास में बढ़ने की इच्छा, यीशु की तरह बनना चाहते हैं

उद्धार पाने के लिए नहीं बढ़ना, बल्कि बढ़ना है क्योंकि उद्धार पहले ही प्राप्त है

उदाहरण: एक पत्नी के बिना एक आदमी के पास एक नौकरनी थी जिसे वह अपने घर की देखभाल के लिए भुगतान किया करता था। कुछ समय बाद उन्होंने शादी कर ली। उसने उसके घर की देखभाल करना जारी रखा, लेकिन अब उसे ऐसा करने के लिए भुगतान नहीं किया जाता था क्योंकि अब वह इसे प्यार के लिए करती थी, पैसे के लिए नहीं। इस प्रकार हमें प्यार के लिए से परमेश्वर की सेवा करनी है।

2 पतरस 3:18 पढ़ें, हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ते जाएँ

बढ़ने की आज्ञा:

1. अनुग्रह - मसीही दैनिक अनुभव (बाहरी विकास)
2. ज्ञान - परमेश्वर के वचन को सीखना (आंतरिक विकास)

ङ अन्य विश्वासियों के लिए प्यार

पढ़िए 1 यूहन्ना 3:14

संकेत : अन्य विश्वासियों के साथ आपने आप को स्वभाविक रूप से 'जुड़ा हुआ' महसूस करें क्योंकि यीशु समान्य रूप से उनकी फ़िक्र करता है, उनकी मदद करना चाहता है, उनके साथ रहना चाहता है,

जो वास्तव में बचाए गए हैं वे भी करुणा का जन्मचिह्न रखते हैं। विश्वासियों और अविश्वासियों दोनों के लिए,

क्या आप परमेश्वर के **परिवार** में अपने भाइयों और बहनों से प्यार करते हैं? जो वास्तव में बचाए गए हैं, वह हैं जो **विश्वास** के घराने, परमेश्वर के परिवार का आनंद लेते हैं और उन्हें आशीष देते हैं।

संक्रमण

जब बच्चा जन्म लेता है तो जीवन के संकेतों की तलाश कि जाती है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वह जीवित और स्वस्थ है

यदि जीवन में संकेत नहीं हैं (अब सभी के साथ मुक्ति के लिए प्रार्थना करें)

फिर पहले जन्म के समय बहुत कमजोर बच्चे को बीमारी से बचाने के उपाय करें

नए विश्वासी संदेह की बीमारी की चपेट में हैं

II.शक्क की बीमारी से बचाव

क- संदेह की बीमारी

उद्धार में शक्क : 'नहीं किया' सही, वास्तव में बचाया हुआ नहीं है

वायदा : यदि आप मानते हैं कि आपके पास अनंत जीवन है - आनंद और शांति को दूर करने के लिए शैतान मन में शक्क पैदा करता है

तारीख लिखें (या आज की तारीख भी-अगर तारीख नहीं पता है) ताकि इसे वापस देख सकते हैं

रोमियों 3:28; यहुना 3:6 पढ़ें

मुफ्त उपहार। - हमारे लिए मुफ़्त, परमेश्वर के लिए मुफ़्त नहीं!

उदाहरण: मैं आपको एक उपहार देता हूं - आपको मुफ्त, पर मैं कीमत चुकाता हूँ (उद्धार के साथ भी यही सच है , यीशु ने कीमत का भुगतान किया)

पढ़ें इफिसियों 2:8-9 सभी उद्धार परमेश्वर की कृपा से है, इसलिए कुछ भी गलत करने या खोने के लिए नहीं है

जब आप संदेह करते हैं: दिखाता है कि उद्धार चाहिए, सबूत है कि परमेश्वर काम कर रहा हैं,

अगर जीवन में पवित्र आत्मा का कोई कार्य नहीं होता तो इस की परवाह नहीं होती

ख- डर की बीमारी

उद्धार खोने का डर, अच्छा नहीं, पाप करें और उद्धार खो बैठें

पढ़ें रोमियों 6:14 हम अनुग्रह के अधीन हैं, व्यवस्था के अधीन नहीं - उद्धार को खोने से मत डरो

पढ़ें 2 तीमुथियुस 2:11-13 परमेश्वर के परिवार में पैदा हुआ - 'अजन्मा' नहीं हो सकता

उदाहरण: उड़ाऊ पुत्र - छोड़ गया , पाप किया, लेकिन फिर भी परिवार में

पढ़ें मत्ती 12:20; भजन संहिता 37:24 परमेश्वर हमारी रक्षा करता है, वह हमें किसी रीति से ना खोएगा

पढ़ें रोमियों 4:6-8 हमारे पाप पूरी तरह से हमेशा के लिए चले गए क्योंकि यीशु ने उनके लिए भुगतान किया

पढ़ें यूहन्ना 10:28-29; रोमियों 8:37-39 कुछ भी हमें परमेश्वर से अलग नहीं कर सकता, अगर हम चाहें भी तो

निष्कर्ष

उदाहरण: बच्चे की कहानी के साथ (आप, आपके बच्चों में से एक, आदि) जो शारीरिक रूप से स्वस्थ और आध्यात्मिक रूप से भी स्वस्थ है । इसे आध्यात्मिक विकास पर भी लागू करें।

शादी

<u>परमेश्वर पतियों और पत्नियों से क्या उम्मीद करता है :</u>

<u>दूसरे को पहले पर रखें।</u>

इफिसियों 5:22-33; 1 पतरस 3:1-7

मुख्य विचार: यह समझने के लिए कि पुरुषों को अपनी पत्नियों के प्रति बलिदानी प्रेम दिखाना है, और पत्निओं को आपने पतियों के प्रति विनम्र भावना दिखाना है, और यह सीखना है कि यह कैसे करें ।

<u>परिचय</u>

जब परमेश्वर ने लोगों को बनाया तो सबसे पहले विवाह का निर्माण

हालांकि वे परमेश्वर के साथ चलते और बातें करते थे, फिर भी कुछ कमी थी

इसलिए परमेश्वर ने स्त्री को पुरुष के लिए बनाया और उसने पुरुष को स्त्री के लिए बनाया।

उसने कहा कि वे एक दूसरे के बिना अधूरे हैं (उत्पत्ति 2:16)

पति-पत्नी का रिश्ता यीशु और उसकी कलीसिया की परछाई है

(इफिसियों 5)

यदि कोई पुरुष अपनी पत्नी के लिए धर्मी पति नहीं है तो परमेश्वर उसकी प्रार्थना नहीं सुनेगा (1 पतरस 3:7)

वास्तव में, यह इतना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर कहता है कि एक आदमी पासबान भी नहीं हो सकता यदि वह पहले अपनी पत्नी के लिए एक अच्छा, धर्मी पति नहीं है (1 तीमुथियुस 3:4-5)

<u>संक्रमण</u>

तो एक धर्मी पति (पुरुष), और एक धर्मी पत्नी (स्त्री), बहुत महत्वपूर्ण है

एक धर्मी पति या पत्नी होने का क्या अर्थ है?

पढ़ें इफिसियों 5:22-33

<u>I- पतिगण: बलिदानी प्रेम</u>

पति पहले - अगुवा, परिवार के लिए जिम्मेदार है

इस लिए नहीं वह उसके लिए कार्य आसान बनाने के लिए क्या कर सकती है

परन्तु इस लिए कि परमेश्वर क्या चाहता है कि वह(पति) उसके (पत्नी के) लिए करे?

परमेश्वर पति से क्या उम्मीद करता है = बलिदानी प्रेम!

अपनी पत्नी को बेशर्त प्यार करना उसके विकास के लिए महत्वपूर्ण है

क्या आपकी पत्नी आपके कारण एक बेहतर मसीही है? - या तुम्हारे होते हुए भी वह है?

पढ़िए 1 तीमुथियुस 3:4-5

सिर्फ पादरीगण ही नहीं, बल्कि परमेश्वर के मानक प्रतेयक के लिए है जो कोई भी उसकी सेवा करना चाहता है, उसके लिए जीना चाहता है, की वह उसे (पत्नी को) प्रथम स्थान पर रखे = बलिदानी प्रेम

<u>क- बलिदानी प्रेम क्या है?</u>

सभी पतियों के लिए हर समय सभी संस्कृतियों - यूएसए, भारत, आदी में यह

परमेश्वर के आदेश है, सुझाव नहीं

पढ़िए इफिसियों 5:25, 33

बाइबल में प्यार

फीलियो: दोस्ती ('फिला'डेल्फिया), सनेह - शादी के आरम्भ में,

"अगर" के कारण शर्त पर आधारित , प्यार प्राप्तकर्ता पर निर्भर होता है ,

"क्योंकि" वह घर साफ रखती है तो, अच्छा खाना बनाती है तो, बात का जवाब ना दे के हर बात में हाँ हाँ कहती है तो

अगापे प्यार हर चीज के बावजूद, चाहे कुछ भी क्कोयों ना हो,

बेशर्त प्यार, खुद के लिए प्यार, ना के इस लिए जो वह जो करती है

उदाहरण: गोमेर के लिए होशे (होशे की पुस्तक में लिखी कहानी बताएं)

प्रेम अच्छे विवाह की कुंजी

संक्रमण आदेश # 1 पति का प्यार बेशर्त है इसलिए पत्नी को प्यार महसूस होता है

ख- बलिदानी प्यार करने वाले कैसे बनें?

1. मसीह की तरह प्यार करने में पहल करने द्वारा

पढ़ें इफिसियों 5:25, 28-29 "जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया" (2 बार)

पत्नी के लिए पति के प्रेम का मानक है : अगापे प्रेम

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा जो उसने आपना ......दे दिया " यूहन्ना 3:16 परमेश्वर पिता के उदाहरण का अनुसरण करते हुए

प्रेम दिखाने वाला पहला कदम उठाएं - महिला एक ' प्रतिक्रिया करने वाली व्यक्ति है '

उससे शादी करो और उसके साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसे यीशु तुम्हारे साथ करता है !!!

उससे प्यार करो जैसे यीशु तुमसे प्यार करता है !!!! - यह आदेश, सुझाव या विकल्प नहीं

पढ़ें फिलिप्पियों 2:5-8 (हमारे लिए यीशु के बलिदानी प्रेम के बारे में बात करें, उसने हमारे लिए क्या त्याग किया उसके बारे बताएं)

क्या आप अपनी पत्नी से इतना प्यार करते हैं कि उसके लिए मर जाए?

क्या आप उससे इतना प्यार करते हैं कि उसके लिए हर दिन जी सके?

उसकी जरूरतों के बारे में सोचें और यह कि उन्हें कैसे पूरा करें?

उसकी बात सुनें और उसे प्यार और सहानुभूति दिखाएं?

कई पुरुष सोचते हैं कि महिला यहां सिर्फ उनकी सेवा और सम्मान करने के लिए है,

लेकिन पहले हमें उसका आदर करना चाहिए और उसकी सेवा करनी चाहिए जैसे कि यीशु हमारा सम्मान करता है और हमारी सेवा करता है!

संक्रमण

1. आदमी पत्नी से प्यार करे जैसे मसीह कलीसिया से प्यार करता है

2. आदमी पत्नी को आत्मत्यागी प्यार करे - सिर्फ यह उम्मीद ना करें कि वह उसके लिए बलिदान करेगी

2. आपना बलिदान देकर प्यार करें

पढ़ें इफिसियों 5:25 "उसके लिए अपने आप को दे दिया"

सेवक का अर्थ है दूसरों को पहल देना

कुछ पत्नियां ऐसा करती हैं, लेकिन केवल कर्तव्य के रूप में , प्यार में नहीं करतीं, डरती हैं अगर वे ऐसा नहीं करती हैं तो..

पति हमेशा पत्नियों को पहल नहीं देते और उनकी सेवा नहीं करते जैसे यीशु हमारे लिए करता हैं

सच्चा प्यार = दूसरों को पहले स्थान पर रखना, स्वयं को त्यागना

शादी = एक महिला के रूप में उसकी जरूरतों को जानना, उसकी जरूरतों को अपनी ज़रूरतों से पहले रखना

बच्चों को सम्भालने , घर के काम में उसकी मदद करना

जब उसकी तबीयत ठीक ना हो तो उसका ख्याल रखना

खरीदारी में मदद करना , भारी बैग खुद उठाना

छुट्टी के दिन - जांए और वो करें जो वो चाहती है

सिर्फ अपने को ही नहीं, उसके परिवार से मिलें

संक्रमण

-उसके लिए बलिदान करना -उसे दूसरों की तुलना पहल देना

3. छोड़ना और जुड़ना (औरों को छोड़ना और उस से जुड़ना)

उत्पत्ति 2:24-25 पढ़ें

विवाहित जीवन की सफलता के लिए मुख्य आयत (बाइबल में 4 बार इस का हवाला दिया गया है)

क- छोड़ें - उसे अपने माता-पिता की तुलना में पहल दें

त्याग दें, छोड़ दें , उनसे हट जाएँ , उन पर निर्भरता छोड़ दें

माता-पिता के साथ रिश्ता छोड़ दें मतलब इसलिए पत्नी पर निर्भर रहें उन पर नहीं, उनकी मदद करना बंद ना करें

माता-पिता पहले स्थान पर , साथी दुसरे स्थान पर, ऐसा नहीं , लेकिन इसके विपरीत साथी पहले स्थान पर, माता-पिता दुसरे स्थान पर

पत्नी को माता-पिता से और आपने आप से भी पहले स्थान पर रखें

माता-पिता का त्याग ना करें ना ही उनकी लापरवाही करें, बस आपने साथी की तुलना उनको दुसरे स्थान पर रखें

फिर भी प्यार करो, उनकी मदद करो, लेकिन भावनात्मक जरूरतों को पूरा करने के लिए साथी पर निर्भर रहो

ख- जुड़ना - प्रतिबद्धता

"अपनी पत्नी से " = एकवचन (एक से अधिक विवाह नहीं)

इब्रानी भाषा में इसका मतलब "पकडे रहना , पास रहना " (मॉस से हड्डी के रूप में) - 100% प्रतिबद्धता - जब तक 'मृत्यु हमे अलग ना करे "

परमेश्वर को छोड़ किसी से भी अधिक उसके करीब होना - सबसे अच्छा दोस्त होना ,

दर्द और उम्मीदें साझा करना,सपने, जो सीख रहें हैं

वह आपकी जरूरतों को पूरा करती है, ना कि कलीसिया की,अन्य, आदि

संक्रमण

परमेश्वर पतियों से जो उम्मीद करता है वह है बलिदानी प्रेम

पढ़ें नीतिवचन 18:22 धर्मी पत्नी परमेश्वर की ओर से महान उपहार

परमेश्वर पत्नियों से जो उम्मीद करता है वह एक विनम्र आत्मा है

II. पत्नियाँ: विनम्र आत्मा

क- एक विनम्र आत्मा क्या है?

परमेश्वर द्वारा आदेश, सुझाव नहीं - सभी पतियों को सभी संस्कृतियों की, सभी समय

पढ़िए इफिसियों 5:22-24; 1 पतरस 3:1

समर्पण = यूनानी शब्द, सैन्य शब्द - अधिकार के प्रति उतर्दय

"जवाब" और समर्पण - महिला एक प्रतिक्रिया करने वाली व्याक्ति है

नहीं करना चाहिए : परुष प्रादान, अपनी मर्जी करना , पत्नी को बताता है कि क्या करना है

लेकिन: यीशु जैसा आदमी, खुद शुरू करता है, उसकी जरूरतों को सबसे पहले रखता है

उसके लिए जो सबसे अच्छा है उसे करने के लिए बलिदान करता है

वह यीशु के बलिदान की तरह बलिदानी पति पर भरोसा करती है और उसको प्रतिउत्तर देती है

"पत्नियों, अपने पति को प्रभु के समान **उत्तर** दो!"

महिला ऐसे प्रतिक्रिया करे जैसे यीशु को

आदमी उसके साथ वैसा ही व्यवहार करेगा जैसा यीशु करता है, सही जवाब देगा

समर्पण करना = जवाब देना, भरोसा करना, उसे नेतृत्व करने की अनुमति देना,

बशर्ते प्यार में किया, डर से नहीं, ना कर्तव्य के तौर पर , उसे एक आदमी की तरह महसूस करने में मदद करता है, वही करें जो परमेश्वर ने करने के लिए बनाया है

पति परिवार के लिए परमेश्वर को उतर्दय है

प्रेम से शुरुआत करो , तब स्त्री विनम्र सभाव से उत्तर देती है

उदाहरण: यूसुफ ने मरियम को सबसे पहले रखा, अगर वह विश्वासघाती भी होती , उससे शादी करने को तैयार था , इसलिए उसने उस पर भरोसा किया

पहला कदम : मनुष्य त्याग, बेशर्त प्रेम के साथ शुरआत करता है

दूसरा कदम : पत्नी विश्वास के साथ जवाब देती है, समर्पण करती है , बिनशर्त जबाबी प्यार देती है

पुरुष: कर्मों द्वारा स्त्री का विश्वास, प्रेम, सम्मान अर्जित करते है

अपने अधिकार के रूप में उसकी आज्ञाकारिता की मांग ना करें - लेकिन, उस तरह जैसे यीशु हमारे साथ करता है !!!

संक्रमण

I. विनम्र आत्मा क्या है –
II. II. पत्नियों को ऐसा क्यों करना चाहिए

ख- विनम्र आत्मा कैसे प्राप्त करें

1. उसके प्यार को जवाब देकर

पढ़ें इफिसियों 5:22-23 "प्रभु के विषय में"

स्वेच्छा से, प्यार से, अपने लाभ के लिए, स्वतंत्र रूप से

अगर परमेश्वर को नहीं करती , तो वास्तव में पति को प्रस्तुत नहीं कर सकती !

पत्नी परमेश्वर से : "मैं आपको अपना प्यार और भक्ति कैसे दिखा सकती हूँ?"

परमेश्वर पत्नी से ; "पति को समर्पित होकर !"

डर अंदरूनी रिश्ते का बड़ा दुश्मन - सभी महिलाएं इससे निपटती हैं (पुरुष भी)

संक्रमण

एक विनम्र आत्मा कैसे प्राप्त करें:

-उसके प्यार का जवाब देकर

- सम्मान से, श्रद्धा से

2. आदर, सम्मान द्वारा

पढ़िए 1 पतरस 3:2; इफिसियों 5:33 "श्रद्धा," "सम्मान"

उसका आदर करें

हर आदमी को अपनी पत्नी के सम्मान और समर्थन की जरूरत होती है

पुरुषों को सम्मान चाहिए जैसे पत्नियों को प्यार चाहिए

एक पत्नी से प्रशंसा के कुछ शब्द लम्बे समय तक साथ रहते हैं

कोशिश करने, देखभाल करने, परिवार को सबसे पहले रखने के लिए उसका धन्यवाद दें

उसे बताएं कि आपको उस पर गर्व है, उसकी जरूरत है, उसकी सराहना करें कि वह आपके और परिवार के लिए क्या क्या करता है

उसकी तुलना दूसरों से ना करें

क्या आप चाहेगीं कि अन्य पत्नियों से आप की तुलना की जाए ? आपकी सास/उसकी माँ से ?

उसे प्रोत्साहित करें

"प्रोत्साहित करना" = डूबते हुए आदमी को जीवन रक्षक किश्ती में डालने जैसा होता है

"मैं उसकी सेवा कैसे कर सकती हूँ?" यह नहीं कि"वह मेरी सेवा कैसे कर सकता है"

बेशर्त प्यार = प्रोत्साहित करें, उस तक पहुंचें - अनुमोदन को रोकें नहीं क्योंकि महसूस करें कि आपको यह नहीं मिला, आप अपने पति के लिए जो करोगी वो आपको 10 गुना वापस मिलेगा

वह सदा सही नहीं होगा, हमेशा सही करें

<u>अपनी अधूरी ज़रूरतों के साथ परमेश्वर के पास जाएँ</u>

परमेश्वर को कहें कि वह पहले आपको बदले फिर आपके पति को

और परमेशवर को आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए कहें जो पति नहीं पूरी करता

कोई भी पति कभी भी सभी जरूरतें पूरी नहीं करता – जरूरतों को परमेश्वर पर छोड़ दो!

<u>निष्कर्ष</u>

परमेश्वर पतियों से जो उम्मीद करता है वह है बलिदानी प्रेम

परमेश्वर पत्नियों से जो उम्मीद करता है वह एक विनम्र आत्मा है

यह उम्मीद ना करें कि आप का साथी विवाह को इतना बेहतरीन बदल देगा

लेकिन वही बनो जो परमेश्वर चाहता है कि जो तुम हो, स्वयं को बदलो!

उदाहरण: एक पति और पत्नी के बारे में एक कहानी बताएं जो एक दूसरे से प्यार करते थे जैसे परमेश्वर ने उनसे प्यार किया और यह कि उनका विवाह और परिवार कैसा था।

परमेश्वर माता-पिता से क्या उम्मीद करता है:
ईश्वरीय प्रशिक्षण

इफिसियों 5:22-33; 1 पतरस 3:1-7

मुख्य विचार: यह जानने के लिए कि बाइबल बच्चों की परवरिश के बारे में क्या कहती है और इसे अपने परिवार में कैसे करना है।

परिचय

उदाहरण: किसी ऐसे व्यक्ति की कहानी बताएं जो एक अच्छा पिता या अच्छी माँ है और इसने आपने बच्चों को परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए बड़ने में मदद की है - यह कोई ऐसा व्यक्ति हो सकता है जिसे आप जानते हैं, आपके अपने माता/पिता या बाइबल से कोई व्यक्ति हो सकता है

संक्रमण

बच्चों को परमेश्वर के लिए जीने के लिए प्रशिक्षित करना एक कठिन जिम्मेदारी है लेकिन परमेश्वर बाइबल में हमें बताता है कि इसे कैसे करना है

I. धर्मी प्रशिक्षण क्या है?

पढ़ें उत्पत्ति 18:19 अब्राहम ने अपने परिवार को परमेश्वर के पीछे चलने के लिए प्रेरित किया

पढ़ें नीतिवचन 22:6 माता-पिता को आदेश है कि वो बच्चों को परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए प्रशिक्षित करे

परमेश्वर का अनुसरण करने का प्रशिक्षण

संक्रमण क्यों महत्वपूर्ण है?

II. ईश्वरीय प्रशिक्षण क्यों लें

पढ़ें इफिसियों 6:4 "प्रभु की शिक्षा और ताड़ना के अनुसार उनका पालन-पोषण करो।"

तो वे ऐसे पुरुष या महिला बन सकते हैं, परमेश्वर ने उन्हें जैसा बनने के लिए बनाया है

ताकि वो अधर्मी, अपरिपक्वता का परिणाम ना भुगतें

संक्रमण, हम सभी सहमत हैं कि यह महत्वपूर्ण है, लेकिन हम यह सब नहीं जानते कि इसे कैसे करना है।

III. धर्मी प्रशिक्षण कैसे प्राप्त करें

पढ़ें 1 तीमुथियुस 3:4, 12 परिवार के लिए परमेश्वर के प्रति उत्तरदाय पिता

क- बेशर्त प्यार दिखा कर

बच्चे को बेशर्त प्यार महसूस करने की जरूरत है

जब आप बच्चे थे, तो क्या आपको बेशर्त प्यार महसूस हुआ, कोई बात नहीं?

हमारे स्वर्गीय पिता से हमें जिस मुख्य चीज की आवश्यकता है वह है प्रेम

हमारे बच्चों को हमसे जो मुख्य चीज चाहिए वह है प्यार

बेशर्त प्रेम

यह नहीं -"मैं तुमसे प्यार करता हूँ अगर तुम ....." (अच्छे ग्रेड, काम)

"मैं तुमसे प्यार करता हूँ क्योंकि तुम ...."

लेकिन "मैं तुमसे प्यार करता हूँ बावजूद इसके कि....."

"मैं तुमसे बेशर्त प्यार करता हूँ, कोई फर्क नहीं पड़ता ..."

जिस तरह का प्यार हम परमेश्वर और साथी से चाहते हैं!

परिवार वह जगह है जहां बच्चों को इसका अनुभव करना चाहिए और इसे सीखना चाहिए ताकि वे इसके लिए परमेश्वर पर भरोसा करना सीख सकें

उदाहरण: यूसुफ: धर्मी पिता

यीशु के जीवन पर जबर्दस्त प्रभाव!

यीशु के पास बात करने के लिए कोई पत्नी या परिवार नहीं था , वह पिता से बात करता था !

याकूब (चर्च के प्रमुख) और यहूदा की परवरिश की गयी कि वह अच्छे आदमी बने

स्वर्गीय पिता परमेश्वर ने यूसुफ को अपने पुत्र के लिए एक सांसारिक पिता के रूप में चुना! क्योंकि ?

धैर्यवान - बहुत ज्यादा उम्मीद ना करें, खासकर जब युवा हों

सम्मानजनक - बच्चों के साथ सम्मान, आदर के साथ व्यवहार करने की आवश्यकता है

शांत - क्रोध में ना बोलें

दयालु और देखभाल करने वाला - कोमल, मददगार बनने के लिए हर संभव प्रयास करें; उनसे बात करो और उनकी बात सुनो

दौऊद : धर्मी पिता नहीं था

पिता के करीब नहीं (आपने बारे में सब कुछ भूल गया,जब शमूएल अगले राजा का अभिषेक करने आया तो भेड़ों के साथ था)

भाइयों के करीब नहीं, वह उसे नीच देखते थे

कई पत्नियाँ थी, बेटों के करीब नहीं 2 शमूएल 3:3

जब अम्मोन ने तामार का बलात्कार किया, उस वक्त अपने बच्चों को ठीक से नहीं संभाला, तब अबशालोम ने अम्मोन को मार डाला

अबशालोम - की बहन तामार के साथ सौतेले भाई अम्मोन ने बलात्कार किया

संक्रमण

आप एक पिता के रूप में अधिक किस के जैसे हैं? युसफ जैसे या दौऊद जैसे ?

हम अपने बच्चों को बेशर्त प्यार दिखाकर और परमेश्वर के चरित्र को प्रतिबिंबित करके प्रशिक्षित करते हैं

ख- परमेश्वर के चरित्र को प्रतिबिंबित करने द्वारा

ईश्वरीय उदाहरण - एक ही बात मत कहो, दूसरी करों - घर में धार्मिकता की उदाहरण स्थापित करो

पिता = बलिदानी प्रेम

माँ = विनम्र आत्मा

आप उनके साथ व्यवहार करने में परमेश्वर की तरह बनें – ऐसी परिस्थिति में परमेश्वर मेरे साथ कैसा व्यवहार करेंगा ?

कोई पाखंड, झूठ, क्रोधित शब्द, आलोचना, आलस ना हो

उनके साथ दोस्ती विकसित करें

उदाहरण: यूसुफ की तरह जैसे वह यीशु के साथ था

उनके लिए प्रतिदिन प्रार्थना करें,

उदाहरण: जैसे यीशु ने हमारे लिए प्रार्थना की और अय्यूब अपने बच्चों के लिए प्रार्थना करता था

<u>संक्रमण</u>

हम अपने बच्चों को बेशर्त प्यार दिखाकर और परमेश्वर के चरित्र को प्रतिबिंबित करते हुए प्रशिक्षित करते हैं

हम अपने बच्चों को आध्यात्मिक सच्चाई सिखाकर उन्हें तालीम भी देते हैं

ग. आध्यात्मिक सत्य सिखाने के द्वारा

1. जन्म (उद्धार - यूहन्ना 1:12,13; 3:3)

उन्हें उद्धार के बारे में सिखाएं और उन्हें उद्धार, यीशु में आध्यात्मिक जन्म की ओर ले जाएं

बना कर रखें - अपने जीवन में यीशु का अनुसरण करने का उदाहरण

-बच्चों के लिए दैनिक विशिष्ट प्रार्थना

-बात करना, सिखाना , बच्चे को रोजाना प्रशिक्षण देना

<u>संक्रमण</u> - जन्म के बाद विकास आता है - शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से बढ़ने के लिए पोषण जरूरी है

2. पोषण (भोजन)

शारीरिक विकास = स्वस्थ भोजन खाना

आध्यात्मिक विकास = बाइबल का अध्ययन (1 कुरिन्थियों 3:1-2; यिर्मयाह 15:16)

अक्सर शारीरिक और आध्यात्मिक पोषण की आवश्यकता होती है, इसके बिना कोई लंबे समय तक नहीं रह सकता, नहीं तो कमजोर हो जायेगा, बीमार पड़ जायेंगें

पढ़ें 2 तीमुथियुस 3:15 - उनके पैदा होते ही उन्हें सिखाना शुरू कर दें

हर दिन बाइबल पढ़ें, ईस के बारे में बात करें, उनके साथ और उनके लिए प्रार्थना करें

उन्हें बाइबल पढ़ना और अपने लिए परमेश्वर से प्रार्थना करना सिखाएं

उन्हें बाइबल की आयातों को याद करना सिखाएं, उनके साथ आयातों की समीक्षा करें

पढ़ें व्यवस्थाविवरण 6:6-7 - ये काम हर दिन करें, दिन भर परमेश्वर को जीवन में लागू करें

उदाहरण और वचनों के द्वारा उन्हें परमेश्वर की आज्ञा मानना और उसका अनुसरण करना सिखाएं, उसके लिए एक पवित्र जीवन जिएं

संक्रमण - अपने बच्चों को परमेश्वर के लिए कैसे प्रशिक्षित करें

उन्हें बेशर्त प्यार दिखाएं, जैसे परमेश्वर आपको दिखाता हैं और आपने चरित्र को दर्शाता हैं

उन्हें उद्धार और मसीही जीवन जीने के बारे में सिखाएं और उन्हें यीशु के लिए जीने के लिए प्रोत्साहित करें

घ- उन्हें प्रोत्साहित करके

पढ़िए इफिसियों 6:4

बच्चों के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार पिता है , मां नहीं!

उदाहरण: अब्राहाम को इसलिए चुना गया क्योंकि उसने परमेश्वर के बाद परिवार को निर्देशित किया

उदाहरण: एली ने सब कुछ खो दिया क्योंकि उसने बेटों को सही प्रशिक्षण नहीं दिया

1. + परिशिक्षण और नसीहत करना

परिशिक्षण = सुधार, जरूरत पड़ने पर अनुशासन(सख्त करवाई)

नसीहत देना = रोकना, सही तरीके से सिखाना

2.-जहरीला या भड़काऊ ना बनाये

बहुत अधिक उम्मीद ना करें (बहुत अधिक/कठिन नियम)

गुस्से में ना बोलें या आलोचना ना करें (अपने बचपन को याद रखें)

हर दिन कुछ उत्साहजनक कहें

डर से प्रेरित ना करे , लाढ- प्यार को रोक लें

लेकिन तारीफ करें, प्रोत्साहित करें, धन्यवाद करें

ङ लगातार प्यार भरे अनुशासन से

क्या आप अपने बच्चों से इतना प्यार करते हैं कि उन्हें अनुशासित कर सकें?

परमेश्वर का प्रेम हमारे प्रति उसके अनुशासन में सिद्ध हुआ है (इब्रानियों 12:5-12)

अनुशासन में बने रहें

माता-पिता में से कोई एक कठिन और दूसरा आसान नहीं होता - माता-पिता दोनों के समानय मानक और अनुशासन होते हैं

ऐसा नहीं है की कोई हरकत एक बार ठीक, दूसरी बार ठीक नहीं

लड़कों की तुलना में लड़कियों के लिए अलग मानक नहीं

घर पर या घर से बाहर दूसरों के होने पर नियम अलग नही हैं

माता-पिता के मूड पर निर्भर होने की बात नहीं है

उदाहरण: मानोआ और शिमशोन की पत्नी - युवा होने पर उसे पापी गतिविधियों के साथ जाने दिया , नियंत्रण खो बैठा

अच्छे अनुशासन के लिए टिप्स

बच्चों को सजा की जरूरत है लेकिन यह प्यार में किया जाना चाहिए (नीतिवचन 22:15; 23:13)

अनुशासन का उद्देश्य बच्चे को परिपक्व बनाना है, ना कि उसने जो गलत किया है उसकी सजा देना

अपने शब्दों से बच्चे को नाराज ना करें, आलोचना ना करें, चिल्लाएं नहीं , क्रोध का प्रयोग ना करें, शिकायत ना करें या बच्चे को नीच ना दिखाएं

छोटे बच्चों की पिटाई की जा सकती है, लेकिन जैसे-जैसे वे बड़े होते जाते हैं अन्य साधनों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए

उन्हें अपने कार्यों के परिणाम भुगतने दें, विशेषाधिकारों को खोने दें, आदि।

जब अनुशासन समाप्त हो जाए तो उन्हें क्षमा करें, गले लगाएं, पुनर्स्थापित करें, अगली बार क्या करना है, इसके बारे में बात करें

निष्कर्ष

बच्चे परमेश्वर के होते हैं, हमें केवल कर्ज के रूप में लिए दिए गए हैं ! - माता-पिता परमेश्वर के लिए सिर्फ बच्चों के पालने वाले होते हैं

यहोशू 14:15 पढ़ें "...परन्तु मैं और मेरा घराना हम यहोवा की उपासना करेंगे!"

धर्मी संतान होने की शुरुआत धर्मी माता-पिता होने से होती है

विश्वास

बच्चे जैसा विश्वास

मरकुस 10:15; मत्ती 6:25-34; 18:3; 19:14

मुख्य विचार: परमेश्वर में सच्चा विश्वास नम्रता से उस पर भरोसा करना और उसका पालन करना है जैसे एक बच्चा अपने माता-पिता पर करता है।

परिचय

आज विकसत होने पर, वयस्क होने पर ध्यान दें.

चर्च, दुनिया वयस्कों पर केंद्रित है - हम शासन करते हैं!

बच्चों को देखा तो जाता है लेकिन सुना नहीं जाता ,

द्वितीय श्रेणी के रूप में देखा जाता है

चर्च भी - बच्चों को अपनी जगह पर रखें ताकि वयस्क अपना काम कर सकें

स्कूल, चर्च, घर = बच्चे को जल्द से जल्द वयस्क बनाने की कोशिश करें

एक क्षेत्र के वयस्कों को बच्चों की तरह माना जाता है !!!

पढ़ें मत्ती 19:13-15 और मरकुस 10:13-16

I. बच्चे की तरह विश्वास का मतलब यह नहीं है:

बच्चे सही नहीं हैं - मैं एक बच्चे के रूप में नहीं था और ना ही मेरे बच्चे थे

बच्चे अपूर्ण हैं- वे हो सकते हैं

गैर जिम्मेदार

अपरिपक्व

आत्म केन्द्रित

उतावले

जब यीशु कहता हैं कि हमें छोटे बच्चों की तरह बनना है तो वह इनका जिक्र नहीं कर रहा हैं।

संक्रमण

लेकिन उनके पास एक विशेषता है जिसे परमेश्वर चाहता हैं कि हम अपने जीवन में कॉपी करें - परमेश्वर में विश्वास

II. बच्चे के समान विश्वास का अर्थ है:

क- बच्चे जैसा विश्वास मतलब पूरण भरोसा

बच्चे अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने माता-पिता पर भरोसा करते हैं। बच्चे अपना भोजन, वस्त्र और शरण स्वयं प्रदान नहीं कर सकते। इसलिए वे इन चीजों के लिए अपने माता-पिता पर निर्भर रहते हैं।

बच्चे प्यार से भरोसा दिखाते हैं

बच्चे हर समय प्यार करते हैं।

शायद ही आपको कोई ऐसा बच्चा मिलेगा जो प्यार नहीं करता हो।

जिन्हें उनके आसपास के लोगों से यह नहीं सिखाया गया है ।

बच्चे हर चीज से प्यार करते हैं, वे जानवरों से प्यार करते हैं, अन्य बच्चों से, चाहे उनका रंग कुछ भी हो।

उनमें प्रेम और सहानुभूति की क्षमता होती है।

(उदाहरण: अपने बच्चों या अन्य लोगों पर भरोसा करने वाले बच्चे का उदाहरण)

बच्चे का अस्पताल या डे केयर केंद्र में होते हुए ।

जब कोई रोना शुरू करता है तो वे सभी दुखी होने वाले के प्रति सहानुभूति से रोने लगते हैं।

जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं हम कठोर होते जाते हैं।

हमें बच्चों जैसा भरोसा चाहिए

पढ़ें मत्ती 6:25-34

संक्रमण

बच्चों जैसा विश्वास भरोसा है। विनम्र भी है

ख- बच्चों -जैसा विश्वास विनम्र होता है

चेले इस बात पर बहस करते हैं कि राज्य में सबसे बड़ा कौन है, जिसके पास सबसे अधिक शक्ति और अधिकार है, जो यीशु के सबसे करीब है ?

यीशु ने उदाहरण के तौर पर बच्चे का इस्तेमाल किया, जानिए उनकी जगह

पढ़ें मत्ती 18:1-4

बाइबल आधारित परिवर्तन जो यीशु अपने शिष्यों में चाहता है वह है नम्रता ।

यदि वे वास्तव में उसकी दृष्टि में, उसके राज्य में महान बनना चाहते थे, तो उन्हें स्वयं को विनम्र करना होगा। यह इस बारे में नहीं था कि कौन सबसे चतुर था, या कौन सबसे मजबूत था, या कौन सबसे अच्छा वक्ता था आदि। यीशु के मन में, यह इस बारे में था कि कौन सेवा करने के लिए सबसे अधिक इच्छुक था।

शिष्य स्वयं को देखते हैं और वे बहुत अच्छा महसूस करना चाहते हैं।

जब एक बच्चा खुद को देखता है, तो वह जानता है कि उसे मदद की ज़रूरत है। एक बच्चे के लिए निर्भरता स्वाभाविक है, वह कभी नहीं सोचता कि वह अपने आप जीवन का सामना कर सकता है। वह उन लोगों पर निर्भर रहने के लिए पूरी तरह से संतुष्ट है जो उससे प्यार करते हैं और उसकी देखभाल करते हैं।

नम्रता: यह महसूस करना कि हमें यीशु की आवश्यकता है

आध्यात्मिकता के उच्च स्तर पर आगे नहीं बढ़ सकता

दीन होकर ही आगे बढ़ें, अपनी जरूरत को और भी ज्यादा पहचानें

कभी नहीं होता , यदि सोचते हैं कि हम करते हैं, तो गलत दिशा में बढ़ रहे हैं

बच्चा कभी नहीं सोचता कि वे आ गए हैं

उनकी सीमा जानें, उनके साथ सहज भरे बने

बच्चा: जानता है कि वह सब कुछ नहीं जानता, दूसरों पर भरोसा करने की जरूरत है

समझदार बच्चा: अपनी हद जानता है

जरूरतों के लिए वयस्कों पर भरोसा करता है

किशोर-आवस्था : सोचता है कि वह वयस्कों से ज्यादा जानता है - बहुत खतरनाक

यदि केवल पुरुष और महिलाएं ही परमेश्वर की ओर मुड़ें और उस पर अपनी निर्भरता रखें, तो उन्हें शांति और शक्ति का संसार, आनंद का संसार मिलेगा।

इसलिए छोटे बच्चों की तरह बनने के लिए हमें मानवीय उपलब्धियों से मिलने वाली महानता का पीछा करना बंद करना होगा और हर चीज के लिए परमेश्वर पर अपनी निर्भरता को स्वीकार करना होगा।

संक्रमण

बच्चों जैसा विश्वास भरोसेमंद और विनम्र होता है। यह रोमांचक भी है।

ग- बच्चों -सा विश्वास रोमांचक है

दुनिया के लिए बच्चों का नजरिया आश्चर्यजनक होता है। क्रिसमस, बर्थडे, परेड, चिड़ियाघर , छुटियाँ बेहद खास, वह आंखों के जरिए इनका लुत्फ उतातें है।

बच्चों को दुनिया की सुंदरताओं की खोज करते हुए देखना अद्‌भुत होता है है - नए जानवर, सूर्यास्त और रात का आसमान। हम इन चमत्कारों से चूक जाते हैं।

बच्चे जीवन में सबसे सरल चीजों का आनंद लेते हैं।

बच्चे उत्सुक होते हैं और वे जोखिम लेना पसंद करते हैं। उनमें बहुत हिम्मत है। वे एक ऐसी दुनिया में प्रवेश करते हैं जो बहुत बड़ी और खतरनाक है और अपनी देखभाल के लिए अपने माता-पिता पर भरोसा करते हैं।

क्या हम अपने स्वर्गीय पिता पर उतना ही भरोसा करते हैं जितना बच्चे अपने संसारिक पिता पर भरोसा करते हैं, या उस बात के लिए जितना बच्चे अपने स्वर्गीय पिता पर भरोसा करते हैं।

बच्चा: खिलाए जाने की तीव्र इच्छा, बढ़ने की !!!

बढ़ना चाहते हैं

संक्रमण

बच्चों- सा विश्वास भरोसेमंद, विनम्र और रोमांचक होता है

लेकिन कुछ चीजें हैं जो इस तरह के विश्वास के साथ आती हैं

III. बच्चों के समान विश्वास का अर्थ है:

क. बच्चों -सा विश्वास जोखिम को दर्शाता है

असफलता के कारण बच्चों जैसा विश्वास जोखिम भरा है

परमेश्वर के ना आने से आहत होने का डर

(उदाहरण: कई बार एक बच्चा उन लोगों से निराश हुआ जिन पर उसने भरोसा किया था)

ख- बच्चों के समान विश्वास का अर्थ है क्षमा शक्ति

क्षमा करने और भूलने की शक्ति

व्यस्क लोग इर्षा रखते हैं - बच्चे ऐसा नहीं करते। वे एक मिनट में लड़ सकते हैं और अगले में सबसे अच्छे दोस्त बन जाते है

ग- बच्चों-सा विश्वास आज्ञाकारिता को दर्शाता है

एक बच्चे से आज्ञाकारी होने की उम्मीद की जाती है। माता-पिता उम्मीद करते हैं कि उनका बच्चा बिना उपद्रव या शिकायत के तुरंत आज्ञा का पालन करेगा। वयस्कों को छोटे बच्चों से परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के बारे में बहुत कुछ सीखना है!

विश्वास = विश्वास की क्रिया, परिस्थितियों के बावजूद पालन करना

बच्चा माता-पिता की नकल करता है

माता-पिता को खुश करना चाहता है

माता-पिता की तरह बनना चाहता है - नायक, उदाहरण, हमेशा सही

(उदाहरण: अपने बच्चों या अन्य लोगों की आज्ञा मानने वाले बच्चे का उदाहरण)

निष्कर्ष

हमने अपना बचपन का विश्वास और आशावाद कैसे खो दिया? क्या यह खुद ब खुद समय बीतने से आता है, या किसी अन्य तरीके से , उम्र से? कभी-कभी हमारे विश्वास के साथ भी ऐसा ही होता है।

प्रार्थना

क्रिसमस उपदेश

<u>क्रिसमस हमें परमेश्वर के बारे क्या सिखाता है</u>

लूका 2:1-20

<u>मुख्य विचार:</u> क्रिसमस की कहानी से हम सीखते हैं कि परमेश्वर नम्रता से हमें खोजता है, लेकिन वह चीजों को उस तरह से नहीं करता जैसा हम करेंगे। हम यह भी देखते हैं कि यीशु ने हमें पहले स्थान पर रखने और हमारे उद्धार को प्रदान करने के लिए स्वयं को बलिदान कर दिया। इसलिए हमें उस पर पूरी तरह और हमेशा के लिए भरोसा करना चाहिए और उसकी सेवा करनी चाहिए।

<u>परिचय</u>

क्रिसमस के पाठों पर सैकड़ों उपदेश, कहानी से हम क्या सीखते हैं, आदि

मैं एक अलग दृष्टिकोण लेना चाहता हूं - वह नहीं जो परमेश्वर हमें क्रिसमस के बारे में सिखाता हैं

लेकिन जो क्रिसमस हमें परमेश्वर के बारे में सिखाता है!

<u>I. क्रिसमस हमें परमेश्वर के बारे में क्या सिखाता है</u>

पुराना नियम परमेश्वर की महिमा, शक्ति, महिमा को दर्शाता है

तो मनुष्य ने सोचा कि हमने उसका पता लगा लिया है!

लेकिन वह बिल्कुल अप्रत्याशित तरीके से आया!

यह हमें परमेश्वर के बारे में क्या दिखाता है ???

(कुछ लोग जोर से उत्तर दें, या सभी चुपचाप उत्तर के बारे में सोचें)

<u>क- वह वैसा नहीं करता जैसा हम करेंगे</u>

लूका 2:1-20 पढ़ें

धूमधाम और घोषणाओं के साथ दुनिया में प्रवेश नहीं किया

-केवल कुछ अस्वीकृत, रात में ग्रामीण क्षेत्र में बैरल के नीचे चरवाहों को

उन चरवाहों को जिनको समाज में तुश मान रखा था, सभी चरवाहों को भी घोषित नहीं किया, बस कुछ ही को

-उस समय में रहने वाले लाखों लोगों में से केवल कुछ अन्यजातियों को ही।

रोम में पैदा नहीं हुआ, लेकिन देश के छोटे से नगर बेथलहम में -अच्छे महल में नहीं बल्कि जानवरों के साथ चरनी / गुफा में

हम उम्मीद करेंगे कि परमेश्वर एक बड़ा प्रवेश द्वार बनाए, अपनी शक्ति और पराक्रम का प्रदर्शन करे

यदि आप परमेश्वर होते और प्रवेश कर रहे होते तो क्या आप कुछ चरवाहों को, 'आमंत्रित ' लोगों की सूची में, सबसे ऊपर रखते?

किसी अज्ञात क्षेत्र , अस्वीकृत राष्ट्र में एक चरनी में आते/

माता-पिता के रूप में 2 गरीब यहूदी नौजवनों के जोड़े को चुनते ?

एक असहाय बच्चे के रूप में आते , पूरी तरह से दूसरों पर निर्भर होते ?

परमेश्वर हमारी तरह कार्य नहीं करता, जैसे हम करते यदि हम परमेश्वर होते !

उदाहरण : महारानी एलिजाबेथ ॥ हाल ही में अमेरिका की यात्रा पर आई हैं। उसने 4,000 पौंड का सामान - हर अवसर के लिए 2 पोशाकें, 40 पिंट प्लाज्मा, सफेद जानवर के बच्चे की खल से बना शौचालय सीट कवर, एक हेयरड्रेसर, 2 वैलेट, कई देखभाल करनेवाले - यहां की संक्षिप्त यात्रा की लागत 20 मिलियन डालर से अधिक थी मतलब- लगभग भारतीय 15 करोड़ रुपयों से अधिक

खुदा खलिहान में पैदा हुआ, जानवरों की चरनियो से घेरा हुआ फटे कपड़ों में रखा गया

<u>ख. हम उसे नहीं ढूंढ़ते, वह हमें ढूंढ़ता है</u>

हम परमेश्वर को नहीं ढूंढ़ते और नहीं पातें हैं, वह हमें ढूंढ़ता और पाता है

अगर हम उसकी तलाश में गए होते , तो हम कहाँ जाएंगे? वेटिकन? क्रिस्टल कैथेड्रल?

निश्चित तौर से बेथलहम की चरनी में तो नहीं!

<u>ग- परमेश्वर विनम्र है</u>

विनम्रता

कुछ ऐसा जो हमने कभी परमेश्वर के साथ नहीं जोड़ा होता

कुछ ऐसा जो हमने कभी परमेश्वर में नहीं खोजा होता

उसे पूरी तरह से खोया होता ! -जैसे धार्मिक शासक और तब जीवित लोगों ने !

हमने बेथलहम के खलिहान में कभी नहीं देखा होता !

इसलिए परमेश्वर हमारे पास आया क्योंकि हम उसके पास ना गए होते ना ही जा सके होते

परमेश्वर विनम्र है

सिर्फ परिस्थितियों में नहीं

उद्देश्य में भी - सेवा करने आया था, सेवा कराने नहीं आया था, देने आया था, लेने नहीं

परमेश्वर हमारे लिए प्यार के कारण आपने प्रियतम वजूद को छोड़ने के लिए तैयार हुआ !

आप अपने प्रियजन के लिए कितना त्याग करेंगे? दुश्मन के बारे में क्या!?!?!?

परमेश्वर उस जगह है जहां हम उसे नहीं ढूंढते हैं

वह दूंड़ता है और हमारे पास आता है, नाकि हम उसके पास

संक्रमण

लोगों से पूछें कि क्रिसमस यीशु के बारे क्या सिखाता/प्रकट करता है

(आप कुछ उत्तर ज़ोर से दे सकते हैं, या चुपचाप उत्तर के बारे में सोच सकते हैं)

II. क्रिसमस हमें यीशु के बारे में क्या सिखाता है

क- वह हमें अपने आप से पहले रखता है

यह सब हमारे लिए किया !!!

आत्मकेंद्रित नहीं

हमें लगता है कि वह हमारी परवाह नहीं करता, हमारे बारे फिकर नहीं करता है, हमें कष्ट भुगतने देता है

चरनी और क्रूस इसके विपरीत साबित होती हैं

ख- इसकी सारी कीमत वह सहन करता है

क्रिसमस कीमती है

क्या यीशु ने कभी संकोच किया जब, स्वर्ग और महिमा को छोड़ कर उसका एक युवा लड़की के गर्भ में जाने का समय आया ?

विशेष रूप से यह जानते हुए कि उसके लौटने से पहले क्या होना होगा?

त्रिएक का दूसरा व्यक्ति कभी भी वैसा ना रहा जैसा था - हमेशा के लिए अपने स्वभाव में मानवता को जोड़ा लिया

फिलिप्पियों 2:6-7 जिस ने परमेश्वर के स्वभाव में होकर परमेश्वर के साथ समानता को बनाये रखने को त्याग दिया , वरन अपने आप को शून्य बनाया, और दास का स्वरूप लेकर मनुष्य की समानता में बना।

स्वेच्छा से खुद को शून्य बनाया

पुत्र परमेश्वर के ऐसा करने के बारे में स्वर्गदूतों ने कैसा महसूस किया?

क्या आपको लगता है कि उन्होंने हमें इसके लायक माना?

पृथ्वी ब्रह्मांड में एक धब्बा

उस पर रहने वाले लोग विद्रोही, पापी, गंदे, अशुद्ध, बेकार हैं (यदि परमेश्भवर के प्रेम में ना हों)

क्रिसमस के लिए यीशु को क्या कीमत चुकानी पड़ी ?

यीशु के लिए परमेश्वर से शुन्य बनने के लिए; इस से बड़ी कोई अधिक कीमत नहीं है।

मान लीजिए कि आप देश के राष्ट्रपति से एक सड़क सफाईकर्मी बन गए है , बस किसी ऐसे व्यक्ति की मदद करने के लिए जो आपसे नफरत करता था। क्या आप से यह होगा? यीशु परमेश्वर से मनुष्य बन गया , एक बहुत बड़ी हानि।

निष्कर्ष

अगर क्रिसमस की कीमत यीशु के लिए इतनी अधिक थी, तो उसे छोड़ देना शर्म की बात होगी ।

यदि क्रिसमस की कीमत यीशु के लिए इतनी अधिक थी ,तो यह शर्म की बात होगी,कि आप उसकी आराधना और सेवा ना करें

आइए प्रार्थना करते हैं!

कलीसिया का उद्देश्य और कार्य

प्रेरितों के काम 2:41-42, इब्रानियों 10:25

<u>मुख्य विचार:</u> कलीसिया क्या है और क्या करती है, और इसे आज लागू करने के बारे में समझने के लिए कि बाइबल क्या कहती है

परिचय

उदाहरण: उस कलीसिया के बारे में बताएं जिसके साथ आप जुड़े हुए थे , उसने जो भी अच्छा कीया था, उसने आपकी मदद कैसे की, आदि।

I. कलीसिया का स्भाव

कलीसिया = एक्लेसिया, 'इकठ ,' 'समुदाय'

यूनानी में शाब्दिक तौर पर "अलग बुलाया हुआ " सभा, लोगों का विशेष समूह

संक्रमण शब्द 'कलीसिया ' बाइबल में दो तरह से प्रयोग किया जाता है:

क- विश्व्व्पक कलीसिया

उद्धार द्वारा जुड़ें - सभी विश्वासी, मसीह के क्रूस दिए जाने से लेकर उसके वापस आने तक (प्रेरितों के काम 2:47)

मसीह की देह - मसीह कलीसिया का मुखिया है, अपनी देह का (इफिसियों 5:23; कुलुस्सियों 1:18)

<u>संक्रमण</u>

जिस तरह से बाइबल में 'कलीसिया ' शब्द का प्रयोग किया गया है, वह विश्वासियों के स्थानीय समूह के लिए है

ख- स्थानीय कलीसिया

सदस्यता से जुड़े विश्वासियों का स्थानीय समुदाय (बपतिस्मा, आदि)

चर्च एक इमारत नहीं है जिसमें हम जाते हैं लेकिन हम विश्वासियों का समूह है यह उस बारे में हैं (मत्ती 18:20)

इसको चरवाहे के अधीन एक झुंड कहा जाता है - यीशु असली चरवाहा है

पासबान/पादरी यीशु का स्थानीय प्रतिनिधि, यानि सहायक -चरवाहा है

II. कलीसिया की उत्पत्ति

कलीसिया पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के उतरने के साथ शुरू हुई (प्रेरितों के काम 2)

पढ़ें यूहन्ना 14:16, 26 - पवित्र आत्मा पिन्तेकुस्त के दिन आया जब कलीसिया शुरू हुई

पवित्र आत्मा अब आता है और उद्धार के क्षण प्रत्येक विश्वासी में वास करता है

कलीसिया में पवित्र आत्मा

आराधना में विश्वासियों की अगुवाई करता है इफिसियों 2:18

प्रार्थना में विश्वासियों को प्रेरित करता है रोमियों 8:26-27

गतविधियों में विश्वासियों का मार्गदर्शन करता है प्रेरितों के काम 13:2; 16:6-7

कलीसिया के अगुवों को नियुक्त करता है प्रेरितों के काम 20:28

कलीसिया के लिए आत्मिक वरदान देता है इफिसियों 4:11

विश्वासियों का सत्य में मार्गदर्शन करता है यूहन्ना 16:13

प्रचार करने को सामर्थी बनाता है 1 थिस्सलुनीकियों 1:5

III. कलीसिया का उद्देश्य

कलीसिया का उद्देश्य क्या है? कलीसिया को क्या करना है?

हर किसी के अलग-अलग विचार, यह जानना चाहिए कि परमेश्वर अपनी कलीसिया से क्या उम्मीद करता है

जब यह नहीं जानते कि लक्ष्य क्या है, तो निशाना नहीं मार सकते

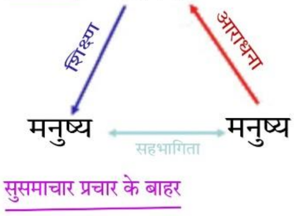

<u>क- आपने आप को (अन्तराल)</u>

पढ़ें प्रेरितों 2:41-42

<u>1. शिक्षण</u> (परमेश्वर से मनुष्य को) - यीशु द्वारा आज्ञा दी गई

पढ़ें मत्ती 28:19-20 (इन आयतों के बारे में बात करो, समझाओ)

हवा की परमेश्वर के वचन की अज्ञानता में परीक्षा हुई

यीशु ने परमेश्वर के वचन के द्वारा शैतान के प्रलोभन का विरोध किया

पढ़ें इफिसियों 4:11-12 (इन आयतों के बारे में बात करो, समझाओ)

सभी को प्रशिक्षण की आवश्यकता है: सैनिक, किसान, डॉक्टर, आदि

मूसा 40 वर्ष रेगस्तान में सीखने के लिए , पौलूस 4 साल रेगिस्तान में सीखने के लिए

यीशु ने चेलों को बाहर भेजने से पहले सिखाया

<u>2. आराधना</u> (मनुष्य से परमेश्वर को) - परमेश्वर की स्तुति का भाव, धन्यवादी हृदय

शुक्रगुजारी : उसने जो किया, हम जानते है और खुश हैं

आराधना : वह कौन है और क्या है, अगर हम समझते हैं या पसंद करते हैं कि वह क्या करता है या क्या नहीं हीं।

<u>3. सहभागयता</u> (मनुष्य से मनुष्य तक)

पढ़ें इब्रानियों 10:25 (इन आयतों के बारे में बात करो, समझाओ)

यीशु को 12 शिष्यों के साथ संगति की आवश्यकता थी

उदाहरण: पेड़ जो एक साथ उगते हैं वे तूफानों का सामना बेहतर करते हैं क्योंकि उनकी जड़ें और शाखाएं आपस में जुड़ती हैं और एक दूसरे को सहारा देती हैं

ख- दूसरों के लिए (बाहरी रूप से)

सुसमाचार - -दूसरों को यीशु में उद्धार के लिए लाने के लिए गवाही देना

पढ़ें मत्ती 28:19-20; प्रेरितों के काम 1:8 (व्याख्या करें, यीशु के बारे में दूसरों को बताने के महत्व के बारे में बात करें)

IV. कलीसिया के अधिकारी

बुजुर्ग = आध्यात्मिक नेतृत्व (पुरुष)

पादरी, सेवक, बुजुर्ग , बिशप = सभी समान है

डीकन = शारीरिक नेतृत्व (पुरुष)

प्रेरितों को प्रार्थना, शिक्षा, परामर्श, अध्ययन, सेवकाई , आदि के लिए मुक्त करने के लिए प्रेरितों के काम 7।

डीकनसस - महिलाओं के बीच काम करने में मदद करने के लिए महिला डीकन

नेताओं को अन्य नेताओं द्वारा नियुक्त किया जाना चाहिए , ना कि अधिकांश लोगों द्वारा किये गए मतदान द्वारा

V. कलीसिया का संगठन

एक संगठन नहीं बल्कि एक संगठित - लेकिन संरचना और योजना की जरूरत है

शासन समिति के रूप

प्रोहित रूपी शासनीय स्थल - 1 व्यक्ति (बिशप, आदि) कलीसिया पर पूर्ण शक्ति

एपिस्कोपल, रोमन कैथोलिक, मेथोडिस्ट, पूर्वी रूढ़िवादी

सरकार का प्रतिनिधि - विधिवत नियुक्त प्रतिनिधि कलीसिया प्राधिकरण हैं

प्रेस्बिटेरियन, रिफॉर्मेड, यूनाइटेड चर्च ऑफ क्राइस्ट

सरकार का सामूहिक रूप - प्रत्येक व्यक्ति समान अधिकार, सभी अंतिम निर्णय लेते हैं

बैपटिस्ट, चेले, मण्डलीवादी

पढ़ें 1 पतरस 2:5, 9 हर विश्वासी एक याजक है , परमेश्वर की दृष्टि में समान है

<u>पादरी की भूमिका</u>

<u>परिवार के लिए पिता की तरह</u> चर्च लघु रूप में एक परिवार है, पादरी एक पिता के समान है (1 तीमुथियुस 3:4-5)

अंतिम अधिकार, जिम्मेदारी, परमेश्वर के प्रति जवाबदेही

सब कुछ नहीं करता है लेकिन देखरेख करता है, सुनिश्चित करता है कि यह हो गया है

<u>भेड़ के चरवाहे की तरह</u> मुख्य चरवाहे की खातिर जो उनके लिए सबसे अच्छा है उसे करने के लिए जिम्मेदार है

पढ़ें 1 पतरस 5:1-3 सभी क्षेत्रों में नेतृत्व, भरण-पोषण, रखवाली, स्वास्थ्य आदि के लिए जिम्मेदार।

गाली-गलौज नहीं करता , उनका इस्तेमाल नहीं करता , उनसे अपनी सेवा नहीं कराता

<u>विश्वासियों के लिए यीशु की तरह</u> दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा यीशु आपके साथ करता है: प्रेम, धैर्य, दृढ़ता, आदि।

यीशु हमारे लिए उदाहरण हैं, हम दूसरों के लिए उदाहरण बन जाते हैं

<u>VI. कलीसिया के अध्यादेश</u>

<u>क-</u> <u>बपतिस्मा</u> जीवन में केवल एक बार लिया जाता है

<u>महत्व</u>

यीशु के साथ आंतरिक सफाई, मृत्यु और पुनरुत्थान की बाहरी गवाही

इसका उद्धार , दूसरा आशिष , अधिक आध्यात्मिक बनना आदि से कोई लेना-देना नहीं है।

<u>बपतिस्मा विश्वासियों के लिए है</u>

यीशु को जीवन देने की सार्वजनिक गवाही

यूहन्ना और यीशु के शिष्यों ने विश्वासियों को बपतिस्मा दिया (यूहन्ना 1:33; 3:28; मत्ती 3:13-17)

यीशु हमें उन लोगों को बपतिस्मा देने के लिए कहता हैं जिन्होंने विश्वास किया है (मत्ती 28:16-20)

प्रारंभिक कलीसिया में जब एक यहूदी व्यक्ति मसीही बनता तो उसके परिवार वाले उसके लिए अंतिम संस्कार करते और फिर कभी उस से बात नहीं करते - यह यीशु के लिए सथिर रहने का एक सार्वजनिक तरीका था।

<u>डुबकी के द्वारा बपतिस्मा</u>

यूनानी शब्द का अर्थ है " डूबना"

नए नियम का बपतिस्मा डुबकी था (मरकुस 1:10; यूहन्ना 3:23; प्रेरितों के काम 8:38)

बपतिस्मा उसके साथ एक नया जीवन जीने के लिए मसीह के साथ मरने और उठने का प्रतीक है। (रोमियों 6:1-4 और कुलुस्सियों 2:10-12) पानी के नीचे मरे हुए के समान होना अच्छा है, लेकिन फिर ऊपर आना मसीह में नए जीवन को चित्रित करता है

<u>ख. प्रभु भोज</u> बार-बार किया जाता है, यदि आप चाहें तो हर बार मिलते हैं

<u>महत्व</u>

यीशु के शरीर को तोड़ा गया और उद्धार के लिए खून बहाया गया।

जैसे रोटी और पेय प्राप्त होता है वैसे ही मुक्ति बिन कीमत प्राप्त होती है।

इसके लिए दूसरे ने भुगतान किया था लेकिन हमें इसे प्राप्त करना होगा।

रोटी और रस में कुछ नहीं बदलता, कोई विशेष कृपा प्राप्त नहीं होती।

कोई भी कर सकता है: परिवार में, दोस्तों के साथ, कलीसिया आदि में।

VII. कलीसिया का भविष्य

यीशु लौटता है, कलीसिया बादलों पर उठा ली जाती है , पुराने नियम की व्यवस्था क्लेश में समाप्त होती है

यीशु लौटता है, कलीसिया मेघरोहण (रैपचर) होती   है, पुराने नियम की व्यवस्था क्लेश में समाप्त होती है

निष्कर्ष

उदाहरण: एक कलीसिया के बारे में एक कहानी बताएं जिसका उपयोग, परमेश्वर लोगों को उद्धार पाने और यीशु में विकसत होने में मदद करने के लिए,कर रहा था

अनुग्रह पर उपदेश

<u>परमेश्वर का अनुग्रह</u>

लूका 7:11-17; मरकुस 12:41-44

<u>मुख्य विचार:</u> परमेश्वर के अनुग्रह की महानता की पुष्टि करने के लिए और हमें उसके अनुग्रह के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देने और आपने जीवन में इसकी सराहना करने के लिए प्रेरित करने के लिए।

<u>परिचय</u>

उदाहरण: कभी किसी के कार्यालय में जाएँ , महत्वपूर्ण व्यक्ति, जिनसे उन्होंने हाथ मिलाया होगा उन सभी लोगों के चित्र दीवार पर मिलेंगे ? मान लीजिए यीशु के कार्यालय में आमंत्रित किए गए हो , उसने किसका चित्र लगाया होगा ? मुझे यकीन है कि उनमें से दो गुमनाम विधवाएं होंगी जिनसे वह मिला था

<u>विधवा</u> अकेली, आर्थिक रूप से कठिन समय, बुड़ीया , इसमें फिट नहीं बैठती

कई महिलाएं विधवा होने के बारे में सोचकर डरती हैं - अधिकांश अंत में विधवा हो जाती हैं - कठिन जीवन!

यीशु के दिनो में : और भी बुरा था , कोई सरकारी मदद नहीं मिलती थी

तब महिलाओं के पास पुरुषों पर निर्भर रहने के अलावा बहुत कम विकल्प होते थे

बहुतों के लिए एक ही विकल्प: भीख माँगना या वेश्यावृत्ति

एक दिन यीशु एक स्त्री से मिला जो कुछ समय पहले विधवा हुई थी

<u>I. परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करना</u> - मृतक पुत्र के साथ विधवा

पढ़ें लूका 7:11 यीशु और चेले नैन की ओर जा रहे हैं

जनाजे के लिए लोगों का हजूम : उसके सामने शोक मनाने वालों, आदि

पहले ही मर चुके हैं: पिता, अन्य बच्चे, पति, परिवार के सभी पुरुष रिश्तेदार

अब खोया: बेटा, साथी, सहारा

भविष्य: धीरे-धीरे भूखा मरना जब तक कि दूसरों को उस पर दया ना आए, वैसे भी जीने का कोई वास्तविक कारण नहीं है

उसके लिए खेद है? यीशु ने भी किया:

पढ़ें लूका 7:13 उसे कोई असंवेदनशील बात कहना मजाक सा होगा ,

- जब तक कि ऐसा कहने का कोई अच्छा कारण ना हो!

पढ़ें लूका 7:14a विधिवाध्क रूप से अशुद्ध -- मंदिर, आराधनालय में नहीं जा सकती

इसे क्यों छूएं? चमत्कार करने के लिए छूना नहीं पड़ता

करुणा दिखाता है, उसके नुकसान की पहचान करता है

पढ़ें लूका 7:14ख लोगों ने यीशु को पागल समझा!

1. जनाजे को आगे बढने से रोकता है 2. कफन को छूता है

3. माँ को रोने से मना करता है 4.मरे हुए लड़के को उठने के लिए कहता है!

पढ़ें लूका 7:15 लोग और जयादा चकित हुए जब लड़का सचमुच उठ बैठा!

आपने क्या सोचा होता यदि आप वहां होते तो ?

यीशु ने ऐसा क्यों किया?

-महिला के महान विश्वास का जवाब? उस पर कोई विश्वास नहीं, वह उसे नहीं जानती थी

-आसपास सभी को प्रभावित करने को ? ऐसा नहीं है कि वहां बहुत से लोग हैं, अन्य बेहतर समय

-एकमात्र कारण -उसका दिल उसकी जिन्दगी की घटी में उसके पास गया

अनुग्रह उपहार उसने इसके लायक होने के लिए या इसे अर्जित करने के लिए कुछ नहीं किया

उसने उसकी चोट और नुकसान को दूर कर दिया और उसे एक नया जीवन और भविष्य दिया

"अनुग्रह" = "अयोग्य, अनारक्षित उपकार"

उदाहरण: मान लीजिए कि कोई आपके बच्चे की बेरहमी से हत्या कर देता है, तो आप उन्हें मुक्त करा देते हैं, उन्हें अपने घर में रहने के लिए ले आते हैं! = अनुग्रह !!!

पढ़ें लूका 7:16-17 अनुग्रह: उद्धार के लिए परमेश्वर के पास लाया गया

अपराध बोध, न्याय, भय नहीं, बल्कि प्रेम, अनुग्रह, दया

पढ़िए इफिसियों 2:4-9; रोमियों 3:23-24; तीतुस 3:5

<u>II. परमेश्वर के अनुग्रह के प्रति प्रतिक्रिया -</u> 2 छोटे सिकों वाली महिला

महिलाओं का आघन 13 "तुरहियां बजाना " भेंट चढ़ाते समय

कहानी की शुरुआत यीशु द्वारा, लोगों को पैसे भेंट करते, देखने से होती है!

मरकुस 12:41 परमेश्वर हमारी आराधना को देखता है: गाने को , प्रार्थना करने हो , दान देने को !

मत्ती 6:21 जहां तेरा धन है, वहां तेरा मन होगा।

सबसे अधिक देने वाले: ढढोरॉ पीटते है , धीरे-धीरे सिक्कों को डालते है (आवाज़ करने के लिए !)

मरकुस 12:42 सबसे छोटे उपहार की अनुमति - गिनती के लिए बहुत छोटा

यीशु उसके बारे में उत्साहित हो गया !!!

मरकुस 12: 43-44 कोई कम नहीं दे सकता (अनुमति नहीं), दे नहीं सकता (इसका सवाल ही पैदा नही होता)

मात्रा यीशु के लिए क्या मायने नहीं रखती

अनुपात मायने रखता है - यीशु यह नहीं देखता कि हम क्या देते हैं लेकिन हम क्या रखते हैं!

यीशु देखता हैं कि क्या बचा है - दिल का इरादा यीशु के लिए मायने रखता है

यह इन पर लागू होता है: समय, प्रतिभा, खजाना

मरकुस 12:38 स्वयं के लिए भेंट लेते - धोखा देते , विधवाओं को धोखा देते , फायदा उठाते

<u>उसने क्यों दिया?</u> हैकल के बीच कोई फर्क नहीं पड़ता (एक दीये के लिए 1 लाट भी नहीं खरीदा जा सकता था इससे) -

क्या परमेश्वर को वास्तव में 1/2 प्रतिशत की आवश्यकता थी? उसे(विधवा) को आपने जीवन के लिए इसकी बुरी तरह से जरूरत थी !

दिखावा नहीं करना - चारों ओर महान दानदाताओं से भयभीत, हीन महसूस करती है, यह किसी क़द्र योग नहीं है

जैसे परमेश्वर को दिया हो , मंदिर (चर्च) आदि को नहीं, ताकि परमेश्वर को प्यार और प्रशंसा दिखाए

<u>उसे किस चीज के लिए परमेश्वर का शुक्रिया अदा करना था ?</u>

विधवा : उन दिनों बहुत सख्ती होती थी

गरीब: दरिद्रता, गरीबी का स्तर या बदतर हालत के लिए

भविष्य: भूखे मरने के लिए घर जाकर बैठने के लिए !

कुछ ऐसा होना चाहिए जिसे वह परमेश्वर को दे सके!

नहीं: भय, अपराधबोध, परमेश्वर को रिश्वत देना आदि।

लेकिन: उसके जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह के प्रति प्रेम प्रतिक्रिया करता है!

परमेश्वर से प्रेम का इजहार करने आई थी

परमेश्वर ने जो कुछ उसे दिया उसके प्रतिउतर में उसने दिया

<u>उसके जीवन में परमेश्वर का अनुग्रह कहाँ दिखाई दिया ?</u>

बाहरी परिस्थितियों में नहीं

लेकिन आंतरिक संतोष, शांति, आनंद में

आप अपने जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह को कहाँ देखते हैं?

बहरी रूप में : विधवा की तरह जिसका पुत्र जीवन में वापस आता है

आन्तरिक : यरूशलेम में इस गरीब विधवा की तरह

पढ़ें 2 कुरिन्थियों 12:9

<u>**निष्कर्ष**</u>

परमेश्वर के अनुग्रह का कोई अंत नहीं

उदाहरण: समुद्र में एक छोटी मछली के बारे में सोचें जो पानी पीने से डरती है क्योंकि वह इसका उपयोग नहीं करना चाहती है!

उदाहरण: अपने जीवन में या अपने परिवार में किसी के जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह का उदाहरण दें

यीशु ज़रूरतमंद लोगों को बहाल करता है

मत्ती 15:21-28; लूका 5:12-14; मरकुस 5:25-35

<u>मुख्य विचार:</u> यीशु को जानना हर किसी को सम्मान देता है, और उस से यह स्वीकार करना हम सब लिए भी सम्मान की बात है

परिचय

दुनिया में में बहुत से लोग हैं जो शर्म में,अपराधबोध में, भय में, गिरे हालात में, टूटे हालातों में, ठुकराए हुई हालत में, त्यागे हुए हैं

उदाहरण: किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में कहानी बताएं जिसे आपने देखा या उसके बारे में जानते हैं कि वह कौन है

हम उनकी मदद करने के लिए बहुत कुछ नहीं कर सकते, लेकिन यीशु कर सकता हैं और करता हैं

I. पलीत महिला का चंगाई पाना

पढ़ें मत्ती 15:21-28

<u>मनुषों की शर्म</u>

कनानी (यहूदियों की नज़र में नीच, खारिज की हुई) - यहूदी नहीं

स्त्री - पुरुषों से हीन देखी जाती है

बेटी दानवग्रस्त है - परिवार को सब नीच देखते है

यीशु ने अनदेखा किया, चेलों ने ठुकराया

<u>महिला का विश्वास</u>

यीशु के पास आई , उसे ढूंढा

उसे "परमेश्वर, दाऊद का पुत्र" कहती हैं - दया मांगती है , जानता है कि वह इसके लायक नहीं है

उसे मसीहा के रूप में देखती है: **उद्धार की योजना**

उसने हमारी लज्जा को क्रूस पर ले लिया - हमें आपना सम्मान देता है !!!

चेलों द्वारा ठुकराए जाने पर भी यीशु के पास आने की कोशिश जारी रखी

<u>यीशु द्वारा दिया गया आदर</u>

"महिला" सम्मान की अवधि, सम्मान

'महान विश्वास' - सभी के सामने मौखिक रूप से पुष्टि की गई

विनती सवीकार की गयी , बेटी ठीक हो गई - दुख और शर्म ख़तम हो गए

<u>आज हमारे लिए सबक</u>

अपनी लज्जा को यीशु के पास ले जाओ, कोई फर्क नहीं पड़ता कि दूसरे क्या कहते हैं, यीशु की ओर मुड़ें

विश्वास में उस पर भरोसा करें

दृढ़ रहें, हालांकि ऐसा लगता है कि वह जवाब नहीं दे रहा है

<u>II. कोढ़ियों का शुद्ध होना</u>

लूका 5:12-14 पढ़ें

<u>आदमी की लज्जा</u>

कुष्ठ = अस्वीकृति, अलगाव, भयानक रूप, मृत्यु

कोई कोढ़ी के पास नहीं आता, बहुत संक्रामक

अपने परिवार द्वारा भी अस्वीकृति

<u>आदमी का विश्वास</u>

यीशु के सामने गिर जाता है

दया, उपचार के लिए भीख माँगता है

मानता है की यीशु चमत्कारिक रूप से उसे शुद्ध कर सकता था

<u>यीशु द्वारा दिया गया आदर</u>

यीशु ने उसे छुआ - कोढ़ी को कभी किसी ने छुआ तक नहीं

यीशु ने उससे बात की - सभी ने उसकी लापरवाही की, उसे अस्वीकार कर दिया

यीशु ने उसे शुद्ध कीया - शर्म और दोष दूर हो गया

पुरोहित को दिखाया गया, आधिकारिक तौर पर ठीक हो गया, यहूदी धर्म में वापस, और परिवार में भी

<u>आज हमारे लिए सबक</u>

यीशु आगे बढ़ता हैं, उन्हें छूहता हैं जो स्वयं को विनम्र करते हैं

यीशु आपकी आत्मा को निश्चित रूप से शुद्ध करेगा (शायद शरीर भी)

<u>III. खून बहने वाली महिला ठीक हो जाती है</u>

पढ़ें मरकुस 5:25-35

<u>महिला की लज्जा</u>

स्त्री = हीन रूप में देखी जाती है , सार्वजनिक रूप से पुरुष से बात नहीं करती ना देखती है

रक्तस्राव = अशुद्ध, मन्दिर में नहीं जा सकती , दूसरों को स्पर्श नहीं कर सकती

12 साल = लंबे समय तक कोई मंदिर नहीं, कोई स्पर्श नहीं

दर्द, अस्वीकृति, अकेलेपन में पीड़ित

डॉक्टर मदद नहीं कर सके = कोई उम्मीद नहीं - गरीब, पैसे नहीं, संसाधन ख़त्म हो गए

<u>महिला का विश्वास</u>

यीशु के पास आई , उसे ढूंढा

विश्वास में उसे छुआ - माना कि वह उसे ठीक कर सकता है

<u>आदर # 1 यीशु द्वारा दिया गया</u>

तुरंत खून बहना बंद हो गया, शर्म का कारण चला गया!

<u>आदर # 2 यीशु द्वारा दिया गया</u>

सार्वजनिक रूप से, मनुष्य द्वारा, महत्वपूर्ण रब्बी से बात की गई

उसे शर्म और भय से मुक्त करने के लिए उससे कहा

चाहता था की वह जाने , उसके प्यार को स्वीकार करें

उसके ध्यान से सम्मानित, प्रतिज्ञान

उसके जानने वाले सभी लोगों के सामने, सार्वजनिक रूप से बहाल किया गया

<u>आज हमारे लिए सबक</u>

यीशु को खोजो, जरूरत किस तरह की है यह कोई मायना नहीं रखती

विश्वास करो, उस पर विश्वास करो

उसके प्यार को स्वीकार करें, बहाली

निष्कर्ष

अपनी लज्जा, अपराधबोध अब - इसे यीशु के पास ले जाए , वह सम्मान करेगा, पुनर्स्थापित करेगा

अस्वीकृत?

ऐकलापन ?

बीमारी या दर्द?

महिला?

नीच ?

दान्व्ग्रस्ति

यीशु का अनुसरण करना स्वदेंनशील

लूका 9:57-62

मुख्य विचार:

जानिए: यीशु जीवन के सभी क्षेत्रों में आपने प्रति पूर्ण, पूर्ण प्रतिबद्धता की मांग करता है। उसके लिए आप्रेरित, अनिच्छुक, या अर्थहीन निर्णय लेने से सावधान रहें क्योंकि वे सथिर नहीं रहेंगे।

करें : प्रत्येक व्यक्ति यीशु के लिए स्वयं के निर्णयों का मूल्यांकन करता है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे उसके लिए कुल रूप में , पूर्ण रूप में , और 100% बेशर्त,हैं।

परिचय

उद्धार बिन कीमत और सरल है - यीशु ही परमेश्वर है इसका विश्वास करो और जो उसने क्रूस पर कीया उस में विश्वास करो

फिर सवाल यह है कि हम अपना जीवन कैसे जीते हैं, हम किसके लिए जीते हैं: स्वयं के लिए या यीशु के लिए

यीशु के लिए जीना, शिष्यत्व, कीमत लगती है - इसका मतलब है कि हम यीशु को हर चीज में पहले रखते हैं, आपने आप से भी पहले

संक्रमण

बाइबल 3 आदमियों के बारे में बताती है जिन्हें यह फैसला करना था, और उन्होंने कैसे प्रतिक्रिया दी

I. आप्रिरेरित निर्णयों का खतरा   लूका 9:57-58

क- एक लेखक का चुनाव लूका 9:57

वह यीशु का अनुसरण करने के आनन्द और उत्साह के लिए उसके साथ शामिल होना चाहता था।

ख- उद्धारकर्ता की चुनौती   लूका 9:58

उसने उस आदमी को यीशु के पीछे चलने की कीमत दिखाई।

(इस कीमत की बात करें कि इसका क्या अर्थ है)

(चित्र उदारण : यीशु के पीछे चलने वाले किसी की उदाहरण दें कि उसको इसकी किया कीमत लगी)

संक्रमण

यीशु उस आदमी के बारे में सही था, वह रुका नहीं, लेकिन जब उसने यीशु के पीछे चलने की कीमत जानी । वह कीमत चुकाने को तैयार नहीं था।

एक दूसरा आदमी था जिसको भी ऐसा ही फैसला करना था

II. विवेक-हीन निर्णयों का खतरा लूका 9:59-60

क- पुत्र का अनुरोध लूका 9:59

यीशु का अनुसरण करने का इच्छुक हैं, लेकिन अभी नहीं। उसने इसे एक तरफ कर दिया

ख- उद्धारकर्ता की प्रतिक्रिया लूका 9:60

यीशु का अनुसरण करने के लिए सब कुछ त्यागने को तैयार रहना चाहिए

(यीशु के पीछे चलने के लिए सब कुछ त्याग देना, स्पष्ट करें कि इसका क्या अर्थ है)

(उदाहरण: किसी ऐसे व्यक्ति का उदाहरण दें जो अनुसरण करने के लिए अपना सब कुछ छोड़ देता है)

(अब्राहाम का इसहाक को बलिदान करने के लिए तैयार होना एक और उदाहरण है - उत्पत्ति 22)

संक्रमण

यह आदमी भी चला गया।

#1 स्वैच्छिक लेकिन आप्रेरित था, कीमत की गणना नहीं की

#2 अनिच्छुक शाब्दिक रूप से तैयार, लेकिन पूरी तरह से प्रतिबद्ध नहीं

#3 एक शर्त पर, यीशु का अनुसरण करने के लिए सहमत हैं

III. उलझन भरे निर्णयों का खतरा लूका 9:61-62

क- माता-पिता का खिंचाव लूका 9:61

आदमी वास्तव में उल्जन में था, बहुत निश्चित नहीं था, इसके बारे खुलेआम बात करने के लिए तैयार नहीं था।

ख- प्राथमिकताओं का उद्देश्य लूका 9:62

यीशु को उनके,जो उसका अनुसरण करते हैं, एक-मन , पूर्ण ध्यान की आवश्यकता है ।

(उदाहरण: जब कॉर्टेज़ मेक्सिको को जीतने के लिए रवाना हुआ, तो उसके सभी सैनिक जहाजों से उतर गए और उन के देखते देखते उसने सभी जहाजों को आग लगा दी ताकि वे जान लें कि वापस जाने का कोई रास्ता नहीं है। उन्हें आगे बढ़ना था चाहे कैसे भी हो, यह कठिन होगा। हमें 'अपने सभी जहाजों को जला देना' चाहिए और यीशु के पीछे चलने के बाद कभी वापस नहीं जाना चाहिए।)

निष्कर्ष

वहां उपस्थित हर एक पर लागु करें।

चुनौती: कौन सी समस्या ज्यादा आप की जैसी है?

अब इसके बारे में क्या फैसला करें?

इस सप्ताह आपको परमेश्वर किस तरह की सहायता की आवश्यकता है?

(उदाहरण: किसी ऐसे व्यक्ति का उदाहरण दें जो पूरी तरह से यीशु का अनुसरण करता हो और उसे ऐसा करने में जो आनंद और शांति मिलती है।)

प्रार्थना

धन्यवाद देना , आराधना

तीन काल में धन्यवाद देना

भजन 66

<u>मुख्य विचार:</u> चाहे हालात और चीजें कितनी भी बुरी क्यों ना हों, हमें बीते कल, आज और आने वाले कल के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए और उनकी आराधना करनी चाहिए।

परिचय

हम जानते हैं कि हमें हमेशा परमेश्वर का शुक्रिया अदा करना है, लेकिन कभी-कभी यह कठिन होता है

हमारे समस्याएँ, परीक्षण, कठिनाइयाँ, दुखों में होते हैं

इनसे भी बुरे हालातों में लोगों ने परमेश्वर को धन्यवाद दिया है - भजन 66

भजन 66

परमेश्वर ने लेखक (शायद एक राजा) और पूरे देश को दुश्मन के खतरे से बचाया

शायद यहूदा अश्शूर से बचाया गया - ॥ राजा 19

सार्वजनिक रूप से सभी के लिए हैकल में वेदी पर स्तुति और प्रशंशा की भेंट चढ़ाए गए

भजन 66 पढ़ें

<u>I. प्रभु बीते कल के लिए आप का धन्यवाद</u>

भजन 66:5-6 पढ़िए

इस बारे में कि कैसे परमेश्वर ने उनके **राष्ट्र को गुजरे समय में बचाया था**

(इस बारे में बात करें कि अतीत में परमेश्वर ने आपके देश की देखभाल और पिरत्पाल कैसे की है)

(इस बारे में बात करें कि अतीत में परमेश्वर ने आपके परिवार और आपकी देखभाल और पिरत्पाल कैसे की है)

(उदाहरण: उदाहरण दें कि कैसे परमेश्वर ने अतीत में किसी की देखभाल की है)

विशेष रूप से वो जो उनकी प्रिय पूर्व आध्यात्मिक विरासत थी, जो परमेश्वर ने उनके लिए किया था।

(उदाहरण: अतीत में परमेश्वर ने हम सभी के लिए जो किया है उसका उदाहरण दें)

संक्रमण

अतीत में उसने जो कुछ किया है उसके लिए हम ना केवल परमेश्वर को धन्यवाद और उसकी आराधना कर सकते हैं, लेकिन जो वह आज कर रहा है हम उसके लिए भी धन्यवाद कर सकते हैं

II. प्रभु आज के लिए आप का धन्यवाद

भजन 66:8-9 पढ़ें

अपने शत्रुओं से **हाल ही में छुटकारे के** लिए परमेश्वर का धन्यवाद

बहुत अच्छा कि हम आज के लिए उसके धन्यवादी होने जा रहे है

(उदाहरण: उदाहरण दें कि आपको और आपके लोगों को अभी किस चीज के लिए धन्यवादी होना चाहिए)

जीवन में खराब हालात होने पर भी आप उसकी आराधना और धन्यवाद कैसे कर सकते हैं?

आराधना इस के बारे में है कि परमेश्वर कौन है और क्या है। यह इस बारे में नहीं है कि हम कैसा महसूस करते हैं। ध्यान केन्द्रित परमेश्वर पर करना है।

(उदाहरण: अय्यूब ने परमेश्वर की आराधना की जब वह अपने मृतक बच्चों की कब्र के पास गया। अब्राहाम ने परमेश्वर की इबादत की जब वह इसहाक को मारने के लिए पहाड़ पर ले गया। वे ऐसे समय में कैसे आराधना कर सकते थे?)

संक्रमण

अतीत और वर्तमान में उसने जो कुछ किया है उसके लिए ना केवल हम परमेश्वर को धन्यवाद और उसकी आराधना कर सकते हैं लेकिन जो वह कल करने जा रहा है उसके लिए भी हम धन्यवाद कर सकते हैं

III. प्रभु आने वाले कल के लिए आप का धन्यवाद

भजन 66:4 पढ़ें

भविष्य का दिन जब परमेश्वर राज्य करेगा और प्रकृति भी आराधना में झुकेगी

परमेश्वर अंतिम समय पर: सभी पर विजय प्राप्त करेगा, वह अभी भी नियंत्रण में है,चाहे कुछ भी हो

(उदाहरण: भविष्य में हमें किसके आभारी होना चाहिए इसके उदाहरण)

निष्कर्ष

भजन 66 को फिर से पढ़ें

(लोगों को कुछ चीजें साझा करने के लिए कहें, जिनके लिए वे आभारी हैं, अतीत, वर्तमान या भविष्य)

संक्षेप में बताएं कि सभी को किसके लिए आभारी होना चाहिए

प्रार्थना

जनाजे की रसम

<u>जनाजों से सबक</u>

2 कुरिन्थियों 5:8; भजन 23:4; 1 कुरिन्थियों 15:20-26

<u>मुख्य विचार:</u> विश्वासियों के लिए आराम और आश्वासन प्रदान करने के लिए और अविश्वासियों के द्वारा यीशु को स्वीकार करने के महत्व को दिखाने के लिए, कि वे मरने पर उसके साथ अनंत काल बिताएगे ।

<u>परिचय</u>

जैसा कि हम यहां इकट्ठा होते हैं, हमें याद दिलाया जाता है कि जनाजे मृतकों के लिए नहीं बल्कि जीवित लोगों के लिए होती है।

______ के कारण यहां इकट्ठा हैं, लेकिन इस बार वास्तव में हमारे के लिए

<u>I. जनाजा हमें मृत्यु के बारे सोचने पर मजबूर करता है</u>

मृत्यु निश्चित है - सभी सामाजिक वर्ग, आदि।

मतूशेलह 969 वर्ष

मौत का कभी स्वागत नहीं होता - यह अपनों को अलग करती है

मौत जरूरी है

मसीहीओं को परमेश्वर से मिलाती है

हमारे दृष्टिकोण, प्राथमिकताओं को सही स्थानतरण करती है

हमें याद दिलाती है कि जीवन वास्तव में क्या मायने रखता है

परमेश्वर के लिए नया जीवन जीने का सही मकसद

आश्वासन देती है कि जब हमारी बारी होगी तब सब ठीक होगा

मौत आहें भरती है - हमें याद दिलाती है कि जीवन छोटा है, सब मर जाते हैं

<u>संक्रमण</u>

जनाजे हमें मौत के बारे सोचने पर मजबूर कर देते हैं, लेकिन मौत अंत नहीं है

II. जनाजे हमें याद दिलाते हैं कि मृत्यु अंत नहीं है

पाप मनुष्य को परमेश्वर से अलग करता है (अदन का बगीचा)

मौत पाप से हुई

परमेश्वर उस पाप का भुगतान करने के लिए मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आया

उद्धार की आवश्यकता दिखाएं (उद्धार की योजना समझाएं)

यूहन्ना 3:16-21 पढ़ें

क्रूस पर हमारे पापों के लिए भुगतान किया गया

जी उठने से पता चलता है कि उसने मृत्यु, पाप पर विजय प्राप्त की

यीशु ने कभी जनाजा नहीं किया!

हर बार मृत्यु का सामना करना पड़ा - पुनरुत्थान

शरीर मर जाता है, आत्मा सदा जीवित रहती है

अगर यीशु के उद्धार के मुफ्त उपहार को स्वीकार करते हैं

मृत्यु पर तुरंत परमेश्वर को

मृत्यु = परिवर्तन, अंत नहीं - शरीर मरता है, वास्तविक व्यक्ति जीवित रहता है

विश्वासी के लिए मृत्यु शुरुआत है, अंत नहीं पढ़ें 2 कुरिन्थियों 5:8

मृत्यु एक अवधि नहीं है, बल्कि जीवन की कहानी में एक अल्पविराम है।

नहीं है : जीवत लोगों की धरती से मरने वालों की धरती पर जाना

लेकिन: मरने वालों की धरती से जीवितों की धरती में जा रहे हैं

पृथ्वी मरने वालों की धरती है;

स्वर्ग जीवितों की धरती है।

उदाहरण: मृत्यु के बारे में हमारा दृष्टिकोण शोक करने वाले झींगों के एक समूह की तरह है जो एक लाश की तरह कोश ले जाता है। उधर कोश के अंदर एक सुंदर तितली है जो अविश्वास में घूर रही होती है। जिसे झींगे अंत कहता है, परमेश्वर उसे तितली कहता हैं।

मौत सिर्फ एक छाया है पढ़ें भजन संहिता 23:4

उदाहरण: एक छोटी लड़की को शाम के समय एक कब्रिस्तान के अन्दर हल्के-फुल्के अंदाज में कूदते देखा गया। किसी ने पूछा, "क्या तुम्हें इस जगह डर नहीं लगता ?" "ओह, नहीं," उसने जवाब दिया, "मैं केवल घर जाने के लिए यहाँ से गुज़रती हूँ।" मसीहिओं के लिए मृत्यु, घर जाने के लिए केवल एक क्रॉसिंग/रास्ता है।

यीशु ना केवल मरने के डर को दूर करता हैं, बल्कि आपको जीने लायक कुछ देता हैं!

उदाहरण: जब लोग उड़ते हैं तो बारिश और खराब मौसम में विमान उड़ान भर सकता है, लेकिन जब यह बादलों से ऊपर हो जाता है तो सब कुछ स्पष्ट और सुंदर होता है। इसी तरह जीवन के लिए मृत्यु है।

मौत ऐसी होती है - दूसरी तरफ से कितनी अलग दिखती है!

उदाहरण: एक पास्टर को अभी-अभी खबर मिली थी कि उसे लाइलाज बीमारी है। अगले रविवार को उसने अपनी मण्डली/कलीसिया से कहा, "मैं डॉक्टर के कार्यालय से अपने घर तक 5 मील चलकर आया। मैंने उस राजशाही पहाड़ की ओर देखा जिसे मैं प्यार करता हूँ। मैंने उस नदी को देखा जिसमें मैं आनन्दित हूँ। मैंने उन आलीशान पेड़ों को देखा जो मेरी आत्मा के लिए हमेशा परमेश्वर की अपनी कविता हैं। फिर शाम को मैंने उस महान आकाश में देखा जहां परमेश्वर आपने दीपक जला रहा था और मैंने कहा, 'मैं आपको और अधिक बार नहीं देख सकता, लेकिन पहाड़, मैं जीवित रहूंगा जब आप चले गए होंगे। और नदी, मैं जीवित रहूंगा जब तुम समुद्र की ओर दौड़ना बंद करोगे। और तारे, मैं जीवित रहूंगा जब तुम गिरोगे जब परमेश्वर ब्रह्मांड को फिर से बनाएगा ।"

उन सभी के लिए, कब्र से आगे एक अद्भुत आशा है, जो अपने उद्धारकर्ता के रूप में मसीह पर भरोसा कर रहे हैं। मृत्यु अंत नहीं है। असंख्य, अवर्णनीय, शाश्वत गौरव परमेश्वर के बच्चे की प्रतीक्षा करते हैं।

<u>संक्रमण</u>

जनाजे हमें मौत के बारे में सोचने पर मजबूर कर देते हैं, लेकिन मौत अंत नहीं है

जब हम मरते हैं तो हमारे अनंत भाग्य को सील कर दिया जाता है, लेकिन जब तक हम जीवित होते हैं तब भी हमारे पास एक विकल्प होता है

जनाजे हमें याद दिलाते हैं कि हमें यह तय करना होगा कि हम कैसे रहेंगे और हम किसके लिए रहेंगे

III. जनाजे हमें यह तय करने की याद दिलाते है कि हम अपना जीवन कैसे व्यतीत करेंगे

हम सभी को एक दिन मौत का सामना करना पड़ता है - इसके लिए अभी योजना बनाएं

जब किसी यात्रा पर जाते है , उसकी योजना पहले बनाते है

_________ अपनी यात्रा पर गए थे। मैं एक दिन अपनी यात्रा पर जाऊंगा। आप अपनी पर चलें जायेंगे

अभी तैयारी करें - यीशु के उद्धार के मुफ्त उपहार को स्वीकार करें

उसके लिए अभी जियो - तुम्हारे पास जीने के लिए केवल एक ही जीवन है इसलिए अनंत काल के प्रकाश में जियो।

खुद की यात्रा के लिए तैयार रहें, जब समय आता है !

निष्कर्ष

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 15:20-26

उदाहरण: किसी ने नोट किया कि मृत्यु के बारे में हमारा दृष्टिकोण शोक करने वाले झींगों के एक समूह की तरह है जो एक लाश की तरह कोकून/कोश ले जाता है। उधर कोकून के अंदर एक सुंदर तितली है जो अविश्वास में घूर रही होती है। जिसे झींगे अंत कहते है, परमेश्वर उसे तितली कहता हैं।

शिशु या बाल मख्सूसिअत, जन्मदिन की पार्टी

बच्चे विशेष होते हैं

मत्ती 18:2-6; मरकुस 9:35-37; 10:13-16

मुख्य विचार: यह जानने के लिए कि बच्चे विशेष हैं, क्योंकि वे पूरी तरह से भरोसा करते हैं, और अपने माता-पिता को खुश करने की इच्छा रखते हैं। वयस्कों को परमेश्वर पर अपना पूरा भरोसा रखने, सेवा करने और आज्ञापालन करने द्वारा उसे खुश करने के लिए प्रेरित करता है ।

परिचय

बच्चे हमारे लिए विशेष होते हैं। वे परमेश्वर के लिए भी विशेष हैं।

वे अपरिपक्व और आत्मकेंद्रित हो सकते हैं - वे इससे परिपक्व होंगे

वे मासूम, भरोसेमंद, खुले और ईमानदार हैं - यही उन्हें परमेश्वर के लिए खास बनाता है।

परमेश्वर कभी भी बच्चों को वयस्कों की तरह काम करने के लिए नहीं कहता हैं, लेकिन वह वयस्कों को बच्चों की तरह काम करने के लिए कहता हैं!

पढ़ें और इसके बारे में बात करें: मत्ती 18:2-6; मरकुस 9:35-37; 10:13-16

I. बच्चे इस लिए खास हैं क्योंकि वे अपने माता-पिता पर पूरा भरोसा करते हैं।

उन्हें अपनी मजबूरी का एहसास है

वे जीवन में अपनी जरूरत की हर चीज के लिए अपने माता-पिता पर निर्भर रहते हैं

(उदाहरण: अपने या किसी अन्य बच्चे के बारे में एक उदाहरण दें जब आपको वास्तव में अपने माता-पिता की आवश्यकता हुई)

हमें उनके जैसा बनना है जिस तरह से हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं - पूरी तरह से, हर चीज में

हम परमेश्वर पर उतने ही निर्भर होते हैं जितना एक बच्चा अपने माता-पिता पर, इसलिए हम उसे अपना स्वर्गीय पिता कहते हैं

(कहानियों और उदाहरणों का उपयोग करते हुए इसके बारे में बात करें, हमें परमेश्वर पर कैसे भरोसा करना है)

हमें परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए, नम्बर 1 उद्धार और नम्बर 2 शिष्यत्व, हम जो कुछ भी करे उसमें उसका अनुसरण करें

संक्रमण

बच्चे खास हैं क्योंकि:

1. उन्हें अपने माता-पिता पर पूरा भरोसा है
2. वे अपने माता-पिता को खुश करना चाहते हैं।

II. बच्चे खास हैं क्योंकि वे अपने माता-पिता को खुश करना चाहते हैं

उनके पास अपने माता-पिता के लिए प्यार और प्रशंसा है, उस सब कुछ के बदले जो वे उनके लिए करते हैं

वे अपने माता-पिता को खुश करना चाहते हैं और उन्हें खुश करने के लिए कुछ करना चाहते हैं

वे कहते हैं: "मुझे देखो!" "मैं मदद करना चाहता हूँ!" "मैंने इसे आपके लिए बनाया है" (उदाहरण दें)

(उदहारण: माता-पिता को खुश करने की कोशिश कर रहे अपनी या किसी अन्य बच्चे की एक उदाहरण दें)

जीवन में हमारा मुख्य लक्ष्य, हमारी इच्छा परमेश्वर को प्रसन्न करना होनी चाहिए , ताकि वह हम पर मुस्कुराएं

ऐसा होने के लिए हमें वही करना चाहिए जो उसे अच्छा लगता है, हमें उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिए और उसकी सेवा करनी चाहिए

(कहानियों और उदाहरणों का उपयोग करते हुए इन के बारे में बात करें, कि हम परमेश्वर को खुश करें)

निष्कर्ष

(उदाहरण : एक 4 साल के बच्चे के परिवार में एक छोटी बहन का जन्म हुआ। एक दिन जब वह अपनी बहन के साथ अकेला था तो उसके माता-पिता ने उसे यह कहते सुना, "बेबी, मुझे बताओ कि परमेश्वर कैसा महसूस करता है। मैं भूल रहा हूं। ")

क्या आप परमेश्वर को भूल गए हैं? आप उसके पास वैसे ही लौट सकते हैं जैसे कोई बच्चा अपने माता-पिता के पास लौटता है: प्रेम, विश्वास और आज्ञाकारिता के साथ।

विश्वासयोग्यता

दानिय्येल : वफादारी

दानिय्येल की किताब

मुख्य विचार: दानिय्येल के जीवन से विश्वासयोग्यता के बारे में सीखें, और यह भी जीवन में अधिक विश्वासयोग्य कैसे बनें

परिचय

उदाहरण: स्पंज/फोम - दबाने से दिखाता है कि इसके भीतर क्या है! इसे दबाएं और जो अंदर है वह बाहर आ जाएगा

विश्वासियों के बारे में भी यही सच है - आप दबाव, परीक्षण, दर्द, कठिनाइयों का जवाब कैसे देते हैं?

विश्वासी की विशेषता यह है कि वह दबाव में विश्वासयोग्य निकलता है

जीवन में जब समस्याएँ और कठिनाइयाँ आती हैं, तो कोई भी अनुसरण कर सकता है

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 4:2 दबाव: भरोसा करने का अवसर, विश्वासयोग्य बने रहना का - उसके प्रति जो परमेश्वर सबसे अधिक चाहता है

संक्रमण दानिय्येल का पूरा जीवन एक महान उदाहरण !

1. दानिय्येल 14 साल की उम्र में - कैद में

पढ़ें दानिय्येल 1:1-2 = बंधुआई में ले जाया गया

पारिवारिक विश्वासियों, नाम "परमेश्वर मेरा न्यायर्कता है" = उसके प्रति जवाबदेह होना

परिवार मर जाता है - आपनी और परिवार की सुरक्षा के लिए प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं मिलता

2. 15 साल की उम्र में दानिय्येल - विश्वास के लिए सथिर रहता है

पढ़ें दानिय्येल 1:3-21= राजा का खाना ना खाता

छोटा सा समझौता, जीवन बच जाता परन्तु इससे भी बढकर परमेश्वर के लिए और अधिक अच्छा कर सकता है

परिवार को बचाने के लिए परमेश्वर ने प्रार्थना का जवाब नहीं दिया, अब वफादार क्यों रहें?

पढ़ें लूका 16:10-12 वफादारी शुरू होती है:-युवा-छोटी-छोटी बातों के साथ

पढ़ें मरकुस 8:35 जीवन में दृढ़ विश्वास - वह जो विश्वास करता था उसके प्रति वफादार रहा

3. 18 साल की उम्र में दानिय्येल - राजे की संकट

पढ़ें दानिय्येल 2:1-48 = संकट का अनुभव

राजे का सपना, कोई नहीं बता सकता सब मौत के घाट उतारे जाते है

सेवकाई के लिए अच्छा समय!- राजा की मदद करना चाहता हैं, दूसरों की मदद करना चाहता है , ना कि सिर्फ खुद की

दोस्तों के साथ प्रार्थना करता है , परमेश्वर ने उत्तर दिया!

मूर्ति, तब से लेकर जब यीशु के वापस लौटने तक, इतिहास की रूपरेखा हैं

4. 20 साल की उम्र में दानिय्येल – साहासी

पढ़ें दानिय्येल 3:1-27= नबूकदनेस्सर की उपासना करने की मूर्ति

यीशु ही एकमात्र रास्ता है! (यूहन्ना 14:7)

आग की भट्टी में दोस्त (दानिय्येल शायद राज्य के दूसरे हिस्से में काम करने गया था)

परमेश्वर ने दिया, नबूकदनेस्सर परमेश्वर को श्रेय देता है

पढ़ें प्रेरितों 21:13 यीशु के लिए मरने को भी तैयार रहो!

संक्रमण दानिय्येल पूरे लंबे जीवन तक वफादार रहता है

इस जीवन का परुस्कार (भविष्यवाणी) और भविष्य का परुस्कार (स्वर्ग)

5. 53 साल की उम्र में दानिय्येल का दर्शन # 1 और 2

दानिय्येल 7 और 8 दर्शन: बड़ी मूरत के समान, परन्तु पशुयों की सूरत में

फिर दुनिया का इतिहास दिखता है , फिर अंत

उदाहरण: मसीही जीवन एक मैराथन है, नाकि 100 गज डैश की श्रृंखला

6. नबूकदनेस्सर 76 वर्ष की आयु में विनम्र हो गया

नबूकदनेस्सर: सपना देखता है , बड़ा पेड़ काट दिया जाता है ! दानिय्येल अर्थ बताता है

नबूकदनेस्सर योग्य बेशक था ,लेकिन घमण्डी था, और आत्म-केंद्रितता में शासन करता था

नबूकदनेस्सर को विनम्र किया जाए, काट दिया जाए - परमेश्वर के प्रति समर्पण के रास्ते में घमण्ड

उसका दिमाग खो जाता है , जानवर की तरह जीवन जीता है और खाता है - 7 साल तक

आत्म में विनम्र होता है , परमेश्वर (के अनुग्रह) द्वारा बहाल कीया जाता है , उसने सभी को पढ़ने के लिए के परम्मेश्वर के बारे में लिखा है

7. 86 साल की उम्र में दीवार पर लिखावट

बेलशस्सर ने बाबुल के राजा के रूप में पिता नबूकदनेस्सर की जगह ली

अभिमानी, परमेश्वर का ठठा उडाता है - परमेश्वर की निन्दा करता है , एक तांडव में तम्बू से बर्तन

परमेश्वर ने दीवार पर लिखा - न्याय आ रहा है - केवल दानिय्येल ही इसकी व्याख्या कर सकता है! - दानिय्येल पदोन्नति, पुरसकर पाता है

दारा और मीदो-फारस ने बाबुल को विश्वय शासक के रूप में प्रतिस्थापित किया - दानिय्येल को दारा द्वारा उच्च नौकरी दी गई

8. 93 साल की उम्र में शेरों की मांद में

दारा: अभिमानी, आत्मनिर्भर, कानून पर हस्ताक्षर करने के लिए छल में घिर जाता है कि केवल उसकी ही पूजा की जाए

उद्देश्य: दानिय्येल को पकड़ना, निष्पादित करना, हटाना (पाप नहीं मिला)

दानिय्येल: परमेश्वर से प्रार्थना करने में वफादार, भले ही मर जाए

शेरों की मांद में परमेश्वर रक्षा करता है - शत्रुओं का नाश

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 2:10; प्रेरितों के काम 20:24 पौलूस अपने विश्वास के लिए मरने को तैयार है

जब विश्वासियों को विश्वास के लिए खड़ा होना पड़े तो आश्चर्यचकित ना हों

जब हम विश्वासयोग्य होंगे तब परमेश्वर आशीष देगा और प्रतिफल देगा!

इन बातों का सामना करते समय केवल यीशु पर नज़र रखें, उसे अगुवाई करने दें

डरो मत, घबराओ नहीं, आदि - उस पर और अधिक विश्वास करो

<u>9.दानिय्येल का दर्शन # 3 -95 वर्ष की आयु में</u>

दानिय्येल प्रार्थना कर रहा होता है (महान प्रार्थना जीवन)

1. राष्ट्र के पाप का अंगीकरण
2. धन्यवाद/स्तुति: परमेश्वर अपने वचन को सही रखता है, संप्रभु
3. हिमायत: यहूदियों के लिए कि वह आपने देश वापस लौट सके
4. स्वयं के लिए अनुरोध: मेरी प्रार्थना का उत्तर दें

प्रार्थना का उत्तर (यहूदियों का भविष्य?)

70 7-वर्ष की अवधि (इतिहास पर प्रभुसत्ताधारी परमेश्वर)

ओलिवेट प्रवचन, प्रकाश्त्वाक्य विवरण भरें

<u>निष्कर्ष</u>

परीक्षण और दबाव हमारी वफ़ादारी दिखाने के लिए आते हैं

-दूसरों के लिए उदाहरण, जैसे दानिय्येल से नबूकदनेस्सर, बाबुल , अन्य देश में

दानिय्येल ने अपने पूरे जीवन में विश्वास किया

पौलूस की तरह

पढ़िए 2 तीमुथियुस 4:7; 1 कुरिन्थियों 4:2

पढ़ें मत्ती 24:45-46 जीवन भर विश्वासयोग्य रहें - सेवा के लिए हमेशा तैयार रहें

शादी की सालगरह

विवाह भक्ति

इफिसियों 5:22-33; 1 पतरस 3:1-7

मुख्य विचार: विवाह करने वालों और विवाहित लोगों को यह याद दिलाने के लिए कि उनका प्यार उनके लिए यीशु के प्यार को कैसे दर्शाता है, और हमारे लिए यीशु के प्यार को दिखाने के लिए और सभी को उसका अनुसरण करने के लिए चुनौती देता है। उन्हें यह जानने में मदद करने के लिए कि पति-पत्नी का रिश्ता मसीह और मसीहिओं की परछाई है।

पढ़ें: इफिसियों 5:22-33; 1 पतरस 3:1-7

I. पत्नी के लिए पति ऐसे है जैसे हमारे लिए यीशु है

बलिदानी प्रेम

कार्यों द्वारा दिखाया गया

दूसरे को पहल देना , खुद से बेहतर प्यार करना

देने पर ध्यान दें, लेने पर नहीं

सभी के लिए प्रेरणा: उसके(पत्नी) लिए प्यार

हमारे लिए **यीशु हमारे लिए** उसी तरह से है

अति महान - वह परमेश्वर है, हमारे पापों के लिए क्रूस पर मर गया

II. पति के लिए पत्नी ऐसे है जैसे हम यीशु के लिए है

उस प्यार का जवाब अपने प्यार से दें

इसका फायदा ना उठाएं, इसका इस्तेमाल करें, इसका अनुमान लगाएं

उसका सम्मान करें और उस पर भरोसा करें

उसे अपना 100% उसे दें - वह इसका हकदार है

यीशु के लिए हम उसी समान हैं

क्या होगा अगर पत्नी मसीह के प्रति 100% वफादार नहीं है?

क्या होगा यदि हम मसीह के प्रति 100% विश्वासयोग्य नहीं हैं?

यीशु को प्यार करना एक अर्थ और उद्देश्य प्रादान करता है

दिशा और मार्गदर्शन

शांति और आनंद

III. उद्धार

उद्धार विवाह की प्रतिज्ञा के समान - एक बार वचनबद्धता

दिए गए प्यार को खुलकर स्वीकार करें

दूसरे व्यक्ति के लिए स्वयं को प्रतिबद्ध करें

IV. दैनिक जीवन

प्रतिबद्धता की प्रतिज्ञा के बाद भी एक दूसरे को पहल देना , एक दुसरे को प्यार दिखाना और प्यार प्राप्त करना चाहिए

दूसरों के लिए जीने पर क्रियाशील होना , खुद के लिए नहीं

अर्जित करने या प्राप्त करने के लिए नहीं, क्योंकि यह पहले से ही है!

V. चुनौती

यहां पर कोई जिस ने यह दो प्रतिबद्धताए नहीं बनाई या उनको पूरा नहीं किया ...

प्रार्थना

शिशु या बाल मख्सूसियत

<u>बच्चे तीर की तरह होते हैं</u>

भजन संहिता 127:4-5

<u>मुख्य विचार</u>: माता-पिता को यह दिखाने के लिए कि वे अपने बच्चे को परमेश्वर के प्रति मखसूस करते हुए परमेश्वर की सेवा करने के लिए अपने बच्चे की परवरिश करने के महत्व को देखे।

<u>परिचय</u>

मुझे हमेशा तीर पसंद हैं

भजन संहिता 127:4-5 एक योद्धा के हाथ में तीरों की तरह जवानी में पैदा हुए बेटे (और बेटियां) होते हैं। धन्य है वह मनुष्य जिसका तरकश (तीर रखने का थैला) उन से भरा है।

तीर = बच्चे

रूप देने , सीधा करने में समय लगता है

आध्यात्मिक विकास, उदाहरण, बाइबल

तरकश में नहीं रहना

धनुष = माता-पिता, परमेश्वर की मदद

जीवन से एक लक्ष्य पाने के लिए डिज़ाइन किया गया

परमेश्वर के लिए कार्य करने के लिए , उसके लिए जीने के लिए उस जगह **भेजने को**

(उदाहरण: तीमुथियुस के परिवार ने उसे परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए पाला, पौलुस के साथ मिशनरी यात्राओं पर गया)

हम क्या कर रहे हैं:

माता-पिता और बच्चों को परमेश्वर की महिमा के लिए उनका उपयोग होने के लिए <u>मखसूस करें</u>

सभी पर परमेश्वर की उपस्थिति को प्रतिबिंबित करने के लिए उसे ऊँचा उठाने में उनकी सहायता करें

जैसा कि आप जानते हैं, इसका <u>उद्धार</u> से कोई लेना-देना नहीं है

अपनी पसंद है बाद में

कुछ छोटे वर्षों के लिए बच्चों को ऋण के रूप में पाने के लिए लिए उसका <u>धन्यवाद</u> करें

उन्हें पालने में उसकी मदद मांगें

पास्टर: माता-पिता के रूप में, क्या आप अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में यीशु मसीह में अपने स्वयं के विश्वास की घोषणा करते हैं?

माता-पिता: मैं करता हूँ

पादरी: क्या आप अपना पूरा जीवन उसे के लिए मखसूस करते हैं, यह पहचानते हुए कि वह हर चीज का प्रभारी है और जानता है कि आपके लिए सबसे अच्छा क्या है?

माता-पिता: मैं करता हूँ

पास्टर: इन बच्चों को परमेश्वर का उपहार मानते हुए , क्या आप इन्हें प्रभु के प्रति मखसूस करते हैं?

माता-पिता: मैं करता हूँ

पादरी: क्या आप वायदा करते हैं आप उनकी परवरिश बाइबल की शिक्षाओं के अनुसार करेंगे और आप जो कुछ भी कहते और करते हैं उसमें उनके लिए एक अच्छा मसीही उदाहरण स्थापित करते हैं?

माता-पिता: मैं करता हूँ

पादरी: क्या आप उन्हें उद्धार की योजना में नसीहत करने और उनके लिए और उनके साथ प्रार्थना करने का वायदा करते हैं?

माता-पिता: मैं करता हूँ

इन प्रतिज्ञाओं और वायदों को सुनने के बाद, हम इन बच्चों को उनके जीवन के सभी वर्षों के लिए, हमारे स्वर्गीय पिता, परमेश्वर की ईलाही देखभाल और सुरक्षा के लिए बड़ी गंभीरता से और खुशी से सिफारश करतें हैं। प्रभु का अनुग्रह आपके बच्चों और आप पर बनी रहे।

सुसमाचार उपदेश

(यह उपदेश देने के लिए तैयार नहीं है, लेकिन सुसमाचार प्रचार पर एक उपदेश में क्या शामिल किया जाना चाहिए उसकी की मूल बातें। आप जो भी भाग चाहते हैं उसका उपयोग कर सकते हैं और इसे किसी भी क्रम में रख कर सकते हैं।)

संदेश क्या है, इस पर ध्यान केन्द्रित करे

चर्च की सदस्यता पर नहीं

जीवन बदलने पर नहीं

लेकिन उद्धार के मुफ्त उपहार के स्वीकरण पर

'सुसमाचार' = 'अच्छी खबर ' - उनके पाप पर ध्यान केंद्रित नहीं करना है, बल्कि यीशु की क्षमा पर ध्यान केंद्रित करना है

उनकी बैसाखी को लात मारकर नहीं, बल्कि उन्हें कुछ ऐसा देना कि उन्हें बैसाखी की जरूरत ना पड़े

उद्धार की आवश्यकता

पढ़िए रोमियों 3:23; 6:23

पाप: हम जो कुछ भी करते हैं, सोचते हैं, नहीं करते, गलत कारण से करते हैं

कुछ भी जो परमेश्वर/यीशु के चरित्र में नहीं है

उद्धार का प्रावधान

पढ़िए इफिसियों 2:8-9 हमारे कामों से नहीं, उसके अनुग्रह से

यूहन्ना 19:30 पढ़ें; इब्रानियों 1:3 यीशु ने उद्धार के कार्य को पूरी तरह से सम्पन कर दिया, हम इसमें कुछ भी नहीं जोड़ सकते हैं

पढ़ें रोमियों 3:28; यूहन्ना 3:16 हम केवल यीशु में विश्वास करने के द्वारा उद्धार प्राप्त करते हैं

उदाहरण: एक दरवाजे के बारे में सोचें जो अंदर से बंद है। द्वार मानव हृदय का प्रतिनिधित्व करता है। यीशु बाहर खड़ा है और दस्तक देता है। लेकिन जब तक हम दरवाजा नहीं खोलेंगे वह अंदर नहीं आएगा।

पढ़िए 1 थिस्सलुनीकियों 5:9; 2 तीमुथियुस 2:10; 3:15 उद्धार यीशु में विश्वास के द्वारा आता है

पढ़ें यूहन्ना 19:30 "पूरा हुआ"

उदाहरण: क्रूस पर यीशु का अंतिम शब्द ग्रीक शब्द टेटेलेस्टाई था, जिसका अर्थ है "पूरा हुआ" है। पुरातत्वविदों ने बार-बार पाया है कि यह उन दिनों में इस्तेमाल की जाने वाली कर रसीदों पर लिखा हुआ था, यह दर्शाता है कि इसका अर्थ "पूर्ण भुगतान" भी है।

पढ़ें यूहन्ना 3:36 यदि उद्धार को अस्वीकार कर दिया जाता है तो हम परमेश्वर के क्रोध के अधीन हैं।

<u>बच्चों को सुसमाचार की व्याख्या करना</u>

पीला: परमेश्वर का प्यार, प्रकाश,

काला = अंधेरा

काला: पाप

लाल: यीशु का लहू - काले पाप को दूर करके हमें सफेद बनाता है

सफेद: उद्धार, यीशु के लहू द्वारा पाप से शुद्ध किया गया

हरा: चीजें जो बढ़ती हैं - आध्यात्मिक विकास

रोमी सड़क

पढ़ें रोमियों 3:10 कोई भी इतना अच्छा नहीं है कि वह परमेश्वर की उपस्थिति में हो

उदाहरण: अस्पताल के ऑपरेशन कक्ष में कोई कीटाणु नहीं, शुद्ध होना चाहिए

पढ़ें रोमियों 3:23 हर कोई परमेश्वर की दृष्टि में पापी है

उदाहरण: समुद्र को तैर कर पार करना , कुछ हद तक तो तैर सकता है लेकिन कोई पार नहीं कर पाता

पढ़ें रोमियों 5:12 पाप मृत्यु और दोष लाता है

उदाहरण: आध्यात्मिक एचआईवी जो सभी को जन्म के समय मिलता/होता है

पढ़ें रोमियों 5:8 यीशु हमारे लिए मरा

उदाहरण: न्यायाधीश जो स्वयं किसी व्यक्ति के लिए जुर्माना अदा करने को चल कर आने के लिए अपना रुतबा छोड़ देता है,

पढ़ें रोमियों 6:23 पाप मृत्यु लाता है लेकिन यीशु अनन्त जीवन लाता है

उदाहरण: वेतन: कमाएँ (भुगतान का चेक), योग्य; मुफ्त उपहार – अर्जित करने के लिए कुछ भी नहीं करना

पढ़ें रोमियों 10:9-13 बस यीशु के उद्धार का मुफ्त उपहार स्वीकार करें

उदाहरण: किसी को मुफ्त उपहार देना, उनहे अवश्य ही प्राप्त करना चाहिए

<u>एक से दूसरे को गवाही देने के अच्छे तरीक़े</u>

1. ये दो प्रशन पूछें

अगर आप आज रात मर जाते, तो क्या आप स्वर्ग जाएगें ?

परमेश्वर आपको अपने स्वर्ग में क्यों जाने देगा?

2. अपनी खुद की गवाही साझा करें

एक गवाह जो कुछ भी जानता है उसे साझा करता है। हमें वकील नहीं बनना है जो लोगों के साथ बहस करता हैं बल्कि गवाह बनना हैं जो बताता हैं कि यीशु ने हमारे लिए क्या किया है।

SP
15.10.2021